

226.2
मिश्र।शि।दू

‘शिव’ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क-१०१

दुर्गातन्त्रम्

‘शिवदत्ती’हिन्दीटीकासहितम्

लेखक तथा सम्पादक

आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

2262
शिवदत्त

प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर

चौक, बाराणसी-१

फोन : ६६६८३

दु र्गा त न्त्र म्

‘शिवदत्ती’हिन्दीटीकासहितम्

(दुर्गा तथा अन्यान्य देवी-देवताओं की उपासना सम्बन्धी
एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ)

✽

लेखक तथा सम्पादक

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

(शताधिक ग्रन्थों के लेखक-सम्पादक एवं अनुवादक)

✽

प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर

चौक, वाराणसी-१

प्रकाशक :

ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर

चीक, वाराणसी-१

फोन दुकान : ६६६८३

फोन निवास : ५३३४६

226-2
मिथु/शि/दु

लेखक तथा सम्पादक

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : १९८८

मूल्य : तीस रुपये

मुद्रक :

मुकुन्द लाल अग्रवाल

बाम्बे मुद्रण प्रेस

नूटो इमली, वाराणसी

प्राक्कथन

इस परिवर्तनशील जगत् में अखिल ब्रह्माण्डनायिका पराश्वरा जगदम्बा द्वारा ही समस्त ब्रह्माण्ड का नियन्त्रण, उत्पत्ति, पालन एवं अन्त में संहार की सुनिश्चित है। ये ही उत्पत्ति काल में सृष्टिरूपा, पालन काल में स्थितिस्वरूपा तथा कल्पान्त में संहारकारिणी हैं। कहा भी है—

‘त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।

त्वयैतत्पाल्यते देवि ! त्वमतस्यन्ते च सर्वदा।

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥

तथा संहतिरूपान्ते जगतोऽस्य [जगन्मये]’

—ब्रह्माण्ड पुराण।

‘जिस तरह मृत्तिका (मिट्टी) के अभाव में घट निर्माण करने में कुम्भकार असमर्थ है और सुवर्ण के बिना स्वर्णकार आभूषण का निर्माण नहीं कर सकता, उसी तरह शक्ति के बिना सृष्टि करना भी मेरे लिए असम्भव है’ ऐसा पराशक्ति के सम्बन्ध में ब्रह्मा ने कहा है। यथा—

‘मृदा विना कुलालश्च घटं कर्तुं तथाऽक्षमः।

स्वर्णं विना स्वर्णकारः कुण्डलं कर्तुमक्षमः।

शक्त्या विना तथाऽहं च स्वसृष्टिं कर्तुमक्षमः ॥’

‘जैसे, प्रशस्त बुद्धिवाले व्यक्ति भी शक्ति के बिना विश्व की रक्षा नहीं कर सकते अर्थात् शक्तिशाली व्यक्ति ही संसार की रक्षा करने में समर्थ हो सकते हैं, वैसे ही मैं भी शक्ति-सम्पन्न होकर ही इस विश्व की रक्षा करने में समर्थ हो सकता हूँ’ ऐसा भगवान् विष्णु का कथन है।

जैसे—

‘शक्ति विना बुद्धिमन्तो न जगद्रक्षितुं क्षमाः ।

क्षमाः शक्त्याल्यस्तद्वदह शक्तियुतः क्षमः ॥’

भगवान् शङ्कर कहते हैं—हे महेशानि ! शक्ति के बिना मैं शिव के समान हूँ, परन्तु शक्तियुक्त हो जाने पर मैं सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला तथा सब कुछ करने में पूर्ण समर्थ हो जाता हूँ । कहा भी है—

‘शक्ति विना महेशानि सदाऽहं स्यां शवोऽथवा ।

शक्तियुक्तो यदा देवि ! शिवोऽहं सर्वकामदः ॥’

शक्ति और शक्तिमान् में भेद नहीं है किन्तु वे दोनों एक ही हैं । शक्ति सहित पुरुष शक्तिमान् कहलाता है । जैसे—‘शिव’ में इकार शक्ति स्वरूप है, उस इकार को निधाल दें तो ‘शिव’ शब्द ‘शव’ बन जाता है । प्रलय काल के समय भगवान् समस्त संसार को समेटकर उदरस्थ कर लेते हैं । कालान्तर में सृजन काल के समय संकल्प-शक्ति द्वारा भगवान् या भगवती एक ही बहुवचनकर सृष्टि वा पुनः सृजन करते हैं—‘एकोऽहं बहु स्याम्’ ।

यह वही शक्ति पराम्बा जगदम्बा दुर्गा हैं, जो ‘दुर्गा दुर्गातिनाशिनी’—दुर्गति का नाश करनेवाली पराम्बा दुर्गा ब्रह्मा, विष्णु एवं भगवान् शङ्कर की महाशक्ति हैं । उन्हीं का सर्वमङ्गल-माङ्गल्य रूप भगवती दुर्गा का स्वरूप है । जिसका ध्यान, स्तोत्र-पाठ, जप और मनन-चिन्तन करते हुए साधक अपनी सभी कामनाओं को सद्यः पूर्ण करता है ।

‘कलौ चण्डी-विनायकौ’ के अनुसार कालयुग में भगवती चण्डिका-दुर्गा की उपासना-आराधना सद्यः सिद्धिकरी बतायी गयी है । दुर्गा की उपासना के लिए प्रस्तुत पुस्तक ‘दुर्गातन्त्रम्’ बहुत ही उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है ।

इसमें—दुर्गा-ध्यान, यन्त्रोद्धार, मन्त्रोद्धार एवं अष्टाक्षरी दुर्गा मन्त्र के साथ दुर्गा-पूजाविधि, दुर्गा-मानस-पूजा आदि विविध देवी-देवताओं के साधन मन्त्र पर्यन्त अनेक विषय हिन्दी टीका के सहित दिये गये हैं ।

इसमें दकाशदि दुर्गा-सहस्रनाम स्तोत्र के साथ दुर्गा-उद्घाटनमावली तथा दुर्गापूजाश्री स्थित तैत्तिरीय अथर्ववेद के बीज मन्त्र—जैसे विषय, जो अब तक सर्वथा अनुपलब्ध एवं महत्त्वपूर्ण रहे हैं । उनका समावेश कर देने से यह ग्रन्थ साधकों एवं उपासकों के लिए बहुत उपयोगी हो गया है । इनके सविधि अनुष्ठान द्वारा साधकों की सभी कामनाओं की सिद्धि अवश्यम्भावो है । यह प्रस्तुत पुस्तक की प्रधान विशेषता है ।

दुर्गा-उपासना के अतिरिक्त अन्यान्य देवी-देवताओं के मन्त्र तथा उपासना की विधि भी इसमें दिये गये हैं, जो सर्व-साधारण उपासकों के लिए भी विशेष उपयोगी सिद्ध होंगे । परन्तु इनकी उपासना किसी सद्गुरु के परामर्श से ही करनी चाहिए । ऐसा मेरा विचार है । क्योंकि शक्ति की उपासना में दोषा एक महत्त्वपूर्ण अंग है ।

इसमें शुभाशीर्वाद एवं सम्मति प्रदान करने वाले सन्त-महात्माओं एवं विद्वानों का भी मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अपने अत्यधिक व्यस्त कार्य-क्रम में भी मेरे ऊपर असीम अनुकम्पाकर पुस्तक की उपयोगिता व्यक्त की है ।

‘ठाकुर प्रसाद बुक्सेनर, चौक-वाराणसी’ के संचालक गण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने विशुद्ध संशोधन-सम्पादन एवं आकर्षक मुद्रण के साथ प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित कर अनेक दुर्गा-उपासना प्रेमी पाठकों का महान् उपकार किया है ।

गुरुपूणिमा

२९ जुलाई १९८८ ई०

—शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सी० के० ५।२६ ए०

भिक्षासी दास लेन, वाराणसी-१

श्रीशै वन्दे

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्च्

ग्रन्थकार और ग्रन्थ का संस्तव

आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्री-द्वारा सम्पादित 'दुर्गातन्त्रम्' नामक मधीन ग्रन्थ का सम्यक् अवलोकन किया। श्री शिवदत्तमिश्र शास्त्री—उपासना, अनुष्ठान, अर्चन, समष्ट्या एवं पारायण-सम्बन्धी संस्कृत के वाङ्मय-रत्नों का उद्धार करने में चालीसों वर्षों से लगे हैं।

'दुर्गा-सप्तशती' के अनेक मूल और अर्थसहित संस्करणों का इन्होंने सम्पादन किया है। बड़े वक्षरों वाली, साँची आकार की दुर्गा सप्तशती, किताबी, पाठो-पयोगी मूल-गुटका (छोटी) और गुटका (जेब साइज) आदि के सम्पादन द्वारा सप्तशती-पारायण प्रेमियों का बड़ा कल्याण किया है। दुर्गा-वच को भी हिन्दी टीका सहित पाठोपयोगी संस्करण बड़े सुन्दर रूप से सम्पादित किया है। इस क्रम में दुर्गा-पूजा और समष्टु पाठ-विधियों शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदि के अनुष्ठानादि का भी यथास्थान विशद विवरण देते हुए तत्त्व पद्धतियों का निर्देश किया है। इनमें दुर्गाचर्न-पद्धति विशेष महत्त्व की कृति है। उसमें पञ्चाङ्गपूजन सहित जैसे-गौरी-गणेश पूजन, वल्लभ-वर्णनाद्यावाहित देवपूजन, पुण्याहवाचन आदि तथा दुर्गासप्तशती के साथ शतचण्डी विधान-अनुष्ठान और हवन की विधियाँ ऐसा वर्णन किया है जिससे सामान्य संस्कृतविज्ञ और वेदपाठार्थविज्ञ भी बड़ी आसानी से अनुष्ठान कर-करा सकते हैं। इस क्रम में मन्त्र-प्रतिलोम-दुर्गासप्तशती-जोस भवतः विशिष्ट तान्त्रिक दुर्गा सप्तशती के अनुष्ठान का ग्रन्थ है—उत्तका भी पाण्डित्यपूर्ण संस्करण निकाला है।

इसी क्रम में इस स्व-सङ्कलित-हिन्दी टीका सहित 'दुर्गातन्त्रम्' नामक अपूर्व कृति की रचना और सम्पादन शास्त्रीय आधार पर श्री मिश्र जी ने किया है।

इस कृति के बारे में दो पंक्ति लिखने के पूर्व मैं श्री मिश्र जी की कुछ प्रमुख कृतियों का नामोल्लेख करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। इन्होंने अन्यान्य देवी-देवताओं से सम्बन्धित ग्रन्थों का भी सम्पादन किया है, उनमें कुछ महत्त्वपूर्ण हैं—१. बगला-मुखी-रहस्य, २. काली-रहस्य, ३. गायत्री-रहस्य, ४. शिव-रहस्य, ५. हनुमद्-रहस्य, ६. राम-रहस्य, ७. वाङ्मयकल्पलता, ८. अध्यात्म-रामायण, ९. पाराशर स्मृति, १०. कनकधारा-स्तोत्र, ११. ग्रह-शान्ति-पद्धति आदि।

श्री शिवदत्त मिश्र जी ने अनेक रहस्यान्त ग्रन्थों के निर्माण द्वारा सम्बद्ध देव के पूजन और अनुष्ठान एवं स्तोत्र समृद्ध वाङ्मय को सनातनधर्मी उपासनाप्रिय जनता के सम्मुख उद्घाटित कर दिया है।

पण्डित जी ने कर्मकाण्ड सम्बन्धी पद्धतियाँ भी अनेक सम्पादित की हैं। इनमें प्रमुख हैं—१. वाशिष्ठी-हवन-पद्धति, २. विवाह-पद्धति, ३. उपनयन-पद्धति, ४. पञ्चांगपूजा-पद्धति, सत्यनारायण-व्रतकथा, सङ्कष्ट-गणेश चतुर्थी-व्रत-कथा आदि का भी इन्होंने सम्पादन किया है। लघुसिद्धान्त कीमुदी, लघुकीमुदी-रहस्य का भी आपने छात्रोपयोगी एवं संस्कृत सौख्य के जिज्ञासुओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण संस्करण निकाला है। इस प्रकार पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री ने सनातन धर्म-प्रेमियों, धर्मानुष्ठानकारियों के लिए सैकड़ों से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकों का लेखन-सम्पादन सङ्कलन और हिन्दी टीका कर के संस्कृत के एक क्षेत्र को समृद्ध बनाकर सनातनी हिन्दुओं के लिए सुलभ कर दिया है।

बृहत्स्तोत्र-रत्नाकर इनका एक सराहनीय संस्कृत-स्तोत्र का सङ्कलन है। इन्होंने रुद्राध्याध्यायी के भी तीन-चार प्रकार के संस्करणों का सम्पादन किया है। वेदमन्त्रों के स्वरचिह्नाङ्कयुक्त प्रत्येक पद को अलग-अलग सम्पादन कर मूल तथा हिन्दी अनुवाद-सहित रुद्राध्याध्यायी का सम्पादन अत्यन्त स्वागतार्ह और रुद्राध्याध्यायी-पाठकर्त्ताओं के लिए बड़े काम का ग्रन्थ है। आपका पुरुषोत्तम-माहात्म्य का हिन्दी-अनुवाद-सहित सम्पादन भी धर्मप्राण हिन्दु-जनता के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ है, अध्यात्मरामायण को भी हिन्दी-

अनुवाद तथा श्लोकानुक्रमणिका के साथ इन्होंने सम्पादित किया है। इतना ही नहीं, वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड का मूल गुटका रूप में विशुद्ध संशोधन-सम्पादन के साथ पाठोपयोगी संस्करण इनका अत्यन्त श्लाघनीय कार्य है। शताधिक विविध विधावाली धार्मिक-सांस्कृतिक कृतियों के सम्पादक एवं अनुवादक आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र के पूरे कृतित्वका, जो शताधिक हैं—मैं उनका यहाँ वर्णन नहीं करूँगा। यहाँ न स्थान है, न प्रसंग।

दुर्गा-तन्त्रम्—प्रस्तुत 'दुर्गातन्त्रम्' के विषय में सिंहावलोकन रूप से मैं दो शब्द पाठकों की सेवा में निवेदित कर रहा हूँ। धर्मप्राण जनता अवश्य इस ग्रन्थ को पढ़े। इसमें जगज्जननी पराम्बा त्रिगुणात्मिका, आद्याशक्ति, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती-स्वरूपा, जगदम्बा जगदात्मिका श्री माँ दुर्गा के पूजन-स्तवन-पाठ, मन्त्रपूजन, मन्त्रोद्धार तथा दुर्गापूजाविधि, विविध देवी-दुर्गा स्तुतियाँ हैं।

प्रस्तुत दुर्गातन्त्र में एक सन्दर्भ अपूर्व है। मैंने वह नहीं देखा था वह है—'दकारादि-दुर्गासहस्रनाम-स्तोत्रम्'। इन दकारादि-सहस्रनामों को अकार पूर्वक चतुर्थ्यैकवचन विभक्ति विपरिणमित 'नमः'कारान्त रूप में करके आचार्य शिवदत्त मिश्र जी ने 'दकारादिदुर्गासहस्रनामावली' को भी इस ग्रन्थ में तद्विधसहस्रनाम पाठकर्त्ताओं की सुविधा के लिए प्रस्तुत कर दिया है। सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के क्रमानुसार बीज मन्त्रों का संकलन भी इस ग्रन्थ की विशिष्टता है।

एक साधुने मुझे बताया है कि 'दुर्गासहस्रनामावली' एक प्रमुख तान्त्रिक नामावली है। अड़हल (लाल देशीपुष्प) को साकल्य में मिला कर घृताहुति और उक्त साकल्याहुति का नव दिनों तक हवन करने से सर्वाभीष्ट-सिद्धि होती है। सर्वरोग निवृत्ति होती है और शत्रु एवं विरोधियों का नाश हो जाता है। धर्मार्थ-काम-मोक्षरूप पदार्थ चतुष्टय सिद्ध होते हैं। आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से अनेकबार पुरस्कार भी मिले हैं।

श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री को हादिक बधाई देता हूँ इस महत्त्वपूर्ण कृति-संकलन के लिए। मैं विश्वास करता हूँ कि मिश्र जी का यह 'दुर्गातन्त्र' भी अन्य उनके सम्पादन-सङ्कलन की भाँति हिन्दू-धर्मप्राण-सनातनी जनता के और विशेषरूप से दुर्गा के पूजकों-उपासकों के हृदय का द्वार होगा। यह भी शुभाशंसा है कि श्री मिश्र जी अबाधगति से अपने स्तुत्य कार्य की दिशा में अग्रसर होते रहें।

(चैत्रशुक्ल १ नवरात्रारम्भ, सोम, संवत् २०४५ वि०) शुभाशंसी—

कलशपतिचर

व्याकरणाचार्य, साहित्यशास्त्री
कुलपतिचर, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी एवं
अध्यक्ष-उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ,

शुभ कामना

भारत वर्ष में भगवती पराम्बा पराशक्ति की आराधना आदि काल से होती आ रही है। वास्तव में समस्त विश्वप्रपञ्च भगवती का ही विलास है। 'चितिः स्वतन्त्रा विश्वसिद्धिहेतु' अर्थात् चितिशक्ति विश्वोत्पत्ति, पालन एवं संहरण कृत्य में परम स्वतन्त्र है। अतएव सप्तशती में कहा है—

‘यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो

ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।’

प्राचीन भारत का उत्तुङ्ग शिखरारूढ गौरव, दिव्य लोक स्पृहणीय अध्यात्मविज्ञान भगवती पराम्बा की आराधना का ही फल था। वर्तमान भारत की सङ्कटापन्न-अवस्था में भी भगवती की आराधना ही परम श्रेयस्करी है। परन्तु यह कैसे हो? यह एक जाज्वल्यमान समस्या है। इसी समस्या के समाधानार्थ तन्त्र-आगमादि विविध ग्रन्थों के मर्मज्ञ विख्यात विद्वान् आचार्य पण्डित श्री शिवदत्त मिश्र जी चिरकाल से अथक परिश्रम एवं बलवन्त उत्साह से सतत प्रयत्नशील हैं। आपने शताधिक धार्मिक ग्रन्थों का लेखन-सम्पादन एवं टाका आदि करके आस्तिक जगत् का महान् उपकार किया है— उसी में वर्तमान ‘दुर्गातन्त्र’ नामक ग्रन्थ भी है। इसमें भगवती दुर्गा के आराधन के सम्बन्ध में विविध प्रकारों का वर्णन है। सबसे महत्त्वपूर्ण दकारादि दुर्गा सहस्र नाम है। विविध कामनाओं की प्राप्ति के लिए अन्ध देवताओं के भी मन्त्रों का उल्लेख है। हम समस्त आस्तिक जनता से अनुरोध करते हैं कि—इस ग्रन्थ में वर्णित विविध उपासनाओं के आधार पर भगवती की आराधना के लिए इस ग्रन्थ का उपादान कर श्रेयःप्राप्ति कर राष्ट्र, समाज एवं अपना गौरव उत्तरोत्तर बढ़ावें। श्री मिश्र जी के श्रम का सुफल भारत एवं विश्व को प्राप्त हो, यही पराम्बा अपूर्णा अन्नपूर्णा से हमारी शुभ कामना है।

ऊर्वास्मिनाय श्रीकाशी सुमेरु मठ
वी. १।१२८ ए. २, डुमराव कालोनी
वाराणसी-५

शङ्करानन्द सास्वती

(जगद्गुरु शङ्कराचार्य)

विषयानुक्रमणिका

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
१ दुर्गाव्यानम्	१	२४ रात्रिसूक्तम्	१३८
२ दुर्गायन्त्रोद्धारः	२	२५ देवीसूक्तम्	२४१
३ दुर्गायन्त्रम्	३	२६ शक्रादि-स्तुतिः	१४७
४ दुर्गामन्त्रोद्धारः	६	२७ सिद्ध-कुञ्जका-स्तोत्रम्	१५९
५ अष्टाक्षरो दुर्गामन्त्रः	४	२८ दुर्गोपनिषत्	१६३
६ दुर्गापूजाविधिः	४	२९ सप्तशती-बीजमन्त्राः	१६७
७ देव्यपराध-क्षमापन-दुर्गा-स्तोत्रम्	१०	परिशिष्टम्	
८ दुर्गापदुद्धारस्तवराजः	१५	विविध देवी-देवताओं के साधन मन्त्र— (दशमहाविद्याओं की उपासना)	
९ दुर्गामानसपूजा	१९	१ काली मन्त्र	१८१
१० भगवती-स्तोत्रम्	२७	२ तारा मन्त्र	”
११ चण्डी-प्रातःस्मरण-स्तोत्रम्	३०	३ षोडशी मन्त्र	”
१२ भवान्यष्टकम्	३२	४ भुवनेश्वरी मन्त्र	”
१३ सप्तश्लोकी दुर्गा	३५	५ छिन्नमस्ता मन्त्र	१८३
१४ दुर्गा-कवचम्-१	३८	६ त्रिपुरभैरवी मन्त्र	”
१५ दुर्गा-कवचम्-२	४०	७ धूमावती मन्त्र	”
१६ दुर्गाशतनामाष्टकम्	५३	८ बगलामुखी मन्त्र	”
१७ दकारादि-दुर्गासहस्र-नाम-स्तोत्रम्	५६	९ मातङ्गी मन्त्र	”
१८ दकारादि-दुर्गासहस्र-नामावली	९६	१० कमला या कमलात्मिका मन्त्र	१८३
१९ दुर्गाष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्	११७	११ दुर्गा मन्त्र	”
२० दुर्गा-द्वात्रिंशन्नाम-माला	१२१	१२ बीजोक्त श्रीसूक्त मन्त्र	”
२१ अर्गलस्तोत्रम्	१२३	१३ दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र	”
२२ कीलकस्तोत्रम्	१२९	१४ देवीसे सम्बन्धित नवार्ण मन्त्र	१८३
२३ नवार्णमन्त्र-जपविधिः	१३३	नवार्ण मन्त्र के भेद—	
		१५ नवार्ण मारण मन्त्र	१८४
		१६ नवार्ण मोहन मन्त्र	१८४
		१७ नवार्ण उच्चाटन मन्त्र	१८७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१८ नवार्ण वशोकरण मन्त्र	१८५	४६ सूर्य गायत्री मन्त्र	१८९
१९ नवार्ण स्तम्भन मन्त्र	१८५	४७ चन्द्र गायत्री मन्त्र	१९०
२० नवार्ण विद्वेषण मन्त्र	१८५	४८ भौम गायत्री मन्त्र	१९०
२१ नवार्ण महा मन्त्र	१८५	४९ बुध गायत्री मन्त्र	१९०
२२ दुर्गे स्मृता मन्त्र	१८६	५० गुरु गायत्री मन्त्र	१९०
२३ हंसगायत्री मन्त्र	१८६	५१ शुक्र गायत्री मन्त्र	१९०
२४ ब्रह्मगायत्री मन्त्र	१८६	५२ शनि गायत्री मन्त्र	१९०
२५ सरस्वती गायत्री मन्त्र	१८७	५३ राहु गायत्री मन्त्र	१९०
२६ विष्णु गायत्री मन्त्र	१८७	५४ केतु गायत्री मन्त्र	१९०
२७ त्रैलोक्य मोहन गायत्री मन्त्र	१८७	५५ पृथ्वी गायत्री मन्त्र	१९१
२८ लक्ष्मी गायत्री मन्त्र	१८७	५६ अग्नि गायत्री मन्त्र	१९०
२९ नाशायण गायत्री मन्त्र	१८७	५७ जल गायत्री मन्त्र	१९१
३० राम गायत्री मन्त्र	१८८	५८ आकाश गायत्री मन्त्र	१९१
३१ जानकी गायत्री मन्त्र	१८८	५९ वायु गायत्री मन्त्र	१९१
३२ लक्ष्मण गायत्री मन्त्र	१८८	६० इन्द्र गायत्री मन्त्र	१९१
३३ हनुमान् गायत्री मन्त्र	१८८	६१ काम गायत्री मन्त्र	१९१
३४ गरुड गायत्री मन्त्र	१८८	६२ गुरु गायत्री मन्त्र	१९१
३५ कृष्ण गायत्री मन्त्र	१८८	६३ तुलसी गायत्री मन्त्र	१९१
३६ गोपाल गायत्री मन्त्र	१८८	६४ देवी गायत्री मन्त्र	१९२
३७ राधिका गायत्री मन्त्र	१८८	६५ शक्ति गायत्री मन्त्र	१९२
३८ परशुराम गायत्री मन्त्र	१८९	६६ अन्नपूर्णा गायत्री मन्त्र	१९२
३९ नृसिंह गायत्री मन्त्र	१८९	६७ काली गायत्री मन्त्र	१९२
४० शिव गायत्री मन्त्र	१८९	६८ तारा गायत्री मन्त्र	१९२
४१ रुद्र गायत्री मन्त्र	१८९	६९ त्रिपुर सुन्दरी गायत्री मन्त्र	१९३
४२ गौरी गायत्री मन्त्र	१८९	७० भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र	१९३
४३ गणेश गायत्री मन्त्र	१८९	७१ भैरवी गायत्री मन्त्र	१९२
४४ वष्पुख गायत्री मन्त्र	१८९	७२ छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र	१९२
४५ नन्दी गायत्री मन्त्र	१८९	७३ ध्रुमावती गायत्री मन्त्र	१९३

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
७४ बगलामुखी गायत्री मन्त्र	१९३	९९ वार्ताली मन्त्र	१९८
७५ मातङ्गी गायत्री मन्त्र	१९३	१०० महिषमर्दिनी मन्त्र	१९८
७६ महिषमर्दिनी गायत्री मन्त्र	१९३	१०१ रेणुकाश्वरी मन्त्र	१९९
७७ त्वरिता गायत्री मन्त्र	१९३	१०२ अन्नपूर्णा मन्त्र	१९९
७८ भद्रवाली गायत्री मन्त्र	१९३	१०३ " "	१९९
७९ श्मशान गायत्री मन्त्री	१९३	१०४ " "	१९९
८० षोडशी मन्त्र	१९४	१०५ " "	१९९
८१ बाला त्रिपुरा मन्त्र	१९४	१०६ पृथ्वी मन्त्र	१९९
८२ भुवनेश्वरी मन्त्र (त्र्यक्षरी)	१९४	१०७ शीतला मन्त्र	१९९
८३ त्रिपुर भैरवी मन्त्र	१९४	१०८ ज्वालामुखी मन्त्र	२००
८४ छिन्नमस्ता मन्त्र	१९४	१०९ स्वप्न-सिद्धि मन्त्र	२००
८५ मातङ्गी मन्त्र	१९५	११० स्वप्नेश्वरी मन्त्र	२००
८६ सरस्वती मन्त्र	१९५	१११ स्वप्न देवी मन्त्र	२००
८७ एकाक्षरी सरस्वती मन्त्र	१९५	११२ स्वप्न चक्रेश्वरी मन्त्र	२०१
८८ नील सरस्वती मन्त्र	१९५	११३ चण्डयोगिनी मन्त्र	२०१
८९ वाग्देवी मन्त्र	१९५	११४ स्वप्न मातङ्गी मन्त्र	२०१
९० विद्या मन्त्र	१९६	११५ घण्टाकर्षि मन्त्र	२०१
९१ लक्ष्मीबीज मन्त्र	१९६	११६ कर्णपिशाचिनी मन्त्र	२०१
९२ लक्ष्मीबीज मन्त्र ४ अक्षरोंका	१९६	११७ " "	"
९३ लक्ष्मीबीज मन्त्र	१९६	११८ " "	"
(१० अक्षरों वाला)	१९७	११९ " "	"
९४ महालक्ष्मी मन्त्र	१९७	१२० " "	"
९५ महालक्ष्मी मन्त्र	१९७	१२१ " "	"
(१२ अक्षरों वाला)	१९७	१२२ " "	"
९६ सिद्धलक्ष्मी मन्त्र	१९७	१२३ " "	२०३
९७ ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र	१९७	१२४ " "	"
९८ वसुधालक्ष्मी मन्त्र	१९८	१२५ " "	"

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१२६ ॐ कर्णपिशाचिनि-पिङ्गल- लोचने स्वाहा	२०३	१४८ माहेन्द्रो यक्षिणी मन्त्र	२०७
१२७ ॐ विश्वरूपे पिशाचि वद वद ह्रीं स्वाहा	२०३	१४९ शङ्खिनी यक्षिणी मन्त्र	"
१२८ ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघ- सत्यवादिनि	२०३	१५० चन्द्रिका यक्षिणी मन्त्र	"
१२९ कर्णपिशाचिनी मन्त्र (१७ अक्षरों वाला)	२०३	१५१ श्मशानी यक्षिणी मन्त्र	"
१३० सिद्धकर्ण पिशाचिनी मन्त्र	२०४	१५२ वट यक्षिणी मन्त्र	"
१३१ मतान्तर से कर्णपिशाचिनी मन्त्र	"	१५३ मेखला यक्षिणी मन्त्र	"
१३२ चित्रेश्वरी मन्त्र	"	१५४ विकला यक्षिणी "	"
१३३ कुलजा मन्त्र	२०५	१५५ लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र	२०८
१३४ किर्तीश्वरी मन्त्र	२०५	१५६ मानिनी यक्षिणी "	"
१३५ अन्तरिक्ष सरस्वती मन्त्र	"	१५७ शतपतिका यक्षिणी मन्त्र	"
१३६ नील मन्त्र	"	१५८ सुलोचना यक्षिणी "	"
१३७ विचित्र यक्षिणी मन्त्र	"	१५९ सुशोभना यक्षिणी मन्त्र	"
१३८ घट सरस्वती मन्त्र	"	१६० कपालिनी यक्षिणी मन्त्र	"
१३९ विभ्रमा यक्षिणी मन्त्र	"	१६१ विलासिनी यक्षिणी	"
१४० हंसी यक्षिणी मन्त्र	"	१६२ नटो यक्षिणी मन्त्र	"
१४१ भिक्षिणी यक्षिणी मन्त्र	२०६	१६३ कामेश्वरी यक्षिणी मन्त्र	"
१४२ जनरञ्जिनी यक्षिणी "	"	१६४ स्वर्णरेखा यक्षिणी मन्त्र	"
१४३ विशाला यक्षिणी मन्त्र	"	१६५ सुरसुन्दरी यक्षिणी मन्त्र	२०९
१४४ मदना यक्षिणी मन्त्र	"	१६६ मनोहरा यक्षिणी मन्त्र	"
१४५ घण्टा यक्षिणी मन्त्र	"	१६७ प्रमदा यक्षिणी मन्त्र	"
१४६ कालकर्णी यक्षिणी मन्त्र	"	१६८ अनुरागिणी यक्षिणी मन्त्र	"
१४७ महामाया यक्षिणी मन्त्र	२०७	१६९ नखकेसिका यक्षिणी मन्त्र	"
		१७० नेमिनि यक्षिणी मन्त्र	"
		१७१ पद्मिनी यक्षिणी मन्त्र	"
		१७२ स्वर्णावती कनकावती यक्षिणी मन्त्र	"
		१७३ रतिप्रिया यक्षिणी मन्त्र	"
		१७४ कुबेर यक्षिणी मन्त्र	"

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१७५ बिल्व यक्षिणी मन्त्र	२०९	१९६ जलपाणि यक्षिणी मन्त्र	२२१
१७६ चन्द्रवदा वटयक्षिणी मन्त्र	२१०	१९७ मातङ्गेश्वरी यक्षिणी मन्त्र	"
१७७ धनदा पिप्पल यक्षिणी मन्त्र	"	१९८ विद्यायक्षिणी मन्त्र	"
१७८ पुत्रदा आम्नयक्षिणी मन्त्र	"	१९९ हट्टेले कुमारी यक्षिणी मन्त्र	"
१७९ अनुभक्षयकरी धात्री यक्षिणी मन्त्र	"	२०० वन्दो साधन मन्त्र	"
१८० विद्यादात्र्युदुम्बरी यक्षिणी मन्त्र	"	२०१ अष्ट अप्सरा आवाहन मन्त्र	"
१८१ विद्यादात्री निर्गुण्डो यक्षिणी मन्त्र	"	२०२ शशि अप्सरा मन्त्र	"
१८२ जयाकं यक्षिणी मन्त्र	"	२०३ तिलोत्तमा अप्सरा साधन मन्त्र	२१२
१८३ सन्तोषा श्वेतगुह्या यक्षिणी मन्त्र	"	२०४ काञ्चन माला अप्सरा मन्त्र	"
१८४ राज्यदा तुलसी यक्षिणी मन्त्र	"	२०५ कुण्डला हारिण्यप्सरा मन्त्र	"
१८५ राज्यदा कोल यक्षिणी मन्त्र	"	२०६ रत्नमाला अप्सरा मन्त्र	"
१८६ कुश यक्षिणी मन्त्र	"	२०७ रम्भा अप्सरा मन्त्र	"
१८७ अपामार्ग यक्षिणी मन्त्र	"	२०८ उर्वशी अप्सरा मन्त्र	"
१८८ क्षीराणवा यक्षिणी मन्त्र	२११	२०९ भूषणा अप्सरा मन्त्र	"
१८९ उच्छिष्ट यक्षिणी मन्त्र	"	२१० अष्ट किन्नरी मन्त्र	"
१९० चन्द्रामृत यक्षिणी मन्त्र	"	२११ मञ्जुवोषा किन्नरी मन्त्र	२१३
१९१ स्वामीश्वरी यक्षिणी मन्त्र	"	२१२ मनाहारी किन्नरी "	"
१९२ महामाया भोगयक्षिणी मन्त्र	"	२१३ सुभगा किन्नरी मन्त्र	"
१९३ त्याग साधन यक्षिणी मन्त्र	"	२१४ विशालनेत्रा किन्नरी मन्त्र	"
१९४ सर्वाङ्ग सुलोचना यक्षिणी मन्त्र	"	२१५ सुरतिप्रिया किन्नरी मन्त्र	"
१९५ भूतलोचना यक्षिणी मन्त्र	"	२१६ अश्वमुखी किन्नरी मन्त्र	"
		२१७ दिवाकीर किन्नरी मन्त्र	"
		२१८ सुभगा कात्यायनी मन्त्र	"
		२१९ कुण्डल कात्यायनी मन्त्र	"
		२२० चण्ड कात्यायनी मन्त्र	"
		२२१ रुद्र कात्यायनी मन्त्र	२१४

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
३२० पुत्रपति) वशीकरण मन्त्र	२३२	३३६ शरीररक्षा मन्त्र	२३६
३२१ शत्रुको विजय बनाने का मन्त्र	"	३३७ दन्तरोग नाशक मन्त्र	२३७
३२२ प्रेतात्मा वशीकरण मन्त्र	"	३३८ लक्ष्मी की प्रसन्नताका मन्त्र	"
३२३ राजा वशीकरण मन्त्र	२३३	३३९ लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र	"
३२४ सर्वजन सम्मोहन मन्त्र	"	३४० महालक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र	"
३२५ उन्नावृत्त मन्त्र	"	३४१ वनवा यक्षिणी मन्त्र	"
३२६ वैरी उन्नावृत्त मन्त्र	"	३४२ परीक्षा में सफलता के	
३२७ आकर्षण मन्त्र	२३४	लिपि	२३८
३२८ जल स्तम्भन मन्त्र	"	३४३ सुखीला वस्त्री-प्राप्ति के	
३२९ मेघ स्तम्भन मन्त्र	२३५	निमित्त	"
३३० निद्रा स्तम्भन मन्त्र	"	३४४ मनवाञ्छित पति-प्राप्ति	
३३१ सैन्य स्तम्भन मन्त्र	"	के निमित्त	"
३३२ शत्रु स्तम्भन मन्त्र	"	३४५ सर्वभय निवारक मन्त्र	२३९
३३३ शत्रु विद्रोहण मन्त्र	२३६	३४६ सन्निहित ज्ञान के निमित्त	"
३३४ परस्पर विद्रोहण मन्त्र	"	जगज्जानी की आरती	२४०
३३५ बालरक्षा मन्त्र	"		



* श्रीमात्रे जयन्त्ये नमः *

आचार्य-पण्डित-शिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतम्

दु र्गा त न्त्र म्

‘शिवदत्ती’हिन्दीटीकासहितम्

*

मङ्गलाचरणम्

पितरं तं महेशानं जयन्तीं पार्वतीं तथा ।

सर्वार्थसाधकौ वन्दे ग्रन्थस्याऽस्य प्रसिद्धये ॥ १ ॥

दुर्गाऽऽख्यतन्त्रे जगज्जनन्याः

पूजादि-नानाविषया निबन्धाः ।

न्यस्ता, तदीया विवृतिवितन्यते

ह्युपासकानां सुविधामपेक्ष्य ॥ २ ॥

देवरिया-मण्डलगत-‘मञ्जोली’ग्रामाऽभिजनेन ।

सन्तशरणतनुजनुषा शिवदत्ताख्येन मिश्रेण ॥ ३ ॥

दुर्गा-ध्यानम्

सिंहस्कन्ध-समारूढां नानालङ्कारभूषिताम् ।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ १ ॥

दुर्गा-ध्यान—जो सिंह के कन्धे पर बैठी हुई हैं और नाना प्रकार के अलङ्कारों से विभूषित हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं तथा जिन्होंने नागों का यज्ञोपवीत धारण किया है ॥ १ ॥

रक्तवस्त्र - परीधानां बालार्कसदृशीतनुम् ।
 नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां भवगेहिनीम् ॥ १ ॥
 त्रिवली - वलयोपेत - नाभिनाल - सुवेशिनीम् ।
 रत्नद्वीपे महाद्वीपे सिंहासन - समन्विते ॥
 प्रफुल्ल-कमलारूढा ध्यायेत्तां भवगेहिनीम् ॥ २ ॥

यन्त्रोद्धारः

दुर्गायन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व हरवल्लभे ! ।
 त्रिकोणं विन्यसेत् पूर्वं नवकोणसमन्वितम् ॥ १ ॥
 त्रैविम्बसहितं सर्वमष्टपत्रसमन्वितम् ।
 त्रिरेखासहितं वज्रं भूपुरद्वयसंयुतम् ॥ २ ॥

जो रक्त वस्त्र को धारण करने वाली हैं एवं जिनके शरीर की कान्ति प्रातःकालीन सूर्य के समान अरुण वर्ण की है, नारदादि महामुनि गण जिनकी सेवा करते हैं, जो भगवान् सदाशिव की गृहिणी हैं ॥ २ ॥

जिनका नाभि-नाल त्रिवली रूप वलय से विभूषित है, जिनका वेष अत्यन्त मनोहर है। इस प्रकार की भव (शिव) पत्नी महादेवी दुर्गा का मैं ध्यान करता हूँ। जो रत्नद्वीप नामक महाद्वीप में सिंहासन के ऊपर खिले हुए कमल पर बैठी हैं ॥ ३ ॥

यन्त्रोद्धार—श्री शिव जी पार्वती से कहते हैं कि, हे पार्वति ! अब मैं दुर्गायन्त्र को तुमसे कहता हूँ, तुम सुनो। सर्व-प्रथम नवकोण से युक्त एक त्रिकोण निर्माण करे ॥ १ ॥

पुनः उसके चारों ओर तीन वृत्त (गोलाकार) खींचे। और उस पर आठ कमलपत्र का निर्माण करे। तदनन्तर तीन रेखाएँ वज्र के आकार में खींचे। एवं प्रत्येक में दो-दो भूपुर स्थापित करे ॥ २ ॥

समीकृत्य यथोक्तेन विलिखेद् विधिनाऽमुना ।
 नानास्त्रसंयुतं लेख्यं चक्रं मन्त्रविभूषितम् ॥
 तत्र तां पूजयेद् देवीं मूलप्रकृतिरूपिणीम् ॥ ३ ॥

दुर्गायन्त्रम् ३



मन्त्रोद्धारः

अथ दुर्गामनुं वक्ष्ये दृष्टा-ऽदृष्ट-फलप्रदम् ।
 मायादिः कर्णविद्राढ्यो भूयोऽसौ सर्गवान् भवेत् ॥ १ ॥

इस प्रकारकी विधि से दुर्गायन्त्र का निर्माण करे। उसमें नाना प्रकार के अस्त्रों से युक्त श्रीचक्र का मन्त्र स्थापित करे। उस श्रीचक्र में मूलप्रकृतिस्वरूपा भगवती दुर्गा की पूजा करे ॥ ३ ॥

मन्त्रोद्धार—अब मैं सम्पूर्ण दृष्ट एवं अदृष्ट फल को प्रदान करने वाला दुर्गा-मन्त्र कहता हूँ। सर्व-प्रथम माया (ह्रीं) तदनन्तर दकार पर उकार की मात्रा एवं अनुस्वार फिर सर्गवान् (दुर्गा) इसका चतुर्थ्यन्त (ये) लिखे ॥ १ ॥

चान्तकश्च प्रतिष्ठावान् मारुतो भौतिकासनः ।
तारादि-हृदयान्तोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः ॥ २ ॥

अष्टाक्षरो दुर्गामन्त्रः

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

*

दुर्गापूजाविधिः

प्रातः कृत्यादि पीठन्यासान्तं विधाय, केसरेषु मध्ये च पीठशक्तीर्विन्यसेत् । तद्यथा—

आं प्रभायै नमः, ईं मायायै नमः, ऊं जयायै नमः ।
ऋं सूक्ष्मायै नमः, लूं विशुद्धायै नमः, ऐं नन्दिन्यै नमः, औं
सुप्रभायै नमः, अं विजयायै नमः, अः सर्वसिद्धिदायै नमः ।

तदुपरि—ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हूं फट्
नम इति पूजयेत् ।

इस मन्त्र के आदि में तारा (ॐकार) तथा अन्त में हृदयान्त (नमः) लिखे । इस प्रकार 'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' यह आठ अक्षर का दुर्गा मन्त्र सम्पन्न हुआ ॥ २ ॥

प्रातःकाल की नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर पीठन्यास आदि कर्म करने के पश्चात् यन्त्र के केसर में तथा मध्य में अक्षत द्वारा पीठ-शक्ति का न्यास करे । जो इस प्रकार है—

यन्त्र के केसर में तथा मध्य में 'आं प्रभायै नमः' से लेकर 'अः सर्वसिद्धिदायै नमः' पर्यन्त पढ़ कर नव बार अक्षत छोड़े ।

पुनः केसर के ऊपर 'ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हूं फट् नमः' इस मन्त्र को पढ़कर पूजन करे ।

ऋष्यादिन्यासः

शिरसि नारदऋषये नमः । मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः ।
हृदि दुर्गादेवतायै नमः ।

ततः कराऽङ्गन्यासौ—हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै तर्जनीभ्यां स्वाहा । हूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै मध्यमाभ्यां वषट् । हैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अनामिकाभ्यां हूम् । हौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । हः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

एवं हृदयादि । हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नमः । ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै शिरसे स्वाहा । हूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै शिखायै

ऋष्यादिन्यास—'नारदऋषये नमः' पढ़ कर शिर का, 'गायत्री-च्छन्दसे नमः' पढ़कर मुख का एवं 'दुर्गादेवतायै नमः' कहकर हृदय का स्पर्श करे ।

पुनः करन्यास एवं अङ्गन्यास करे—

'हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों अंगुठों का, 'ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः, तर्जनीभ्यां स्वाहा' पढ़कर दोनों हाथ की तर्जनी अंगुलियों का, 'हूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै मध्यमाभ्यां वषट्' इस मन्त्र से दोनों हाथ की मध्यमाका, 'हैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' अनामिकाभ्यां हूम्' कहकर अनामिका का, 'हौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्' से दोनों हाथ की कनिष्ठिका का तथा 'हः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्' इस मन्त्र से दोनों हाथ के तलवे का स्पर्श करे ।

इसी प्रकार हृदयादिन्यास भी करे—

'हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नमः' पढ़कर हृदय का, 'ह्रीं ॐ ह्रीं

वषट् । हँ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नेत्रत्रयाय वौषट् । हौं ॐ ह्रीं दुं
दुर्गायै कवचाय हूम् । हः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अस्त्राय फट् । इति
षडङ्गादिन्यासः ।

तथा च निबन्धे—

नमस्कारनियुक्तेन मूलमन्त्रेण देशिकः ।

हीमाद्यैः सह कुर्वीत षडङ्गानि यथाविधि ॥

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः

शङ्खं चक्र-धनुः-शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।

आमुक्ताङ्गद-हार-कङ्कण-रणत्काञ्ची-क्वणन्नूपुरा

दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोलसत्कुण्डला ॥

दुं दुर्गायै शिरसे स्वाहा' पढ़ कर शिर का, हँ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै
शिखायै वषट्' पढ़कर शिखा का, 'हँ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नेत्रत्रयाय
वौषट्' पढ़कर दोनों नेत्रों का, 'हौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै कवचाय हूम्'
इस मन्त्र से दोनों बाहुओं का, 'हः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अस्त्राय फट्'
पढ़कर अपने चारों ओर चुटकी बजावे । इस प्रकार षडङ्गन्यास करे ।

निबन्ध ग्रन्थ में कहा भी है—

साधक को चाहिए कि 'ह्रीं' आदि से युक्त मूल मन्त्र को 'नमः' के
साथ पढ़कर षडङ्गन्यास करे ।

ध्यान—जो देवी सिंह के ऊपर विराजमान हैं, जिनके मस्तक में
द्वितीया के चन्द्रमा का मुकुट विराजमान है, जो मरकत मणि के
समान कान्तिवाली भुजाओं में शङ्ख, चक्र, धनुष तथा बाण धारण
की हुई हैं तथा तीन नेत्रों से सुशोभित हैं । जिनके बांहों में बाजू-
बन्द, कण्ठप्रदेश में हार, कलाई में कङ्कण, कटितट में खनखनाती

एवं ध्यात्वा, मानसैः शङ्खस्थापनं कुर्यात् ।

ततः पीठपूजां कुर्यात् । केसरेषु मध्ये च, आं प्रभायै नमः,
ईं मायायै नमः, ऊं जयायै नमः, ऋं सूक्ष्मायै नमः, लूं
विशुद्धायै नमः, ॐ ऐं नन्दिन्यै नमः, औं सुप्रभायै नमः, अं
विजयायै नमः, अः सर्वसिद्धिदायै नमः ।

तदुपरि वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हूं फट् नमः ।

'दद्यादासनमेतेन मूर्तिमूलेन कल्पयेत्' ।

ततः पुनर्ध्यात्वा-ऽऽवाहनादि-पञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्यन्तं
विधायाऽऽवरणपूजामारभेत् ।

अग्नि-नैऋति-वाय्वीशानकोणमध्ये दिक्षु च ।

हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नमः । इत्यादिना पूजयेत् ।

करघनी तथा पैरों में रुनझन करने वाले नूपुर शोभा पा रहे हैं, और
कानों में रत्न के कुण्डल झिल-मिला रहे हैं ऐसी भगवती दुर्गा हमारी
दुर्गति को दूर करें ।

इस प्रकार मानस में दुर्गा भगवती का ध्यान करते हुए शङ्ख
स्थापन करे ।

तदनन्तर पीठ-पूजा करे । केसर एवं मध्य में—'आं प्रभायै नमः'
से लेकर 'अः सर्वसिद्धिदायै नमः' तक आवाहन का मन्त्र पढ़े ।

पुनः 'वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हूं फट् नमः' मन्त्र पढ़
कर आसन प्रदान करे । और मूल मन्त्र से उस आसन पर देवीको
स्थापित करे ।

फिर ध्यान कर आवाहन से पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त देवी का
पूजन कर आवरण-पूजा करे ।

अग्नि, नैऋत्य, वायव्य एवं ईशान कोण में तथा दक्षिण, पश्चिम,

ततः पत्रेषु पूर्वादि । जं जयायै नमः, विं विजयायै नमः,
किं कीर्त्यै नमः, पं प्रीत्यै नमः, पं प्रभायै नमः, शुं शुद्धायै
नमः, मं मेधायै नमः, शं श्रुत्यै नमः ।

पत्राग्रेषु—लं खड्गाय नमः, वं खेटकाय नमः, शं बाणाय
नमः, पं धनुषे नमः, सं शूलाय नमः, हं तर्जन्यै नमः ।
तद्-बहिरिन्द्रादि-वज्रादींश्च पूजयेत् ।
ततो धूपादि-विसर्जनान्तं कर्म समापयेत् ।

अस्या बलिदानमन्त्रस्तु—

‘एहि एहि पदद्वन्द्वं मदीयं च बलिं देवि लुलायक-पदद्वयं
साधय द्वितीयं ब्रूयात् खादय द्वितीयं पुनः’ ।

उत्तर एवं पूर्व दिशाओं में ‘हां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नमः’ इस
मन्त्र से पूजा करे ।

पुनः—पत्र में पूर्वादि क्रम से ‘जं जयायै नमः’ से प्रारम्भ कर
ॐ शं श्रुत्यै नमः’ तक पढ़कर आठों दिशाओं में पूर्व, आग्नेय,
दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर तथा ईशान कोण में
अक्षत से आवाहन करे ।

तदनन्तर पत्रोंके अग्रभाग में ‘लं खड्गाय नमः, वं खेटकाय नमः,
शं बाणाय नमः, पं धनुषे नमः, सं शूलाय नमः, हं तर्जन्यै नमः’ मन्त्र
पढ़ कर देवी के आयुधों की पूजा करे ।

पश्चात् पत्रके बाहर इन्द्रादि दशदिक्पालों की एवं उनके वज्रादि
शस्त्रों की धूपादि से विसर्जन पर्यन्त कर्म समाप्त करे ।

दुर्गा का बलिदान मन्त्र—‘एहि एहि’ यह दो पद तदनन्तर ‘मदीयं
च बलिं देवि’ ‘लुलायक लुलायक’ यह दो पद फिर ‘साधय-साधय’

सर्वसिद्धिपदं देवी ततः स्वाहापदं भवेत् ।

बलिदानस्य मन्त्रोऽयं मन्त्रिण्या परिकीर्तितः

अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षः । अष्टसहस्रतिलैर्होमः ।

तथा च—

‘वसुलक्षं जपेन्मन्त्रं तत्सहस्रतिलैः सह’—इत्यादि-वचनात् ।

इति दुर्गापूजाविधिः समाप्तः ।

*

इस पद को दो बार, ‘खादय-खादय’ इस पद को दो बार, ‘सर्वसिद्धि’
पुनः ‘स्वाहा-पद’ पढ़े—यही दुर्गाके बलिदान का मन्त्र है ।

संक्षेप में बलिदान का मन्त्र है—‘एहि एहि मदीयं च बलिं देवि
लुलायक लुलायक साधय साधय खादय खादय सर्वसिद्धये स्वाहा’ ।

इसका पुरश्चरण आठ लाख मन्त्र जप करने से तथा आठ हजार
तिल के हवन से पूर्ण होता है । जैसा कि कहा गया है—

आठ लाख मन्त्र का जप तथा आठ हजार तिल के होम से दुर्गा
का पुरश्चरण पूर्ण होता है ।

इस प्रकार ‘शिवदत्ती’ हिन्दीटीका सहित दुर्गातन्त्रमें दुर्गापूजा-विधि समाप्त ।

*

देव्यपराध-क्षमापन दुर्गा-स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
 न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
 न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
 परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम् ॥१॥
 विधेरज्ञानेन द्रविण - विरहेणाऽलसतया
 विधेयाशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
 तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

हे माँ, मैं न तो तुम्हारा मन्त्र जानता हूँ, न तुम्हारा यन्त्र ही जानता हूँ, अहा ! मैं आप की कोई स्तुति भी नहीं जानता । तुम्हारा आवाहन एवं ध्यान भी नहीं जानता, इतना ही नहीं, मुझे तुम्हारी स्तुति तथा कथा की भी कोई जानकारी नहीं है, मैं तुम्हारी मुद्रा नहीं जानता और न तो तुम्हारे लिए व्याकुल हो कर विलाप करना ही जानता हूँ । पर केवल एक बात जानता हूँ कि, तुम्हारा अनुसरण सभी विपत्तियों को दूर करने वाला है ॥ १ ॥

हे सबका उद्धार करने वाली ! हे कल्याणमयी माता ! पूजा की विधि न जानने से, द्रव्याभाव से, आलस्य के कारण मैं ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन नहीं कर सका, इसलिए तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि रह गयी है, उसे क्षमा करना । क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है पर कुमाता का होना सम्भव नहीं । २ ।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
 परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
 भदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥
 जगन्मातर्मातस्त्व चरणसेवा न रचिता
 न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्त्व मया ।
 तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे
 कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥
 परित्यक्त्वा देवान् विविध-विधिसेवाकुलतया
 मया पञ्चाशीतेरधिकपपनीते तु वयसि ।

हे माँ ! इस पृथ्वी पर सीधे-सादे सरल स्वभाव के तुम्हारे अनेक पुत्र हैं, किन्तु उन सबमें केवल मैं ही एक तुम्हारा अत्यन्त चपल बालक हूँ, मेरे जैसा चञ्चल बालक कोई विरला ही होगा, किन्तु हे शिवे ! तुमने इस कारण जो मेरा त्याग किया है, वह तुम्हारे लिए सर्वथा उचित नहीं है, क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना सम्भव है, किन्तु कहीं कुमाता नहीं होती ॥ ३ ॥

हे जगदम्ब ! हे मातः ! मैंने कभी तुम्हारे चरणों की सेवा नहीं की, मैंने तुम्हारे लिए अधिक धन भी समर्पित नहीं किया । किन्तु इतने पर भी तुम मुझ अधम पर अटूट प्रेम रखती हो, इसका कारण यही है कि कुपुत्र उत्पन्न हो सकता है किन्तु कहीं कुमाता नहीं होती है ॥ ४ ॥

हे गणेशजननि ! मैंने नाना प्रकार की सेवाओं में-से व्यग्र होकर अब अन्य देवताओं की सेवा छोड़ दी है, क्योंकि मेरी अवस्था पचासी वर्ष से अधिक हो चुकी है, शरीर में शक्ति नहीं रह गयी, जिससे

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता
 निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥
 श्रवाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
 निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
 तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
 जनः को जनीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
 चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
 जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
 कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
 भवानि ! त्वत्पाणि-ग्रहण-परिपाटी फलमिदम् ॥ ७ ॥

उनकी सेवा-पूजा कर सकूँ । अब उनकी पूजा से निराश होकर
 असहाय हो गया हूँ, अतः इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो
 तुम्हीं बताओ कि असहाय मैं किसकी शरणमें जाऊँ ? ॥ ५ ॥

हे मातः, हे अपर्णे ! तुम्हारे मन्त्र के एक अक्षर भी कान में पड़
 जाने से मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी बोलने
 लगता है, दीन मनुष्य करोड़ों स्वर्णमुद्राओं से मालामाल होकर
 चिरकाल पर्यन्त निर्भय होकर विहार करता है । जब तुम्हारे मन्त्र
 के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है, तो विधिपूर्वक तुम्हारे मन्त्र
 के जप करने वाले पुष्प को कितना उत्तम फल प्राप्त होगा, इसको
 कौन मनुष्य जान सकता है ॥ ६ ॥

हे भवानि ! चिता का भस्म शरीर में रमाने वाले, विषैले पदार्थों
 का भोजन करने वाले, दिगम्बर, जटाधारण करने वाले, कण्ठ में
 वासुकि नाग का हार पहनने वाले, कपाली, भूतेश भगवान् सदाशिव
 पशुपति होकर भी जो जगदीश की पदवी धारण किये हुए हैं, उसका

न मोक्षस्याऽऽकाङ्क्षा न च विभव-वाञ्छाऽपि च न मे
 न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः ।
 अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
 मृडानी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥
 नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
 किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
 श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
 धत्से कृपासुचितमम्ब ! परं तवैव ॥ ९ ॥
 आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
 नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृपार्त्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥

कारण यही है कि उन्होंने तुम्हारा पाणिग्रहण किया है, तुम्हारे साथ
 विवाह करने से ही वे विश्वनाथ हो गये ॥ ७ ॥

हे चन्द्रमुखी माँ ! मुझे मोक्ष की चाह नहीं है, ससार का वैभव भी
 नहीं चाहता, न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की अपेक्षा है, मैं तुम से
 केवल यही माँगता हूँ कि मेरा जन्म, मृडानी, रुद्राणी, शिव, भवानी
 का जप करते हुए बीते ॥ ८ ॥

हे श्यामे ! मैंने नाना प्रकार के पूजन सामग्रियों से विधिपूर्वक
 कभी तुम्हारी आराधना नहीं की, इतना ही नहीं, मैंने अपनी रुक्ष
 वाणी से कौन-कौन अपराध नहीं किये । किन्तु इतना होने पर भी
 मुझ अनाथ पर तुम प्रयत्न पूर्वक कृपा-दृष्टि रखती हो, तो यह
 उचित ही है, क्योंकि तुम माता हो । माता ही कुपुत्र को आश्रय
 दे सकती है ॥ ९ ॥

हे मातः ! दुर्गे ! कृष्णा सिन्धु सर्वेश्वरी ! मैंने कभी तो तुम्हारा
 स्मरण नहीं किया किन्तु आज विपत्ति में पँसकर तुम्हारा स्मरण

जगदम्ब ! विचित्रमंत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महदेवि ! यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

इति दुर्गातन्त्रे देव्यपराध-क्षमापन-दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ।

*

रता हूँ, तुम मेरी इस शठता पर ध्यान मत देना । क्योंकि
ख एवं प्यास से व्याकुल होने पर ही बालक माता का स्मरण
रता है ॥ १० ॥

हे जगदम्ब ! मुझ अनाथ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है
समें आश्चर्य की कौन-सी बात है ? क्योंकि माता अपराध-पर-
पराध करने वाले अपने बालक पर कृपा ही करती है, उसकी
पेक्षा नहीं करती ॥ ११ ॥

हे महादेवि ! इस जगत् में मेरे समान कोई पातकी नहीं है और
म्हारे समान कोई पापहारिणी नहीं है, ऐसा समझ कर तुम्हें जो
चित्त जान पड़े वही करो ॥ १२ ॥

इस प्रकार दुर्गातन्त्र में 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित शङ्कराचार्य
विरचित देव्यपराध-क्षमापन-दुर्गास्तोत्र समाप्त ।

*

दुर्गापदुद्धारस्तवराजः

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ १ ॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ २ ॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्तस्य भीतस्य वदस्य जन्तोः ।

हे प्राणिमात्र को शरण देनेवाली, भक्तजनों पर अनुकम्पा करने
वाली दुर्गे, तुम्हें नमस्कार है । हे जगत् में व्याप्त रहने वाली
विश्वस्वरूपे भगवति ! तुम्हें नमस्कार है । हे समस्त प्राणियों से
वन्दनीय चरणों वाली ! तुम्हें नमस्कार है । हे संसार-सागर से पार
करने वाली दुर्गे ! तुम्हें नमस्कार है । तुम मेरी रक्षा करो ॥ १ ॥

हे मातः ! सारा जगत् तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करता है, तुम्हें
नमस्कार है । हे महायोगिनि, हे ज्ञानस्वरूपे, तुम्हें नमस्कार है,
हे आनन्दस्वरूपे ! तुम्हें बारम्बार नमस्कार है, हे संसार-सागर से पार
करने वाली दुर्गे, तुम्हें नमस्कार है, तुम मेरी रक्षा करो ॥ २ ॥

हे देवि ! अनाथ, दीन, तृष्णा से पीड़ित, भयार्त, भीत एवं माया-

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ३ ॥
 अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये—
 ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
 त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ४ ॥
 अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे
 विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
 त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतु—
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ५ ॥
 नमश्चण्डिके चण्ड-दुर्दण्ड-लीला—
 समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो

पाश से जकड़े हुए जन्तुओं की तुम्हीं एक गति हो, और उनका निस्तार करने वाली हो, तुम मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥

हे देवि ! अरण्य, युद्धस्थल, आपत्तिकाळ, शत्रुओं के मध्य में, अग्नि में, समुद्र में, निर्जन स्थान में तथा राजद्वार पर रहनेवाले लोगों की तुम्हीं एक गति हो तथा उनका निस्तार करने के लिए नौका स्वरूप हो, हे जगत्तारिणि दुर्गे, तुम्हें नमस्कार है, तुम मेरी रक्षा करो ॥ ४ ॥

हे देवि ! अपार, महादुस्तर एवं अत्यन्त घोर विपत्सागरमें डूबते हुए जनों की तुम्हीं एक गति हो और उनका निस्तार करने वाली जगत्तारिणि हो, तुम्हें नमस्कार है, मेरी रक्षा करो ॥ ५ ॥

अपनी लीला मात्र से न केवल चण्ड दैत्य का अपितु समस्त

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारवीजं
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ६ ॥
 त्वमेवाद्यभावाधृतासत्यवादी—
 न जाता जितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा ।
 इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ७ ॥
 नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
 सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
 विभूतिः शची कालरात्रिः सतिस्त्वं
 नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ८ ॥
 शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
 मुनि-मनुज-पशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम् ।

समस्त दैत्यों का विनाश करने वाली देवि ! तुम्हीं एक मात्र सब की गति और निस्तार करने वाली हो, हे जगत्तारिणि दुर्गे, तुम्हें नमस्कार है, तुम मेरी रक्षा करो ॥ ६ ॥

हे देवि ! तुम्हीं सबकी आदि हो, हे मातः ! सत्यवादी लोग तुम्हारा आश्रय लेते हैं, क्रोध को जीत लेने के कारण तुम अपने पुत्रों पर कभी क्रोध नहीं करती । इडा, पिङ्गला एवं सुषुम्णा नाडी तुम्हीं हो, हे जगत्तारिणि दुर्गे, तुम्हें नमस्कार है, आप मेरी रक्षा करो ॥ ७ ॥

हे देवि ! हे दुर्गे, हे भयङ्कर शब्द करने वाली, हे सरस्वति, हे अरुन्धति, हे अमोघस्वरूपे ! तुम विभूति, शची, कालरात्रि एवं सती हो, हे जगत्तारिणि, तुम्हें नमस्कार है, मेरी रक्षा करो ॥ ८ ॥

हे भगवति ! तुम देव, सिद्ध, विद्याधर, मुनि, मनुष्य, पशु तथा

नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां

त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे ! प्रसीद ॥ ९ ॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम् ।

त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद् घोरसङ्कटात् ॥ १० ॥

मुच्यते नाऽत्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ।

सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद् भक्तिमान् सदा ॥ ११ ॥

स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ।

पठनादस्य देवेशि ! किं न सिध्यति भूतले ॥ १२ ॥

स्तवराजमिमं देवि ! संक्षेपात् कथितं मया ॥ १३ ॥

इति दुर्गातन्त्रे सिद्धेश्वरतन्त्रस्थित-उमा-महेश्वरसंवादे

दुर्गापदुद्धारस्तवराजः सम्पूर्णः ।

दस्युओं से संत्रस्त जनो को शरण देने वाली हो, इतना ही नहीं, तुम राजाओं के द्वार पर जाने वालों एवं व्याधियों से परिपीडित जनो की भी एक मात्र रक्षिका हो, हे देवि ! हे दुर्गे ! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ ॥ ९ ॥

विपत्ति से संत्राण पाने के लिए मेरे द्वारा विरचित इस आपदुद्धार का सम्पूर्ण श्लोक अथवा एक श्लोक का जो भक्त तीनों सन्ध्या अथवा एक सन्ध्या में मृत्युलोक, स्वर्गलोक एवं पाताललोक में पाठ करेंगे, वे विपत्ति से छुटकारा प्राप्त कर लेंगे और सारे पाप-तापों को नष्ट कर मुक्त हो जायेंगे । हे पार्वति, इस स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्यों की वह कौन-सी कामना है जो सिद्ध न हो । हे देवि, संक्षेप में यह स्तवराज मैंने तुम्हें बताया ॥ १०-१३ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्र में सिद्धेश्वरतन्त्र के उमा-महेश्वर-संवाद में कहा गया दुर्गापदुद्धारस्तवराज समाप्त ।

*

दुर्गा-मानस-पूजा

उद्यच्चन्दन - कुङ्कुमा-ऽरुण-पयोधाराभिराप्लावितां
नानानर्घ्य-मणि-प्रवालघटितां दत्तां गृहाणाऽम्बिके ।

आमृष्टां सुर-सुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो
मातः सुन्दरि ! भक्त-कल्प-लतिके ! श्रीपादुकामादरात् ॥ १ ॥

देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं
चञ्चत्-काञ्चन-सञ्चयाभिरर्चितं चारुप्रभा-भास्वरम् ।

एतच्चम्पक-केतकी-परिमलं तैलं महानिर्मलं
गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाऽम्बिके ॥ २ ॥

भक्तजनों के मनोरथ को पूर्ण करनेके लिए कल्पलता के समान हे त्रिपुरसुन्दरि मातः ! मैं तुम्हारे श्रीचरणों में आदर पूर्वक इस पादुका को समर्पण करता हूँ, इसे ग्रहण करो । यह उत्तम चन्दन एवं कुङ्कुम मिश्रित लाल जल की धारा से धोयी गई है, अनेक प्रकार की बहुमूल्य मणियों तथा मूँगों से इसका निर्माण हुआ है, इतना ही नहीं, सुर-सुन्दरियों के कर-कमलों द्वारा भक्तिपूर्वक भली प्रकार यह धोकर स्वच्छ भी कर दिया गया है ॥ १ ॥

हे मातः ! देवताओं के द्वारा लाये गये, इन्द्रादि देवगणों से नित्य अर्चित, देदीप्यमान, सुवर्ण-राशियों से निर्मित, अत्यन्त मनोहर प्रकाश से प्रकाशमान इस दिव्य सिंहासन पर बैठो और चम्पा, केतकी के सुगन्ध से पूर्ण अत्यन्त निर्मल तेल तथा युवतियों से आदर पूर्वक समर्पित यह सुगन्ध युक्त उबटन भी कृपा कर स्वीकार करो ॥ २ ॥

पश्चाद् देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो
 गन्ध-द्रव्य-समूह-निर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम् ।
 तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनीस्रोतसि
 स्नात्वा प्रोज्ज्वल-गन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि ! त्वन्मुदे ॥३॥
 सुराधिपति - कामिनी - करसरोज - नालीधृतां
 सचन्दन-सकुङ्कुमागुरुभरेण विभ्राजिताम् ।
 महापरिमलोज्ज्वलां सरस-शुद्ध-कस्तूरिकां
 गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीपदे ॥४॥
 गन्धर्वाऽमर-किन्नर-प्रियतमा-सन्तान-हस्ताम्बुज-
 प्रस्तारैर्ध्रियमाणमुत्तमतं काश्मीरजा-पिञ्जरम् ।

हे शम्भुगृहिणि, हे श्रीसुन्दरि ! हे देवि ! इसके अनन्तर प्रायः
 समस्त सुगन्धित द्रव्य-समूहों से सुवासित इन आँवले के फलों को
 ग्रहण करो और इन्हें अपने बालों में लगा कर केशों को शुद्ध कर कंधी
 से झाड़ लो फिर गङ्गा की पवित्र धारा में स्नान कर, सेवा में प्रस्तुत
 किये गये इस दिव्य गन्धयुक्त आनन्दकारक इत्रको स्वीकार करो ॥३॥

हे वरप्रदायिनि, हे त्रिपुरसुन्दरि ! हे महा श्री, आपकी सेवा के
 लिए स्वयं देवराज की पत्नी शची द्वारा समर्पित यह सरस कस्तूरी
 उपस्थित है । इसमें चन्दन, कुंकुम तथा अगुरु का मेल होने से इसकी
 शोभा और भी बढ़ गयी है । अधिक गन्ध निकलने से यह अत्यन्त
 मनोहर भी है, इसे ग्रहण करो ॥ ४ ॥

हे मातः ! गन्धर्व, देवता तथा किन्नरों की प्रेयसी सुन्दरियाँ
 अपने फैलाये हुए हाथों में केशर-रंजित, सूर्य-मण्डल की किरणों के

मातर्भास्वर-भानुमण्डल-लपत्कान्ति - प्रदानोज्ज्वलं
 चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि ! त्वन्मुदम् ॥५॥
 स्वर्णाकल्पित-कुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका
 मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये ।
 हारो वक्षसि कङ्कणौ वक्त्रणत्कारौ करद्वन्द्वके
 विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम् ॥६॥
 ग्रीवायां धृत-कान्ति-कान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं
 सिन्दूरं विलसललाट-फलके सौन्दर्यमुद्राधरम् ।
 राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदल-श्रीमोचने लोचने
 तद्-दिव्यौषधि-निर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे ॥७॥

समान दिव्य कान्तियुक्त परम मनोहर रेशमी वस्त्र का पीताम्बर
 लेकर आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं, इसे ग्रहण करो । यह आपकी
 प्रसन्नता को बढ़ानेवाला है ॥ ५ ॥

हे मातः ! आपके दोनों कानों में कुण्डल, हाथ की अँगुलि में
 मुद्रिका, कटि भाग के नितम्ब स्थान में सुन्दर करधनी, दोनों चरणों
 में मञ्जीर, वक्षःस्थल पर हार और दोनों हाथों में वक्त्रणित हो रहे
 मनोहर कङ्कण तथा शिरःप्रदेश में मुकुट आदि आभूषण, जिसे मैंने
 समर्पित किया है, इसे आप स्वीकार करें और यह प्रतिदिन आप के
 हर्ष का कारण बना रहे ॥ ६ ॥

हे श्रीप्रदे ! हे श्रीशाम्भवि ! कान्ति-पुञ्जों को धारण करने वाले
 इस ग्रीवाभरण (हँसुली) तुम अपने गले में धारण करो । ललाट में
 सौन्दर्य मुद्रा युक्त सिन्दूर की बिन्दी लगाओ एवं अत्यन्त मनोहर कमल
 की शोभा को तिरस्कृत करने वाले अपने इन नेत्रों में दिव्य औषधियों
 से निर्मित इस काजल को भी लगा लो ॥ ७ ॥

अमन्दतर - मन्दरोन्मथित-दुग्ध - सिन्धूद्रवं
 निशाकर - करोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे ।
 गृहाण मुखमीक्षतुं मुकुरविम्बमाविद्रुमै-
 विनिर्मित-मधच्छिदे रतिकराम्बुज-स्थायिनम् ॥८॥
 कस्तूरी - द्रव - चन्दना-ऽगुरुसुधा - धाराभिराप्लावितं
 चञ्चच्चम्पक-पाटलादिसुरभिर्द्रव्यैः सुगन्धीकृतम् ।
 देवस्त्रीगण - मस्तकस्थित - महारत्नादि - कुम्भव्रजै-
 रम्भःशाम्भवि सम्भ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाऽम्बिके ॥९॥
 कङ्कारोत्पल-नाग - केसर - सरोजाख्यावली - मालती
 मल्ली-कैरव-केतकादि-कुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः ।

हे अवनाशिनि ! हे श्रीप्रदे ! हे त्रिपुरसुन्दरि ! तुम अपने मुख की शोभा का निरीक्षण करने के लिए इस दर्पण को ग्रहण करो, जिसे साक्षात् रतिरानी अपने कर-कमलों में लेकर तुम्हारी सेवा के लिए खड़ी हैं। इस दर्पण के चारों ओर मूँगें आदि विविध रत्न जड़े हुए हैं, तथा प्रचण्ड वेग से धूमने वाले मन्दराचल की मथानी से जब समुद्र मथा जा रहा था, उसी समय यह प्रकट हुआ है, जो चन्द्रकिरणों के समान अत्यन्त उज्ज्वल है ॥ ८ ॥

हे शाम्भवि ! हे अम्बिके ! देवस्त्रियों के मस्तक पर रखे हुए रत्न-निर्मित इन कलशों के निर्मल जल को, जो बड़ी शीघ्रता पूर्वक तुम्हारे लिए लाया गया है, इसे ग्रहण करो। यह जल चम्पा, गुलाब आदि सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित तथा कस्तूरी, द्रव, चन्दन, अगुरु एवं सुधा की धारा से आप्लावित है ॥ ९ ॥

मैं कङ्कार, उत्पल, नागकेशर, कमल, मालती, मल्लिका, कुमुद,

पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारस-स्रोतसा
 ताम्राम्भोज-निवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये ॥१०॥
 मांसी-गुग्गुल - चन्दना-ऽगुरु-रजः - कर्पूर - शैलेयजै-
 र्माध्वीकैः सहकुङ्कुमैः सुरचितैः सर्पिभिरामिश्रितैः ।
 सौरभ्य-स्थिति-मन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये
 धूपोऽयं सुरकामिनी-विरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥११॥
 घृतद्रव - परिस्फुरद्रुचिर - रन्न - यष्ट्यान्वितो
 महातिमिर - नाशनः सुरानतम्बिनी-निर्मितः ।
 सुवर्णचषकस्थितः सधनसारवर्त्यान्वित-
 स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे ॥१२॥

केतकी तथा लाल कनेर आदि पुष्पों से सुवासित पुष्पमालाओं से कमल के भीतर निवास करने वाली श्री भगवती चण्डिका का पूजन करता हूँ ॥ १० ॥

हे चण्डिके ! जटामांसी, गुग्गुल, चन्दन, अगुरुचूर्ण, कपूर, शिला-जीत, मधु, कुंकुम तथा घृत आदि पदार्थों को मिलाकर देवाङ्गनाओं द्वारा निर्मित यह धूप सुवर्ण-निर्मित पात्र में रख कर जलाया गया है, इसको ग्रहण करो। यह तुम्हारी प्रसन्नता का कारण तथा तुम्हें हर्ष उत्पन्न करने वाला हो ॥ ११ ॥

हे देवि ! हे त्रिपुरसुन्दरि ! मनोहर रत्न के ढण्डे से युक्त दीप में स्थापित सुवर्ण चषक के पात्र में घी के द्रव एवं कपूर युक्त वत्ती से देवाङ्गनाओं के द्वारा जलाया गया, तिमिर-अन्धकार नाशक यह दीप तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत है, इसे ग्रहण करो ॥ १२ ॥

जाती-सौरभ-निर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं
 युक्तं हिङ्गु-मरीच-जीर-सुरभि-द्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः ।
 पक्वान्नेन स-पायसेन मधुना दध्याज्य-सम्मिश्रितं
 नैवेद्यं सुरकामिनी-विरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥१३॥
 लवङ्ग-कलिकोज्ज्वलं बहुल-नागवल्लीदलं
 सजातिफल - कोमलं सघनसार - पूगीफलम् ।
 सुधामधुरमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं
 गृहाण मुखपङ्कजे स्फुरितमम्ब ! ताम्बूलकम् ॥१४॥
 शरत्प्रभवचन्द्रमः - स्फुरित - चन्द्रिकासुन्दरं
 गलत्सुरतरङ्गिणी - ललित - मौक्तिकाडम्बरम् ।
 गृहाण नवकाञ्चन-प्रभवदण्ड-खण्डोज्ज्वलं
 महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत् ॥१५॥

हे श्रीचण्डिके देवि ! तुम्हारी प्रसन्नता के निमित्त देवबधुओं ने यह मनोहर अगहनी-चावल का भात नैवेद्य के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अत्यन्त रुचिकारक तथा चमेली के सुगन्ध से सुवासित है। इसमें हींग, मिर्च, जीरा आदि सुगन्धित द्रव्यों से छौंक-बघार कर बनाये गये नाना प्रकार के व्यञ्जनों तथा भाँति-भाँति के पक्वान्न, खीर, मधु, दही एवं घृत आदि सरस पदार्थों का भी मेल है ॥१३॥

हे माँ ! लवङ्ग की खिली से युक्त, दिव्य ताम्बूल के इस बीड़े को, जो सुवर्णमय पात्र में सजाकर रखा हुआ है, अपने मुख में धारण करो। इसे अनेक पान के पत्ते, कोमल जाबित्री, कपूर, सोपारी तथा चूने का उपयोग कर बनाया गया है ॥ १४ ॥

हे महात्रिपुरसुन्दरि माता पार्वती ! शरत्काल की चन्द्रमा के समान महा उज्ज्वल, चाँदनी के समान स्वच्छ, सुन्दर मोतियों की

मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं
 शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम् ।
 सद्योऽगस्त्य-वसिष्ठ-नारद-शुक-व्यासादि-वाल्मीकिभिः
 स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः ॥१६॥
 सर्वाङ्गणे वेणु - मृदङ्ग - शङ्ख-
 मेरी - निनादैरुपगीयमाना ।
 कोलाहलैराकलिता तवाऽस्तु
 विद्याधरी - नृत्यकलासुखाय ॥१७॥
 देवि ! भक्तिरसमावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते ।
 तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम् ॥१८॥

झालर से युक्त, ऊपर से नीचे की ओर गिरने वाली गङ्गा की धारा के समान सुवर्णमय दण्ड से युक्त यह विशाल दिव्य छत्र तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत है, इसे स्वीकार करो ॥ १५ ॥

हे माँ, चन्द्रमा एवं कुन्द के समान परमोज्ज्वल, स्वेदजनित कण्ट को दूर करने वाला, सौभाग्यवती स्त्रियों के द्वारा निरन्तर डुलाया जाने वाला यह श्वेत चँवर तथा अगस्त्य, वसिष्ठ, नारद, शुक, व्यासादि एवं वाल्मीकि, जो अपने चित्त में वेद-मन्त्रों के उच्चारण का विचार करते रहते हैं, वह मनःसंकल्पित वेद-ध्वनि भी तुम्हारे आनन्द की अभिवृद्धि करे ॥ १६ ॥

स्वर्ग के आँगन में वेणु, मृदङ्ग, शङ्ख तथा मेरी की ध्वनि के साथ गाया जाने वाला सङ्गीत तथा अनेक प्रकार के कोलाहलों से युक्त विद्याधरों का मनोहर नृत्य तुम्हारे आनन्द की अभिवृद्धि करे ॥ १७ ॥

हे देवि ! तुम्हारे भक्तिरस से परिपूर्ण मेरे इस पद्यमय स्तोत्र में

एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः ।
यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात् ॥१९॥
इति दुर्गातिन्त्रे दुर्गा-मानस-पूजा समाप्ता ।

*

यदि कहीं से मेरी भक्ति का लेश भी तुम्हें प्राप्त हो, तो तुम उसी से मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाओ, क्योंकि तुम्हारी भक्ति ही एकमात्र जीवन का फल है । जो तुम्हारी कृपा के बिना करोड़ों जन्म लेने पर भी सुलभ नहीं होती ॥ १८ ॥

त्रिपुर-सुन्दरी भगवती के मानसोपचार के लिए निर्मित इन सोलह पद्यों से जो उनका स्तवन करता है, वह समस्त राजोपचारों के समर्पण का फल प्राप्त करता है ॥ १९ ॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्रि कृत 'शिवदत्ती' हिन्दी

टीका सहित दुर्गातिन्त्र में दुर्गा-मानस-पूजा समाप्त ।

*

भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे
जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुम्भ - निशुम्भ - कपालधरे
प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ॥ १ ॥
जय चन्द्र - दिवाकर - नेत्रधरे
जय पावक - भूषित - वक्त्रधरे ।
जय भैरवदेह - निलीनपरे
जय अन्धकदैत्य - विशेषकरे ॥ २ ॥

हे वर देने वाली, हे भगवति ! हे देवि ! तुम्हारी जय हो, हे पापों को नष्ट करने वाली एवं अनन्त फल देने वाली, तुम्हारी जय हो । शुम्भ एवं निशुम्भ के मुण्डों की माला धारण करने वाली तुम्हारी जय हो, मनुष्यों की पीड़ा को दूर करने वाली हे देवि ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ, देवि ! तुम्हारी जय हो ॥ १ ॥

चन्द्र एवं सूर्य रूपी नेत्रों को धारण करने वाली, भालस्थ पावक से शोभित मुखवाली देवि ! तुम्हारी जय हो, भैरव के शरीर में अर्धाम्बिका के रूप से विलीन रहने वाली देवि ! तुम्हारी जय हो एवं अन्धक दैत्य के रक्त का शोषण करने वाली हे देवि ! तुम्हारी जय हो ॥ २ ॥

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे
 जय लोकसमस्तकपापहरे ।
 जय देवि पितामहविष्णुनुते
 जय भास्कर - शक्रशिरोऽवनते ॥ ३ ॥
 जय षण्मुख - सायुध - ईशनुते
 जय सागरगामिनि शम्भुनुते ।
 जय दुःख - दरिद्र - विनाशकरे
 जय पुत्र - कलत्र - विवृद्धिकरे ॥ ४ ॥
 जय देवि ! समस्तशरीरधरे
 जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे ।

महिषासुर का मर्दन करने वाली ! हे त्रिशूलधारिणि देवि ! तुम्हारी जय हो, लोक के समस्त पाप-तापों को नष्ट करने वाली तुम्हारी जय हो, ब्रह्मदेव एवं विष्णु से नमस्कृत देवि ! तुम्हारी जय हो । सूर्य एवं इन्द्रादि देवगणों के द्वारा शिर से प्रणत हे देवि ! तुम्हारी जय हो ॥ ३ ॥

कार्तिकेय के युद्ध में आयुध धारण करने वाले वीरों एवं सदाशिव से नमस्कृत हे देवि ! तुम्हारी जय हो । गङ्गारूपसे सागर में जाने वाली, शिव से प्रशंसित हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है । दुःख-दरिद्र्य का विनाश करने वाली देवि ! तुम्हारी जय हो, पुत्र-कलत्रादि की वृद्धि करने वाली देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ ४ ॥

समस्त प्राणियों का शरीर धारण करने वाली, स्वर्गस्थ देवगणों को दर्शन देने वाली, दुःख का नाश करने वाली हे देवि ! तुम्हारी जय

जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे
 जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिकरे ॥ ५ ॥
 एतद् व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
 गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ॥ ६ ॥
 इति दुर्गातन्त्रे महर्षि-व्यासकृतं भगवतीस्तोत्रं समाप्तम् ।

*

हो, व्याधियों का नाश करने वाली, मोक्ष प्रदान करने वाली देवि ! तुम्हारी जय हो । मनोरथ सिद्ध करने वाली तथा हाथ में समस्त सिद्धियों को धारण करने वाली हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ ५ ॥

जो लोग व्यास-कृत इस स्तोत्र को नियमतः पवित्र होकर घर में पाठ शुद्ध भाव से करते हैं, भगवती उन पर प्रसन्न रहती हैं ॥ ६ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित दुर्गातन्त्र में महर्षिव्यासकृत भगवतीस्तोत्र समाप्त ।

*

चण्डी-प्रातःस्मरण-स्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु-करोज्ज्वलाभां
 सद्रत्नवन्मकर-कुण्डलहार-भूषाम् ।
 दिव्यायुधोजित-सुनील-सहस्रहस्तां
 रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि महिषासुर-चण्ड-मुण्ड-
 शुम्भासुर - प्रमुखदैत्य - विनाशदक्षाम् ।
 ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मुनिमोहन-शीललीलां
 चण्डीं समस्त-सुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥ २ ॥

मैं प्रातःकाल में भगवती परमेश्वरी का ध्यान करता हूँ, जिनके शरीर की मनोहर कान्ति शरत्कालीन चन्द्रमा की चाँदनी के समान चारों ओर छिटक रही है। रत्नों से पिरोये गये मकर-कुण्डल तथा उत्तमोत्तम हार के अलङ्कारों से जो देदीप्यमान हैं, कमल के समान अपने सहस्रों हाथों में दिव्य आयुध धारण करने से जो अत्यन्त उदीप्त हैं एवं जिनका चरण रक्तवर्ण के कमल के समान मनोहर है ॥ १ ॥

मैं प्रातःकाल में महिषासुर, चण्ड, मुण्ड, शुम्भ आदि प्रमुख दैत्यों का विनाश करने वाली भगवती का ध्यान करता हूँ, जिनकी लीला से ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र एवं समस्त मुनिगण मोहित हो जाते हैं, जो प्रचण्ड कोप धारण करने वाली, समस्त देवमूर्तिस्वरूपा एवं अनेक रूपा हैं ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
 धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् ।
 संसारबन्धन-विमोचनहेतुभूतां
 मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णो ॥ ३ ॥
 श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ।
 सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ४ ॥
 इति दुर्गातन्त्रे चण्डी-प्रातःस्मरणस्तोत्रं समाप्तम् ।

*

मैं प्रातःकाल भजन करने वालों की मनोकामना को पूर्ण करने वाली, सारे संसार का पोषण करने वाली एवं पापों का विनाश करने वाली, परात्मा भगवान् विष्णु की परामाया का ध्यान कर उनका भजन करता हूँ, जो जीव को संसार-पाश से बाँधने में तथा उससे छुड़ाने में समर्थ है ॥ ३ ॥

जो मनुष्य भगवती चण्डिका के लिए निर्मित इन तीन श्लोकों का प्रातःकाल में पाठ करते हैं, वे अपना सारा मनोरथ प्राप्त करते हैं, तथा अन्त में विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होते हैं ॥ ४ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी व्याख्या विभूषित दुर्गातन्त्र में

चण्डी-प्रातःस्मरण स्तोत्र समाप्त ।

*

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ १ ॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाऽहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ २ ॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ३ ॥

हे भवानि, माता, पिता, भाई, दाता, पुत्र, पुत्री, भृत्य, स्वामी, स्त्री, विद्या एवं वृत्ति आदि मेरे पास कुछ भी नहीं है, हे मातः ! एक मात्र तुम्हीं मेरी गति हो ॥ १ ॥

हे भवानि ! मैं अपार संसार-सागर में गिर गया हूँ और महान् क्लेश से भयभीत हो रहा हूँ, कामी, लोभी, मतवाला तथा घृणा के योग्य हूँ और संसार के पाशों से पूर्ण रूप में जकड़ा हुआ हूँ, हे भवानि ! अब एक मात्र तुम्हीं हमारी गति हो ॥ २ ॥

हे देवि ! मैं नहीं जानता कि दान क्या है ? और न ध्यान-मार्ग का ही मुझे पता है, मैं तन्त्र, स्तोत्र, मन्त्र, पूजा तथा न्यास की विधि

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ४ ॥
कुकर्मा कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ५ ॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चाऽन्यत् सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ६ ॥

भी नहीं जानता, अब तुम्हीं एक मात्र मेरी गति हो ॥ ३ ॥

हे देवि ! मैं न पुण्य जानता हूँ, न तीर्थ ही जानता हूँ, मुझे न मुक्ति का पता है न लय का पता है, मुझे भक्ति एवं व्रत का भी ज्ञान नहीं है, अतः केवल तुम्हीं एक मात्र मेरी गति हो ॥ ४ ॥

हे मातः ! मैं नित्य बुरा कर्म करने वाला, बुरी सङ्गति में रहने वाला, दुर्बुद्धि, दुष्टता से युक्त, कुल एवं सदाचार से हीन और दुराचार परायण, सर्वत्र बुरी दृष्टि रखने वाला एवं सदा कटुभाषी हूँ, अब तुम्हीं एक मात्र मेरी गति हो ॥ ५ ॥

हे मातः ! मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा एवं किसी अन्य देवता को भी नहीं जानता । हे प्राणिमात्र को शरण देने वाली भवानि ! अब तुम्हीं एकमात्र मेरी गति हो ॥ ६ ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
 जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये ।
 अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
 गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ७ ॥
 अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
 महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
 विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
 गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ! ॥ ८ ॥
 इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

❀

हे मातः ! मात्र केवल तुम्हीं मेरी गति हो, अतः विवाद में, विषाद में, प्रमाद में, प्रवास में, जल में, अग्नि में, पर्वत में तथा शत्रुओं के मध्य मेरी सदा रक्षा करो ॥ ७ ॥

हे भवानि ! मैं सदा ही अनाथ, दरिद्र, जराजीर्ण, रोगी, अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूँगा, विपद्-ग्रस्त तथा नष्ट हूँ, अब तुम्हीं एक मात्र मेरी गति हो ॥ ८ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्र के

भवान्यष्टक स्तोत्र सम्पूर्ण ।

❀

सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच

देवि ! त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्य-विधायिनि ।
 कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

देव्युवाच

शृणु देव ! प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
 मया तवैव स्नेहेनाऽप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीदुर्गा-सप्तश्लोकीमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रोत्यर्थं सप्तश्लोकी-दुर्गापाठे विनियोगः ।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ १ ॥

शिवजी बोले-हे देवि ! तुम सम्पूर्ण मनोरथों को देने वाली तथा भक्तों के लिए सुलभ हो, अतः मुझे कलियुग में मनोरथको पूर्ण करने वाला कोई उपाय यत्न से कहो ॥ १ ॥

देवी ने कहा-हे देव ! मैं कलि में सर्वेष्ट साधन का उपाय कहती हूँ, उसे सुनो । मैं तुम्हारे स्नेह के वशीभूत हो अम्बा-स्तुति का प्रकाश करती हूँ ॥ २ ॥

विनियोग—पाठकर्त्ता सर्वप्रथम 'ॐ अस्य०' से लेकर 'पाठे विनियोगः' पर्यन्त पढ़ कर पृथ्वी पर जल गिरा दे । पुनः 'ॐ ज्ञानिना-मपि' से 'वैरिविनाशनम्' पर्यन्त सप्तश्लोकी दुर्गा-स्तोत्र का पाठ करे । भगवती महामाया देवी बड़े-बड़े ज्ञानियों के भी चित्त को खींच

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
 स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
 दारिद्र्य-दुःख-भयहारिणि का त्वदन्या
 सर्वोपकार - करणाय सदाद्र्चिता ॥ २ ॥
 सर्वमङ्गल - मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
 शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
 शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे ।
 सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥
 सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
 भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

कर बलपूर्वक मोह में डाल देती हैं ॥ १ ॥ हे माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने मात्र से ही प्राणियों के समस्त दुःखों को दूर कर देतीं, एवं स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख-दारिद्र्य एवं भय को दूर करने वाली हे देवि ! आपके सिवा और दूसरा कौन है, जिसका चित्त उपकार करने के लिए निरन्तर दयार्द्र रहता हो ॥ २ ॥

हे नारायणि ! तुम सभी मङ्गलों को भी मङ्गल प्रदान करने के कारण मङ्गलमयी हो, कल्याणदायिनी शिवा हो, सभी पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, त्रिनेत्रा एवं गौरी हो, तुम्हें हमारा नमस्कार है ॥ ३ ॥ शरणागत हुए दीनों एवं आर्तजनों की रक्षा में निरत तथा सबकी पीड़ा को दूर करने वाली नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है ॥ ४ ॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सब प्रकारकी शक्तियों से सम्पन्न, दिव्य-

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
 रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
 त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
 त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६ ॥
 सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरि ! ।
 एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरिविनाशनम् ॥ ७ ॥

इति दुर्गातन्त्रे सप्तश्लोकी-दुर्गा समाप्ता ।

स्वरूपा दुर्गे देवि ! सभी प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करो, हम तुम्हें नमस्कार करते हैं ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करती हो, एवं क्रुपित होने पर सभी मनोवाञ्छित कामनाओं का नाश भी कर देती हो। जो लोग तुम्हारा आश्रय लेते हैं, उनके पास विरति कभी नहीं आती, जो मनुष्य तुम्हारी शरण में जाते हैं, वे दूसरों को भी आश्रय देने में समर्थ हो जाते हैं ॥ ६ ॥

हे सर्वेश्वरि ! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों के समस्त बाधाओं को शान्त करो। एवं निरन्तर हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ॥ ७ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या विभूषित दुर्गातन्त्र में

सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्त ।

दुर्गा-कवचम् (१)

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
 पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत सङ्कटात् ॥ १ ॥
 अज्ञात्वा कवचं देवि ! दुर्गामन्त्रं च यो जपेत् ।
 स नाप्नोति फलं तस्य परं च नरकं व्रजेत् ॥ २ ॥
 उमादेवी शिरः पातु ललाटे शूलधारिणी ।
 चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौ चत्वरवासिनी ॥ ३ ॥
 सुगन्धा नासिके पातु वदनं सर्वधारिणी ।
 जिह्वां च चण्डिका देवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ॥ ४ ॥

श्री महादेव जी बोले— हे देवि ! अब मैं सम्पूर्ण सिद्धियों के देने वाले दुर्गा-कवच को कहता हूँ, जिसके पढ़ने एवं पाठ कराने मात्र से मनुष्य सभी सङ्कटों से छूट जाता है ॥ १ ॥

हे देवि ! इस दुर्गा-कवच को जाने बिना जो पुरुष दुर्गा-मन्त्र का जप करता है, उसे दुर्गामन्त्र के जप का कुछ भी फल नहीं होता और उसे नरक की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

उमा देवी शिर की, शूलधारिणी ललाट की, खेचरी दोनों नेत्रों की तथा चत्वरवासिनी दोनों कानों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

सुगन्धा नासिका की, सर्वधारिणी मुख की, चण्डिका जिह्वा की तथा सौभद्रिका ग्रीवा की रक्षा करें ॥ ४ ॥

अशोकवासिनी चेतो द्वौ बाहू वज्रधारिणी ।
 हृदयं ललिता देवी उदरं सिंहवाहिनी ॥ ५ ॥
 कटिं भगवती देवी द्वावूरू विन्ध्यवासिनी ।
 महाबला च जङ्घे द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥ ६ ॥
 एवं स्थिताऽसि देवि ! त्वं त्रैलोक्ये रक्षणात्मिका ।
 रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि ! नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

इति दुर्गातन्त्रे दुर्गाकवचं समाप्तम् ।

*

अशोकवासिनी चित्त की, वज्रधारिणी दोनों भुजाओं की, ललिता हृदय की तथा सिंहवाहिनी उदरप्रदेश की रक्षा करें ॥ ५ ॥

भगवती देवी कटि की, विन्ध्यवासिनी दोनों ऊरुकी, महाबला दोनों जाँघों की एवं भूतलवासिनी दोनों पैरों की रक्षा करें ॥ ६ ॥

इस प्रकार हे देवि ! तुम रक्षारूप से इस त्रिलोकी में निवास करती हो । अतः हे दुर्गे देवि ! तुम मेरे शरीरमात्र की रक्षा करो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ॥ ७ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्र में दुर्गाकवच समाप्त ।

*

दुर्गा-कवचम् (२)

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्री-जगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ! ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र ! सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ! ॥ २ ॥

पाठकर्त्ता को चाहिए कि, स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त हो, हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य०' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़ कर जल छोड़ दे । पश्चात् 'मार्कण्डेय उवाच' से लेकर 'स्तूयते सा न किं जनैः' तक दुर्गा-कवचका पाठ करे ।

मार्कण्डेय जी ने कहा—हे पितामह ! जो साधन संसार में अत्यन्त गोपनीय है, जिससे मनुष्य मात्र की रक्षा होती है तथा आपने अब तक जिसे किसी से भी प्रकट नहीं किया है, वह साधन मुझे बताइए ? ॥ १ ॥

ब्रह्माजी ने कहा—हे ब्राह्मण ! सम्पूर्ण प्राणियों का कल्याण करने वाली देवी का कवच (रक्षा के लिए पहने जाने वाले एक विशेष प्रकार के पहनावे को कवच कहते हैं । इसी तरह यह स्तोत्र भी है, इसके पाठ से साधक सर्वथा सुरक्षित रहता है ।) अत्यन्त गोपनीय है, हे महामुने ! उसे सुनिए ॥ २ ॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाऽष्टमम् ॥ ४ ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥

हे मुने ! दुर्गा की नव शक्तियाँ हैं—पहली शक्ति का नाम शैलपुत्री (हिमालय कन्या पार्वती) है, दूसरी शक्ति का नाम ब्रह्मचारिणी (परब्रह्म परमात्मा को साक्षात् कराने वाली), तीसरी शक्ति चन्द्र-घण्टा (चन्द्रमा जिसकी घण्टा में हों) है । चौथी शक्ति कूष्माण्डा (सारा संसार जिनके उदर में निवास करना हो) है ॥ ३ ॥ पाँचवीं शक्ति स्कन्दमाता (कार्तिकेय की जननी) है । छठी शक्ति कात्यायनी (महर्षि कात्यायन के अप्रतिभ तेज से उत्पन्न होने वाली) है, सातवीं शक्ति कालरात्रि (समस्त सृष्टि का संहार करने वाली) तथा आठवीं शक्ति महागौरी (शिव के महाकाली कहने पर क्रोध से जिन्होंने तपस्या कर ब्रह्मदेव से गौर वर्ण का वरदान लेनेवाली) हैं ॥ ४ ॥ नवीं शक्ति सिद्धिदात्री (समस्त जगत् को १. अणिमा, २. लघिमा, ३. प्राप्ति, ४. प्राकाम्य, ५. महिमा, ६. ईशित्व, ७. वशित्व, ८. कामावसायिता इन आठ रूपां से सिद्धि देनेवाली) हैं । ये नव दुर्गा कही गयी हैं । ये शक्तियाँ सर्वज्ञ ब्रह्मदेव-द्वारा कही गयी हैं ॥ ५ ॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, युद्ध-भूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, तथा अत्यन्त कठिन विपत्ति में फँस गया हो, वह यदि

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे ।
 नापदं तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि ॥ ७ ॥
 यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
 ये त्वां स्मरन्ति देवेशि ! रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥
 प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
 ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥
 माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
 लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥
 श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
 ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण-भूषिता ॥ ११ ॥

भगवती दुर्गा के शरण का आश्रय ले ले, तो उसका कभी युद्ध या संकट में कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, उसे कोई बिपत्ति घेर नहीं सकती और न उसे शोक, दुःख तथा भय की प्राप्ति ही हो सकती है ॥ ६-७ ॥

जो लोग भक्तिपूर्वक भगवती का स्मरण करते हैं, उनका अभ्युदय होता रहता है। हे भगवती ! जो लोग तुम्हारा स्मरण करते हैं, निश्चय ही तुम उनकी रक्षा करती हो ॥ ८ ॥ प्रथम चामुण्डा चण्ड, मुण्ड का विनाश करने वाली (देवी प्रेत के वाहन पर निवास करती हैं, वाराही महिष के आसन पर रहती हैं, ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है, वैष्णवी का वाहन गरुड़ है ॥ ९ ॥ माहेश्वरी बैरु के वाहन पर तथा कौमारी मोर के आसन पर विराजमान हैं। श्री विष्णुपत्नी भगवती लक्ष्मी के हाथों में कमल है तथा वे कमल के आसन पर निवास भी करती हैं ॥ १० ॥ श्वेतवर्ण वाली ईश्वरी वृष-बैरु पर सवार हैं, भगवती ब्रह्माणी (सरस्वती) सम्पूर्ण आभूषणों से युक्त हैं

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
 नानाभरण-शोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥
 दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
 शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३ ॥
 खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
 कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १४ ॥
 दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
 धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ १५ ॥
 नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर-पराक्रमे ।
 महाबले महोत्साहे महाभय-विनाशिनि ॥ १६ ॥
 त्राहि मां देवि ! दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
 प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ १७ ॥

तथा वे हंसासन पर विराजमान रहती हैं ॥ ११ ॥ अनेक आभूषण तथा रत्नों से देदीप्यमान उपर्युक्त सभी देवियाँ सभी योग शक्तियों से युक्त हैं ॥ १२ ॥

इनके अतिरिक्त और भी देवियाँ हैं, जो दैत्यों के विनाश के लिए तथा भक्त जनों की रक्षा के लिए क्रोधयुक्त होकर रथ में सवार रहती हैं तथा इनके हाथों में शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, मूसल, खेटक, तोमर, परशु (फरसा), पाश (बाँधने वाला विशेष प्रकार का अस्त्र), माला, त्रिशूल तथा उत्तम शार्ङ्ग धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र विराजमान हैं। जिससे देवताओं की रक्षा होती है ॥ १३-१५ ॥ महाभय का विनाश करने वाली, महान् बल, महाघोर पराक्रम तथा महान् उत्साह से सुसम्पन्न हे महारौद्रे ! (महारुद्र की शक्ति) तुम्हें नमस्कार है ॥ १६ ॥ हे शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली देवि ! तुम मेरी

दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी ।
 प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥
 उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी ।
 ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥१९॥
 एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
 जया मे चाऽग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥२०॥
 अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चाऽपराजिता ।
 शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥
 मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
 त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥२२॥

रक्षा करो। दुरधर्ष तेज के कारण मैं तुम्हारी ओर देख भी नहीं सकता। ऐन्द्री शक्ति पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करे तथा अग्नि देवता की आग्नेयीशक्ति अग्निकोण में हमारी रक्षा करे ॥ १७ ॥ वाराही शक्ति दक्षिण दिशा में, खड्गधारिणी नैऋत्य कोण में, वारुणी शक्ति पश्चिम दिशा में तथा मृग के ऊपर सवार रहने वाली शक्ति वायव्य कोण में हमारी रक्षा करे ॥ १८ ॥ भगवान् कार्तिकेय की शक्ति कौमारी उत्तर दिशा में, शूल धारण करने वाली ईश्वरी शक्ति ईशान कोण में, ब्रह्माणी ऊपर तथा वैष्णवी शक्ति नीचे हमारी रक्षा करे ॥ १९ ॥

इसी प्रकार शव के ऊपर विराजमान चामुण्डा देवी दसों दिशा में हमारी रक्षा करें। आगे जया, पीछे विजया हमारी रक्षा करें ॥ २० ॥ बायें भाग में अजिता, दाहिने भाग में अपराजिता, शिखा में उद्योतिनी तथा सिर में उमा नियमपूर्वक हमारी रक्षा करें ॥ २१ ॥ ललाट में मालाधरी, दोनों भ्रू में यशस्विनी, भ्रू के मध्य में त्रिनेत्रा तथा

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोद्धारवासिनी ।
 कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी ॥२३॥
 नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
 अधरे चाऽमृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥२४॥
 दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये च चण्डिका ।
 घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥
 कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
 ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥
 नीलग्रीवा वहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
 स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥
 हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
 नखाञ्जलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी ॥२८॥

नासिका में यमघण्टा हमारी रक्षा करें ॥ २२ ॥ दोनों नेत्रों के बीच में शंखिनी, दोनों कान के मध्य में द्वारवासिनी, कपोल में कालिका, कर्ण के मूल भाग में शाङ्करी हमारी रक्षा करें ॥ २३ ॥ नासिका के बीच का भाग सुगन्धा, ओष्ठ में चर्चिका, अधर (ओठ) में अमृत-कला तथा जिह्वा में सरस्वती हमारी रक्षा करें ॥ २४ ॥ कौमारी दाँतों की, चण्डिका कण्ठप्रदेश की, चित्रघण्टा गले की तथा महामाया तालु की रक्षा करें ॥ २५ ॥ कामाक्षी ठोढ़ी की, सर्वमङ्गला वाणी की, भद्रकाली ग्रीवा की तथा धनुष को धारण करने वाली रीढ़ प्रदेश की रक्षा करें ॥ २६ ॥ कण्ठ के बाहर नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी, दोनों कन्धों की खड्गिनी तथा वज्र को धारण करने वाली दोनों बाहू की रक्षा करें ॥ २७ ॥ दोनों हाथों में दण्ड को धारण करने वाली तथा अम्बिका अङ्गुलियों में हमारी रक्षा

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक-विनाशिनी ।
 हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥
 नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
 पूतना कामिका मेढं गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥
 कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
 जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी ॥३१॥
 गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
 पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाऽधःस्थलवासिनी ॥३२॥
 नखान् दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
 रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥

करें। शूलेश्वरी नखों की तथा कुलेश्वरी कुक्षिप्रदेश में स्थित होकर हमारी रक्षा करें ॥ २८ ॥

महादेवी दोनों स्तन की, शोक को नाश करने वाली मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में तथा त्रिशूलधारिणी उदर प्रदेश में स्थित होकर रक्षा करें ॥ २९ ॥ नाभि में कामिनी तथा गुह्यभाग में गुह्येश्वरी हमारी रक्षा करें। कामिका तथा पूतना लिंग की तथा महिषवाहिनी गुदा में हमारी रक्षा करें ॥३०॥ भगवती कटिप्रदेश में तथा विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाली महाबला जङ्घे (घुटनों के नीचे का भाग) की रक्षा करें ॥ ३१ ॥ नारसिंही दोनों पैर के घुट्टियों की, तैजसी देवी दोनों पैर के पिछले भाग की, श्री देवी पैर के अँगुलियों की तथा तलवासिनी पैर के निचले भाग की रक्षा करें ॥ ३२ ॥ दंष्ट्राकराली (अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली) नखों की, ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की, कौबेरी (कुबेर की शक्ति) रोमावलि के

रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वती ।
 अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥३४॥
 पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
 ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥३५॥
 शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
 अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन् मे धर्मधारिणी ॥३६॥
 प्राणाऽपानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
 वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणकल्पं च शोभना ॥३७॥
 रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
 सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥

छिद्रों में तथा वागीश्वरी त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) की हमारी रक्षा करें ॥ ३३ ॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदे की रक्षा करें। कालरात्रि आँतों की तथा मुकुटेश्वरी पित्त की रक्षा करें। पद्मावती (मूलाधार में स्थित) सहस्रदल कमल में, चूडामणि कफ में, ज्वालामुखी नखराशि में उत्पन्न तेज की तथा अभेद्या (जिसका किसी शस्त्र से भेदन न हो) सभी सन्धियों (जोड़ों) में हमारी रक्षा करें ॥ ३४-३५ ॥ ब्रह्माणी शुक्र की, छत्रेश्वरी छाया की, धर्म को धारण करने वाली हमारे अहंकार, मन तथा बुद्धि की रक्षा करें ॥३६॥ वज्रहस्ता (वज्र को धारण करने वाली) प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान वायु की, कल्याण से सुशोभित होने वाली कल्याणशोभना हमारे प्राणों की रक्षा करें ॥३७॥ रस, रूप, गन्ध, शब्द तथा स्पर्शरूप विषयों का अनुभव करते समय योगिनी तथा हमारे सत्त्व, रज एवं तमोगुणों की रक्षा नारायणी

आयु रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ।
 यशःकीर्ति च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३९॥
 गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून् मे रक्ष चण्डिके ।
 पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीभार्या रक्षतु भैरवी ॥४०॥
 पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
 राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥
 रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
 तत्सर्वं रक्ष मे देवि ! जयन्ती पापनाशिनी ॥४२॥
 पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
 कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥

देवी करें ॥३८॥ वाराही आयु की, वैष्णवी धर्म की, चक्रिणी (चक्र को धारण करने वाली) यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करें ॥३९॥ हे इन्द्राणी, तुम मेरे कुल की तथा हे चण्डिके, तुम हमारे पशुओं की रक्षा करो, महालक्ष्मी पुत्रों की तथा भैरवी देवी हमारी स्त्री की रक्षा करें ॥४०॥ सुपथा (प्रशस्त मार्ग पर चलाने वाली) हमारे पथ की, क्षेमकरी (कल्याण करने वाली) मार्ग की रक्षा करें । राजद्वार पर महालक्ष्मी तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया भयों से हमारी रक्षा करें ॥४१॥ हे देवि ! इस कवच में जिस स्थान की रक्षा नहीं कही गयी है, उस अरक्षित स्थान में (तुम्हारी शक्ति) पाप को नाश करने वाली जयन्ती देवी हमारी रक्षा करें ॥४२॥ यदि मनुष्य अपना कल्याण चाहे तो वह कवच के पाठ के बिना एक पग भी कहीं यात्रा न करे । क्योंकि कवच का पाठ करके चलने वाला मनुष्य जिस-जिस स्थान पर जाता है ॥ ४३ ॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
 यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥४४॥
 परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।
 निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥४५॥
 त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनाऽऽवृतः पुमान् ।
 इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥४६॥
 यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ।
 दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥४७॥
 जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्यु-विवर्जितः ।
 नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटकादयः ॥४८॥

उसे वहाँ-वहाँ धन का लाभ होता है और सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करने वाली विजय की प्राप्ति होती है । वह पुरुष जिस-जिस अभीष्ट वस्तु को चाहता है वह वस्तु उसे निश्चय ही प्राप्त होती है ॥४४॥
 कवच का पाठ करने वाला इस पृथ्वी पर अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है, वह किसी से नहीं डरता और युद्ध में उसे कोई हरा भी नहीं सकता ॥४५॥ और तीनों लोकों में उसकी पूजा होती है । यह देवी का कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है ॥४६॥

जो लोग तीनों सन्ध्या में श्रद्धापूर्वक इस कवच का पाठ करते हैं, उन्हें दैवीकला की प्राप्ति होती है, तीनों लोकों में उन्हें कोई जीत नहीं सकता ॥४७॥ उस पुरुष की अपमृत्यु नहीं होती । वह सौ से भी अधिक वर्ष तक जीवित रहता है । इस कवच का पाठ करने से लूता (सिर में होने वाला खाज का रोग मकरी), विस्फोटक (चंचक) आदि सभी रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ४८ ॥

स्थावर जङ्गमं चैव कृत्रिमं चाऽपि यद्विषम् ।
 अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र-यन्त्राणि भूतले ॥४९॥
 भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चोपदेशिकाः ।
 सहजाः कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥५०॥
 अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।
 ग्रह-भूत-पिशाचाश्च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः ॥५१॥
 ब्रह्म-राक्षस-वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।
 नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥५२॥
 मानोन्नतिर्भवेद् राजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
 यशसा वर्धते सोऽपि कीर्ति-मण्डित-भूतले ॥५३॥

स्थावर विष (कनेर, भाँग, अफीम में रहने वाला), जंगम विष (साँप, बिच्छू आदि से उत्पन्न), कृत्रिम विष (अफीम, तेल आदि के संयोग से उत्पन्न) ये सभी प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं। मारण, मोहन तथा उच्चाटन आदि सभी प्रकार के किये गये अभिचार, मन्त्र तथा यन्त्र, पृथ्वी तथा आकाश में विचरण करने वाले ग्रामदेवतादि, जल में उत्पन्न होने वाले तथा उपदेश से सिद्ध होने वाले सभी प्रकार के क्षुद्र देवता आदि, कवच के पाठ करने वाले मनुष्य को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं। जन्म के साथ उत्पन्न होने वाले ग्राम देवता, कुलक्रम से उत्पन्न होने वाले कुलदेवता, कण्ठमाला, डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरण करने वाली अत्यन्त भयानक बलवान् डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, वेताल, कूष्माण्ड तथा भयानक भैरव आदि सभी अनिष्ट करने वाले जीव-विशेष कवच का पाठ करने वाले पुरुष को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं ॥४९-५२॥
 कवचधारी पुरुष का राजा के द्वारा सम्मान की प्राप्ति होती है।

जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तुः कवचं पुरा ।
 यावद् भूमण्डलं धत्ते स-शैल-वनकाननम् ॥५४॥
 तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ।
 देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥५५॥
 प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ।
 लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥५६॥

इति वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं
 देव्याः कवचं समाप्तम् ।

*

यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला है। कवच का पाठ करने वाला पुरुष इस पृथ्वी को अपनी कीर्ति के साथ वह नित्य अभ्युदय को प्राप्त करता है ॥५३॥ जो कवच का पाठ कर सप्तशती का पाठ करता है, उसके पुत्र-पौत्रादि सन्तति पृथ्वी पर तब तक विद्यमान रहती है जब तक पहाड़, वन, कानन (जंगल) और कानन से युक्त यह पृथ्वी टिकी हुई है ॥५४॥

कवच का पाठ कर दुर्गा सप्तशती का पाठ करने वाला मनुष्य मरने के बाद महामाया की कृपा से देवताओं के लिए जो अत्यन्त दुर्लभ स्थान है, उसे प्राप्त कर लेता है और उत्तमरूप प्राप्त कर शिवजी के साथ आनन्दपूर्वक निवास करता है ॥५५-५६॥

इस प्रकार दुर्गातन्त्र में आचार्य पण्डित श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्रिकृत

‘शिवदत्ती’ हिन्दी टीका सहित दुर्गा-कवच समाप्त ।

*

दुर्गाशतनामाष्टकम्

7565

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ! ।
 यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥ १ ॥
 सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
 आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥
 पिनाकधारिणी चित्रा चन्द्रघण्टा महातपा ।
 मनोबुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥
 सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
 अनन्ता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदागतिः ॥ ४ ॥

ईश्वर बोले—हे कमलानने ! मैं दुर्गा के सौ नाम को कहता हूँ, सुनो । उस नाम के प्रसाद मात्र से सदैव दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं ॥ १ ॥ सती, साध्वी, भवप्रीता, भवानी, भवमोचनी, आर्या, दुर्गा, जया, आद्या, त्रिनेत्रा, शूलधारिणी, ॥ २ ॥ पिनाकधारिणी, चित्रा, चन्द्रघण्टा, महातपा, मन, बुद्धि, अहङ्कार, चित्तरूपा, चिता, चिति, ॥ ३ ॥ सर्वा, मन्त्रमयी, सत्या, असत्या, आनन्दा, स्वरूपिणी, अनन्ता,

विशेष- इस दुर्गाशतनामाष्टक स्तोत्र में कहीं-कहीं एक ही शब्द कई बार आवृत हुए हैं, जैसे 'प्रदा' शब्द, यहाँ एक प्रदा का अर्थ विशिष्ट दान करने वाली तथा दूसरे 'प्रदा' का अर्थ (दो-अवखण्डने) संहार करने वाली है । इस प्रकार अर्थभेद से दो नाम मान लेना चाहिए । इसी प्रकार एकांशक शब्दों को भी शब्द-भेद से भिन्न नाम मानना चाहिए ।

शम्भुपत्नी देवमाता चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
 सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥
 अपर्णा चैव पर्णा च पाटला पाटलावती ।
 पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ ६ ॥
 अमेया विक्रमा क्रूरा सुन्दरी कुलसुन्दरी ।
 नवदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
 चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥
 विमलोत्कर्षिणी ज्ञानक्रिया सत्या च वाक्प्रदा ।
 बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥
 निशुम्भ - शुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
 मधुकैटभहन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥ १० ॥

भाविनी, भाव्या, भवा, भव्या, सदागति, ॥ ४ ॥

शम्भुपत्नी, देवमाता, चिन्ता, रत्नप्रिया, सर्वविद्या, दक्षकन्या, दक्षयज्ञविनाशिनी, ॥ ५ ॥ अपर्णा, पर्णा, पाटला, पाटलावती, पट्टाम्बरपरीधाना, कलमञ्जीररञ्जिनी, ॥ ६ ॥ अमेया, विक्रमा, क्रूरा, सुन्दरी, कुल सुन्दरी, नवदुर्गा, मातङ्गी, मतङ्गमुनि-पूजिता, ॥ ७ ॥ ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री, कौमारी, वैष्णवी, चामुण्डा, वाराही, लक्ष्मी, ई, पुरुषाकृति, विमला, उत्कर्षिणी, ज्ञाना, क्रिया, सत्या, वाक्प्रदा, बहुला, बहुलप्रेमा, सर्ववाहनवाहना, ॥ ८-९ ॥ निशुम्भहननी, शुम्भहननी, महिषासुरमर्दिनी, मधुहन्त्री, कैटभहन्त्री, चण्डविनाशिनी, मुण्डविनाशिनी, ॥ १० ॥

सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
 सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥
 अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी ।
 कुमारी चैव कन्याः च कौमारी युवती यतिः ॥१२॥
 अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
 य इदं च पठेत् स्तोत्रं दुर्गानाम शताष्टकम् ॥१३॥
 नाऽसाध्यं विद्यते देवि ! त्रिषु लोकेषु पार्वति ! ।
 धनं धान्यं सुतां जायां हयं हस्तिनमेव च ॥१४॥
 चतुर्वर्गं तथा चाऽन्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ।
 कुमारीः पूजयित्वा च ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ॥१५॥

सर्वा, असुरविनाशा, सर्वदानवघातिनी, सर्वशास्त्रमयी, विद्या
 सर्वास्त्रधारिणी ॥ ११ ॥ अनेका, शस्त्रहस्ता, अनेकास्त्रविधारिणी
 कुमारी, कन्या, कौमारी, युवति, यति ॥१२॥

अप्रौढा, प्रौढा, वृद्धा, माता, बला, प्रदा ॥१३॥

जो दुर्गा के इस एक सौ आठ नामों का पाठ करता है ।
 पार्वति ! उसे तीनों लोक में कुछ भी अप्राप्य नहीं होता । वह धन,
 धान्य, सुत, स्त्री, घोड़ा एवं हाथी आदि वस्तुओं को प्राप्त कर
 है ॥१४॥ कुमारी का पूजन कर भगवती का ध्यान करते हुए जो
 शतनामाष्टक का पाठ करता है वह इस लोक में चतुर्वर्ग (धर्म, अ
 काम तथा मोक्ष) तो प्राप्त करता ही है अन्त में नित्य मुक्ति
 भी प्राप्त कर लेता है ॥ १५ ॥

पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नाम शताष्टकम् ।
 तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि ! सर्वैः सुखरैरपि ।
 राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१६॥
 गौरीचना-ऽलक्तक-कुङ्कुमेन सिन्दूर-कर्पूर-मधुत्रयेण ।
 विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयतो पुरारिः ॥१७॥
 भौमावास्यानिशाभागे चन्द्रे शतभिषां गते ।
 विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥१८॥
 इति दुर्गातन्त्रे शतनामाष्टकं सम्पूर्णम् ।

*

यदि भगवती का पूजन करके दुर्गाशतनामाष्टकका पाठ करे तो
 देवताओं से भी बढ़ कर सिद्धि प्राप्त कर लेता है । राजा भी उसके
 दास हो जाते हैं और राज्य-श्रीको प्राप्त करता है ॥१६॥ गौरीचन,
 लाक्षा, कुंकुम, सिन्दूर, कपूर, तीन प्रकार के मधु (घी, चीनी तथा
 मधु) को एक में मिला कर जो विधि पूर्वक दुर्गायन्त्र को लिख कर
 धारण करते हैं, वे शंकर के समान पूज्य हो जाते हैं ॥ १७ ॥

जो भौमवार के दिन अमावास्या को अर्धरात्रि में अथवा
 सोमवार को शतभिषा नक्षत्र में अर्धरात्रि को इस यन्त्र को लिख कर
 तथा उसे धारण कर इसका पाठ करते हैं वे सर्व-सम्पत्ति से पूर्ण हो
 जाते हैं ॥ १८ ॥

इस प्रकार पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका

सहित दुर्गातन्त्र में शतनामाष्टकस्तोत्र समाप्त ।

*

दकारादि-दुर्गासहस्रनाम-स्तोत्रम्

विनियोगः—अस्य श्रीदकारादि-दुर्गासहस्रनामस्तोत्रस्य, शिव ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीदुर्गा-देवता, हुं बीजं, हुं कीलकं, दुःख-दारिद्र्य-रोग-शोक-निवृत्तिपूर्वक-चतुर्वर्गफलप्राप्तये श्रीदुर्गादेवता-प्रीत्यर्थं च तद्दिव्यसहस्रनामभिः पुष्पा-ऽक्षतादिद्रव्यसमर्पणे पाठे वा विनियोगः ।

श्रीदेव्युवाच

मम नाम सहस्रं च शिवपूर्वविनिर्मितम् ।
तत्पठ्यतां विधानेन तदा सर्वं भविष्यति ॥ १ ॥
इत्युक्त्वा पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान् ।
तदेव नाम साहस्रं दकारादि वरानने ॥ २ ॥
रोग-दारिद्र्य-दौर्भाग्य-शोक - दुःख - विनाशकम् ।
सर्वासां पूजितं नाम श्रीदुर्गादेवता मता ॥ ३ ॥
निजबीजं भवेद् बीजं मन्त्रं कीलकमुच्यते ।
सर्वाशापूरणे देवी विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

श्री देवीने कहा—हे देवो ! पूर्वकाल में शङ्करजी के द्वारा निमित्त किये गये मेरे सहस्रनाम का तुम लोग पाठ करो, ऐसा करने से तुम्हें सब कुछ प्राप्त हो जायेगा ॥ १ ॥ ऐसा कह कर पार्वती देवी ने उन देवताओं को दुर्गा-सहस्र-नाम, जिसके आदि में दकारवर्ण आया है, उसको सुनाया ॥ २ ॥

यह सहस्र नाम रोग, दारिद्र्य, दुर्भाग्य, शोक तथा दुःख को नाश करने वाला है, सभी देवताओं से पूजित है । इस सहस्र नाम-स्तोत्र की दुर्गा देवता हैं, दुर्गा ही बीज है ॥ ३ ॥ तथा 'हुं दुर्गायै नमः'

हुं दुर्गा	दुर्गातिहरा	दुर्गाचलनिवासिनी ॥ ५ ॥
दुर्गमार्गप्रविष्टा	च	दुर्गमार्गप्रवेशिनी ।
दुर्गमार्गकृतावासा		दुर्गमार्गजयप्रिया ॥ ६ ॥
दुर्गमार्गगृहीतार्चा		दुर्गमार्गस्थितात्मिका ।
दुर्गमार्गस्तुतिपरा		दुर्गमार्गस्मृतिपरा ॥ ७ ॥
दुर्गमार्गसदास्थाली		दुर्गमार्गरतिप्रिया ।
दुर्गमार्गस्थलस्थाना		दुर्गमार्गविलासिनी ॥ ८ ॥
दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा		दुर्गमार्गप्रवर्त्तिनी ।
दुर्गासुरनिहन्त्री	च	दुर्गासुरनिषिद्नी ॥ ९ ॥
दुर्गासुरहरादूती		दुर्गासुरविनाशिनी ।
दुर्गासुरवधोन्मत्ता		दुर्गासुरवधोत्सुका ॥ १० ॥

यह मन्त्र इसका कीलक है । अपनी मनोरथ सिद्धि के लिये इसका पाठ, यही विनियोग है ॥ ४ ॥

१. दुर्गा, २. दुर्गातिहरा, ३. दुर्गाचलनिवासिनी ॥ ५ ॥ ४. दुर्गमार्गप्रविष्टा, ५. दुर्गमार्गप्रवेशिनी, ६. दुर्गमार्गकृतावासा, ७. दुर्गमार्गजया, ८. दुर्गमार्गप्रिया ॥ ६ ॥ ९. दुर्गमार्गगृहीतार्चा, १०. दुर्गमार्गस्थितात्मिका, ११. दुर्गमार्गस्तुतिपरा, १२. दुर्गमार्गस्मृतिपरा ॥ ७ ॥

१३. दुर्गमार्गसदा, १४. दुर्गस्थाली, १५. दुर्गमार्गरति, १६. दुर्गमार्गप्रिया, १७. दुर्गमार्गस्थली, १८. दुर्गमार्गस्थाना, १९. दुर्गमार्गविलासिनी ॥ ८ ॥ २०. दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा, २१. दुर्गमार्गप्रवर्त्तिनी, २२. दुर्गासुरनिहन्त्री, २३. दुर्गासुरनिषिद्नी ॥ ९ ॥ २४. दुर्गासुरहरा, २५. दुर्गादूती २६. दुर्गासुरविनाशिनी, २७. दुर्गासुरवधोन्मत्ता, २८. दुर्गासुरवधोत्सुका ॥ १० ॥

॥ ४ ॥ दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता ।
 दुर्गासुरवधप्रेम्सु - दुर्गासुरमखान्तकृत् ॥११॥
 ॥ ५ ॥ दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी ।
 दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सदा ॥१२॥
 दुर्गविक्षोभनकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तनी ।
 दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तनी ॥१३॥
 दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी ।
 दुर्गदैत्यहरत्राता दुर्गदैत्यसृगुन्मदा ॥१४॥
 दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता ।
 दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशारदा ॥१५॥
 दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमर्दिनी ।
 दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धानुसारिणी ॥१६॥
 दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी ।
 दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी ॥१७॥

२९. दुर्गासुरवधोत्साहा, ३०. दुर्गासुरवधोद्यता, ३१. दुर्गासुर-
 वधप्रेम्सु, ३२. दुर्गासुरमखान्तकृत् ॥ ११ ॥ ३३. दुर्गासुरध्वंसतोषा,
 ३४. दुर्गदानवदारिणी, ३५. दुर्गविद्रावणकरी, ३६. दुर्गविद्रावणी ॥ १२ ॥
 ३७. दुर्गविक्षोभनकरी, ३८. दुर्गशीर्षनिकृन्तनी, ३९. दुर्गविध्वंसनकरी,
 ४०. दुर्गदैत्यनिकृन्तनी ॥ १३ ॥ ४१. दुर्गदैत्यप्राणहरा, ४२. दुर्गदैत्यान्त-
 कारिणी, ४३. दुर्गदैत्यहरत्राता, ४४. दुर्गदैत्यसृगुन्मदा ॥ १४ ॥
 ४५. दुर्गदैत्याशनकरी, ४६. दुर्गचर्माम्बरावृता, ४७. दुर्गयुद्धोत्सव-
 करी, ४८. दुर्गयुद्धविशारदा ॥ १५ ॥

४९. दुर्गयुद्धासवरता, ५०. दुर्गयुद्धविमर्दिनी, ५१. दुर्गयुद्धहास्यरता,

दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी ।
 दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया ॥१८॥
 दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यानसाधना ।
 दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी ॥१९॥
 दुर्गमागमसन्धाना दुर्गमागमसंस्तुता ।
 दुर्गमागमदुर्ज्ञेया दुर्गमश्रुतिसम्मता ॥२०॥
 दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता ।
 दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा ॥२१॥
 दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता ।
 दुर्गमाचारसन्तुष्टा दुर्गमाचारतोषिता ॥२२॥
 दुर्गमाचारनिवृत्ता दुर्गमाचारपूजिता ।
 दुर्गमाचारकसिता दुर्गमस्थानदायिनी ॥२३॥

५२. दुर्गयुद्धाट्टहासिनी ॥ १६ ॥ ५३. दुर्गयुद्धमहामत्ता, ५४. दुर्गयुद्ध
 नुसारिणी, ५५. दुर्गयुद्धोत्सवा, ५६. दुर्गयुद्धोत्साहा, ५७. दुर्गदेश
 निषेविणी ॥ १७ ॥ ५८. दुर्गदेशवासरता, ५९. दुर्गदेशविलासिनी
 ६०. दुर्गदेशार्चनरता, ६१. दुर्गदेशजनप्रिया ॥ १८ ॥ ६२. दुर्गमस्था-
 नसंस्थाना, ६३. दुर्गमध्यानसाधना, ६४. दुर्गमा, ६५. दुर्गमध्याना
 ६६. दुर्गमात्मस्वरूपिणी ॥ १९ ॥

६७. दुर्गमागमसंस्थाना, ६८. दुर्गमागमसंस्तुता, ६९. दुर्गमागम
 ७०. दुर्ज्ञेया ७१. दुर्गमश्रुतिसम्मता ॥ २० ॥ ७२. दुर्गमश्रुतिमान्या, ७३.
 दुर्गमश्रुतिपूजिता ७४. दुर्गमश्रुतिसुप्रीता, ७५. दुर्गमश्रुतिहर्षदा ॥ २१ ॥
 ७६. दुर्गमश्रुतिसंस्थाना, ७७. दुर्गमश्रुतिमानिता, ७८. दुर्गम
 चारसन्तुष्टा, ७९. दुर्गमाचारतोषिता ॥ २२ ॥ ८०. दुर्गमाचारनिवृत्ता
 ८१. दुर्गमाचारपूजिता, ८२. दुर्गमाचारकसिता, ८३. दुर्गमस्था

दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा ।
 दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी ॥२४॥
 दुर्गनाडीमार्गगति - दुर्गनाडी - प्रचारिणी ।
 दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता ॥२५॥
 दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा ।
 दुर्गनाडीरतरता दुर्गनाडीशसंस्तुता ॥२६॥
 दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता ।
 दुर्गनाडीशक्रोडस्था दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका ॥२७॥
 दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडीनिषेविता ।
 दरीस्थान-दरीस्थानवासिनी दनुजान्तकृत् ॥२८॥
 दरीकृततपस्या च दरीकृतहरार्चना ।
 दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरतिक्रिया ॥२९॥

॥यिनी, ॥२३॥ ८४. दुर्गमप्रेमनिरता ८५. दुर्गमद्रविणप्रदा ८६. दुर्ग-
 माम्बुजमध्यस्था ८७. दुर्गमाम्बुजवासिनी, ॥ २४ ॥

८८. दुर्गनाडीमार्गगति, ८९. दुर्गनाडीप्रचारिणी, ९०. दुर्ग-
 नाडीपद्मरता, ९१. दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता ॥२५॥ ९२. दुर्गनाडीगता-
 याता, ९३. दुर्गनाडीकृतास्पदा, ९४. दुर्गनाडीरतरता, ९५. दुर्गनाडीश-
 संस्तुता ॥ २६ ॥ ९६. दुर्गनाडीश्वररता, ९७. दुर्गनाडीशचुम्बिता,
 ९८. दुर्गनाडीशक्रोडस्था, ९९. दुर्गनाड्युत्थिता, १००. दुर्गनाड्युत्थि-
 तोत्सुका ॥ २७ ॥ १०१. दुर्गनाड्यारोहणा, १०२. दुर्गनाडीनिषेविता,
 १०३. दरीस्थाना, १०४. दरीस्थानवासिनी, १०५. दनुजान्त-
 कृत् ॥ २८ ॥

१०६. दरीकृततपस्या, १०७. दरीकृतहरार्चना, १०८. दरीजापित-

दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडितपुत्रिका ।
 दरीसन्दर्शनरता दरीरोपितवृश्चिका ॥३०॥
 दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा ।
 दनुजान्तकरी दीना-दनुसन्तान-दारिणी ॥३१॥
 दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी ।
 दानवध्वंसिनी देवी दानवानां भयङ्करी ॥३२॥
 दानवी दानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा ।
 दानवेन्द्रनिहन्त्री च दानवद्वेषिणी सती ॥३३॥
 दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता ।
 दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा ॥३४॥
 दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया ।
 दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा ॥३५॥

दिष्टा, १०९. दरीकृतरतिक्रिया ॥ २९ ॥ ११०. दरीकृतहरार्हा
 १११. दरीक्रीडितपुत्रिका, ११२. दरीसंदर्शनरता ११३. दरीरोपित-
 वृश्चिका, ॥३०॥ ११४. दरीगुप्तिकौतुकाढ्या, ११५. दरीभ्रमणतत्परा,
 ११६. दनुजान्तकरी, ११७. दीना, ११८. दनुजसन्तानदारिणी ॥ ३१ ॥
 ११९. दनुजध्वंसिनी, १२०. दूना, १२१. दनुजेन्द्रविनाशिनी, १२२.
 १२३. देवी दानवध्वंसिनी, १२४. दानवानां भयङ्करी ॥ ३२ ॥ १२५.
 दानवी, १२६. दानवाराध्या, १२७. दानवेन्द्रवरप्रदा, १२८. दानवेन्द्र-
 निहन्त्री, १२९. दानवद्वेषिणी सती ॥ ३३ ॥

१३०. दानवारिप्रेमरता, १३१. दानवारिप्रपूजिता, १३२. दानवा-
 रिकृतार्चा, १३३. दानवारिविभूतिदा ॥ ३४ ॥ १३४. दानवारिमहा-
 नन्दा, १३५. दानवारिरतिप्रिया, १३६. दानवारिदानरता, १३७.

दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया ।
 दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी ॥३६॥
 दानवारिधृतप्रेमा दुःख-शोकविमोचिनी ।
 दुःखहन्त्री दुःखदात्री दुःखनिर्मूलकारिणी ॥३७॥
 दुःखनिर्मूलनकरी दुःखदारिद्र्यनाशिनी ।
 दुःखहरा दुःखनाशा दुःखग्रामा दुरासदा ॥३८॥
 दुःखहीना दुःखधारा द्रविणाचारदायिनी ।
 द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टा द्रविणत्यागतोषिका ॥३९॥
 द्रविणस्पर्शसन्तुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा ।
 द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा ॥४०॥
 द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा ।
 द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिता ॥४१॥

दानवारिकृतास्पदा ॥३५॥ १३८. दानवारिस्तुतिरता, १३९. दानवारि-
 स्मृतिप्रिया, १४०. दानवार्याहाररता, १४१. दानवारिप्रबोधिनी, १४२. दानवारिधृतप्रेमा,
 १४३. दुःखशोकविमोचिनी, १४४. दुःखहन्त्री, १४५. दुःखदात्री, १४६. दुःखनिर्मूलकारिणी ॥ ३७ ॥
 १४७. दुःखनिर्मूलनकरी, १४८. दुःखदारिद्र्यनाशिनी । १४९. दुःखहरा,
 १५०. दुःखनाशा, १५१. दुःखग्रामा, १५२. दुरासदा ॥ ३८ ॥ १५३.
 दुःखहीना, १५४. दुःखधारा, १५५. द्रविणाचारदायिनी, १५६. द्रविणो-
 त्सर्गसन्तुष्टा, १५७. द्रविणत्यागतोषिका ॥३९॥ १५८. द्रविणस्पर्श-
 सन्तुष्टा, १५९. द्रविणस्पर्शमानदा, १६०. द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या, १६१.
 विणस्पर्शतुष्टिदा ॥ ४० ॥ १६२. द्रविणस्पर्शनकरी, १६३. द्रविणस्पर्शनातुरा, १६४. द्रविण-

द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका ।
 द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी ॥४२॥
 द्रविणाकर्षणकरी द्रविणौघविसर्जनी ।
 द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी ॥४३॥
 दीनमाता दीनबन्धुर्दीनविघ्नविनाशिनी ।
 दीनसेव्या दीनसिद्धा दीनसाध्या दिगम्बरी ॥४४॥
 दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी ।
 दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी ॥४५॥
 दीनमानवचेतःस्था दीनमानवहर्षदा ।
 दीनदैन्य-निघातेच्छु-दीनद्रविणदायिनी ॥४६॥
 दीनसाधनसन्तुष्टा दीनदर्शनदायिनी ।
 दीनपुत्रादिदात्री च दीनसम्पद्-विधायिनी ॥४७॥

स्पर्शनोत्साहा, १६५. द्रविणस्पर्शसाधिता ॥४१॥ १६६. द्रविणस्पर्शन-
 मता, १६७. द्रविणस्पर्शपुत्रिका, १६८. द्रविणस्पर्शरक्षिणी, १६९.
 द्रविणस्तोमदायिनी ॥४२॥ १७०. द्रविणाकर्षणकरी, १७१.
 द्रविणौघविसर्जनी, १७२. द्रविणाचलदानाढ्या, १७३. द्रविणा-
 चलवासिनी ॥४३॥ १७४. दीनमाता, १७५. दीनबन्धु, १७६.
 दीनविघ्नविनाशिनी, १७७. दीनसेव्या, १७८. दीनसिद्धा, १७९.
 दीनसाध्या, १८०. दिगम्बरी ॥४४॥ १८१. दीनगेहकृतानन्दा,
 १८२. दीनानन्दा, १८३. दीनगेहविलासिनी, १८४. दीनभावप्रेमरता,
 १८५. दीनभावविनोदिनी ॥४५॥

१८६. दीनमानवचेतःस्था, १८७. दीनमानवहर्षदा, १८८. दीनदैन्य-
 निघातेच्छु., १८९. दीनद्रविणदायिनी ॥४६॥ १९०. दीनसाधन-
 सन्तुष्टा, १९१. दीनदर्शनदायिनी, १९२. दीनपुत्रादिदात्री, १९३. दीन-

दत्तात्रेयध्यानरता	दत्तात्रेयप्रपूजिता ।
दत्तात्रेयषिसंसिद्धा	दत्तात्रेयविभाविता ॥४८॥
दत्तात्रेयकृताहर्हा	च दत्तात्रेयप्रसाधिता ।
दत्तात्रेयहर्षदात्री	दत्तात्रेयसुखप्रदा ॥४९॥
दत्तात्रेयस्तुता	चैव दत्तात्रेयनुता सदा ।
दत्तात्रेयप्रेमरता	दत्तात्रेयानुमानिता ॥५०॥
दत्तात्रेयसमुद्गीता	दत्तात्रेयकुटुम्बिनी ।
दत्तात्रेयप्राणतुल्या	दत्तात्रेयशरीरिणी ॥५१॥
दत्तात्रेयकृतानन्दा	दत्तात्रेयांशसम्भवा ।
दत्तात्रेयविभूतिस्था	दत्तात्रेयानुसारिणी ॥५२॥
दत्तात्रेयगीतिरता	दत्तात्रेयधनप्रदा ।
दत्तात्रेयदुःखहरा	दत्तात्रेयवरप्रदा ॥५३॥

दत्तात्रेयज्ञानदात्री	दत्तात्रेयभयापहा ।
देवकन्या	देवमान्या देवदुःखविनाशिनी ॥५४॥
देवसिद्धा	देवपूज्या देवज्या देववन्दिता ।
देवमान्या	देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी ॥५५॥
देवरम्या	देवरता देवकौतुकतत्परा ।
देवक्रीडा	देवव्रीडा देववैरिनिनाशिनी ॥५६॥
देवकामा	देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी ।
देवदेवप्रिया	देवी देवदानववन्दिता ॥५७॥
देवदेवरतानन्दा	देवदेववरोत्सुका ।
देवदेवप्रेमरता	देवदेवप्रियंवदा ॥५८॥
देवदेवप्राणतुल्या	देवदेवनितम्बिनी ।
देवदेवहृतमना	देवदेवसुखावहा ॥५९॥

संपद-विघ्नायिनी ॥४७॥ १९४. दत्तात्रेयध्यानरता, १९५. दत्तात्रेय-
प्रपूजिता, १९६. दत्तात्रेयषिसंसिद्धा, १९७. दत्तात्रेयविभाविता ॥४८॥
१९८. दत्तात्रेयकृताहर्हा, १९९. दत्तात्रेयप्रसाधिता, २००. दत्तात्रेयहर्ष-
दात्री, २०१. दत्तात्रेयसुखप्रदा ॥४९॥ २०२. दत्तात्रेयस्तुता, २०३.
दत्तात्रेयनुता, २०४. दत्तात्रेयप्रेमरता, २०५. दत्तात्रेयानुमानिता ॥५०॥
२०६. दत्तात्रेयसमुद्गीता, २०७. दत्तात्रेयकुटुम्बिनी, २०८. दत्तात्रेय-
प्राणतुल्या, २०९. दत्तात्रेयशरीरिणी ॥५१॥

२१०. दत्तात्रेयकृतानन्दा, २११. दत्तात्रेयांशसम्भवा, २१२.
दत्तात्रेयविभूतिस्था, २१३. दत्तात्रेयानुसारिणी ॥५२॥ २१४.
दत्तात्रेयगीतिरता, २१५. दत्तात्रेयधनप्रदा, २१६. दत्तात्रेयदुःखहरा,
२१७. दत्तात्रेयवरप्रदा ॥५३॥

२१८. दत्तात्रेयज्ञानदात्री, २१९. दत्तात्रेयभयापहा, २२०.
देवकन्या, २२१. देवमान्या, २२२. देवदुःखविनाशिनी, ॥५४॥
२२३. देवसिद्धा, २२४. देवपूज्या, २२५. देवज्या, २२६. देववन्दिता,
२२७. देवमान्या, २२८. देवधन्या, २२९. देवविघ्नविनाशिनी ॥५५॥
२३०. देवरम्या, २३१. देवरता, २३२. देवकौतुकतत्परा, २३३.
देवक्रीडा, २३४. देवव्रीडा, २३५. देववैरिनिनाशिनी, ॥५६॥ २३६.
देवकामा, २३७. देवरामा, २३८. देवद्विष्टविनाशिनी, २३९. देवदेव-
प्रिया, २४०. देवी, २४१. देवदानववन्दिता ॥५७॥ २४२. देव-
देवरतानन्दा, २४३. देवदेववरोत्सुका, २४४. देवदेवप्रेमरता, २४५.
देवदेवप्रियम्बदा, ॥५८॥ २४६. देवदेवप्राणतुल्या, २४७. देवदेव-
नितम्बिनी, २४८. देवदेवहृतमना, २४९. देवदेवसुखावहा ॥५९॥

देवदेवक्रोडरता	देवदेवसुखप्रदा ।
देवदेवमहानन्दा	देवदेवप्रचुम्बिता ॥६०॥
देवदेवोपभुक्ता च	देवदेवानुसेविता ।
देवदेवगतप्राणा	देवदेवगतात्मिका ॥६१॥
देवदेवहर्षदात्री	देवदेवसुखप्रदा ।
देवदेवमहानन्दा	देवदेवविलासिनी ॥६२॥
देवदेवधर्मपत्नी	देवदेवमनोगता ।
देवदेववधूदेव-देवदेवार्चन-प्रिया	॥६३॥
देवदेवाङ्गनिलया	देवदेवाङ्गशायिनी ।
देवदेवाङ्गसुखिनी	देवदेवाङ्गवासिनी ॥६४॥
देवदेवाङ्गभूषा च	देवदेवाङ्गभूषणा ।
देवदेवप्रियकरी	देवदेवाप्रियान्तकृत् ॥६५॥
देवदेवप्रियप्राणा	देवदेवप्रियात्मिका ।
देवदेवार्चकप्राणा	देवदेवार्चकप्रिया ॥६६॥

२५०. देवदेवक्रोडरता, २५१. देवदेवसुखप्रदा, २५२. देवदेवमहानन्दा, २५३. देवदेवप्रचुम्बिता ॥६०॥ २५४. देवदेवोपभुक्ता, २५५. देवदेवानुसेविता, २५६. देवदेवगतप्राणा, २५७. देवदेवगतात्मिका, ॥६१॥ २५८. देवदेवहर्षदात्री, २५९. देवदेवसुखप्रदा, २६०. देवदेवमहानन्दा, २६१. देवदेवविलासिनी ॥६२॥ २६२. देवदेवधर्मपत्नी, २६३. देवदेवमनोगता । २६४. देवदेववधू, २६५. देवदेवार्चन-प्रिया ॥६३॥ २६६. देवदेवाङ्गनिलया, २६७. देवदेवाङ्गशायिनी, २६८. देवदेवाङ्गसुखिनी, २६९. देवदेवाङ्गवासिनी, ॥६४॥ २७०. देवदेवाङ्गभूषा, १७१. देवदेवाङ्गभूषणा, २७२. देवदेवप्रियकरी, २७३. देवदेवा-

देवदेवार्चकोत्साहा	देवदेवार्चकप्रिया ।
देवदेवार्चकाविघ्ना	देवदेवप्रसूरपि ॥६७॥
देवदेवस्य जननी	देवदेवविधायिनी ।
देवदेवस्य रमणी	देवदेवहृदाश्रया ॥६८॥
देवदेवेष्टदेवा च	देवतापसपातिनी ।
देवताभावसन्तुष्टा	देवताभावतोषिता ॥६९॥
देवताभाववरदा	देवताभावसिद्धिदा ।
देवताभावसंसिद्धा	देवताभावसम्भवा ॥७०॥
देवताभावसुखिनी-देवताभाव-वन्दिता	।
देवताभावसुप्रीता	देवताभावहर्षदा ॥७१॥
देवताविघ्नहन्त्री च	देवताद्विष्टनाशिनी ।
देवतापूजितपदा	देवताप्रेमतोषिता ॥७२॥

प्रियान्तकृत् ॥६५॥ २७४. देवदेवप्रियप्राणा, २७५. देवदेवप्रियात्मिका, २७६. देवदेवार्चकप्राणा, २७७. देवदेवार्चकप्रिया ॥६६॥ २७८. देवदेवार्चकोत्साहा, २७९. देवदेवार्चकप्रिया, २८०. देवदेवार्चकाविघ्ना, २८१. देवदेवप्रसू, ॥६७॥ २८२. देवदेवस्य जननी, २८३. देवदेवविधायिनी, २८४. देवदेवस्य रमणी, २८५. देवदेवहृदाश्रया, ॥६८॥ २८६. देवदेवेष्टदेवा, २८७. देवतापसपातिनी, २८८. देवताभावसन्तुष्टा, २८९. देवताभावतोषिता ॥६९॥ २९०. देवताभाववरदा, २९१. देवताभावसिद्धिदा, २९२. देवताभावसंसिद्धा, २९३. देवताभावसम्भवा ॥७०॥ २९४. देवताभावसुखिनी, २९५. देवताभाववन्दिता, २९६. देवताभावसुप्रीता, २९७. देवताभावहर्षदा ॥७१॥ २९८. देवताविघ्नहन्त्री, २९९. देवताद्विष्टनाशिनी,

देवतागारनिलया	देवतासौख्यदायिनी ।
देवतानिजभावा च	देवताहृतमानसा ॥७३॥
देवताकृतपादार्चा	देवताहृतभक्तिका ।
देवतागर्वमध्यस्था	देवतादेवतादनुः ॥७४॥
दुंदुर्गायै नमोनाम्नी	दुंफट्मन्त्रस्वरूपिणी ।
दूनमोमन्त्ररूपा च	दूनमोमूर्त्तिकात्मिका ॥७५॥
दूरदर्शिप्रिया	दुष्टादुष्टभूतनिषेविता ।
दूरदर्शिप्रेमरता	दूरदर्शिप्रियंवदा ॥७६॥
दूरदर्शिसिद्धिदात्री	दूरदर्शिप्रतोषिता ।
दूरदर्शिकण्ठसंस्था	दूरदर्शिप्रहर्षिता ॥७७॥
दूरदर्शिंगृहीतार्चा	दूरदर्शिप्रतर्पिता ।
दूरदर्शिप्राणतुल्या	दूरदर्शिसुखप्रदा ॥७८॥

३००. देवतापूजितपदा, ३०१. देवताप्रेमतोषिता ॥ ७२ ॥ ३०२. देवतागारनिलया, ३०३. देवतासौख्यदायिनी, ३०४. देवतानिजभावा, ३०५. देवताहृतमानसा ॥ ७३ ॥ ३०६. देवताकृतपादार्चा, ३०७. देवताहृतभक्तिका, ३०८. देवतागर्वमध्यस्था, ३०९. देवता, ३१०. अदेवता, ३११. दनु ॥ ७४ ॥

३१२. दुंदुर्गायै नमोनाम्नी, ३१३. दुंफट् मन्त्रस्वरूपिणी, ३१४. दूनमोमन्त्ररूपा, ३१५. दूनमोमूर्त्तिकात्मिका ॥ ७५ ॥ ३१६. दूरदर्शिप्रिया, ३१७. दुष्टा, ३१८. दुष्टभूतनिषेविता, ३१९. दूरदर्शिप्रेमरता, ३२०. दूरदर्शिप्रियंवदा ॥ ७६ ॥ ३२१. दूरदर्शिसिद्धिदात्री, ३२२. दूरदर्शिप्रतोषिता, ३२३. दूरदर्शिकण्ठसंस्था, ३२४. दूरदर्शिप्रहर्षिता ॥ ७७ ॥ ३२५. दूरदर्शिंगृहीतार्चा, ३२६. दूरदर्शिप्रतर्पिता, ३२७. दूरदर्शिप्राणतुल्या ३२८. दूरदर्शिसुखप्रदा ॥ ७८ ॥

दूरदर्शिभ्रान्तिहरा	दूरदर्शिहृदास्पदा ।
दूरदर्श्यरिविद्भावा	दीर्घदर्शिप्रमोदिनी ॥७९॥
दीर्घदर्शिप्राणतुल्या	दीर्घदर्शिप्रप्रदा ।
दीर्घदर्शिहर्षदात्री	दीर्घदर्शिप्रहर्षिता ॥८०॥
दीर्घदर्शिमहानन्दा	दीर्घदर्शिगृहालया ।
दीर्घदर्शिगृहीतार्चा	दीर्घदर्शिहृताहंणा ॥८१॥
दया दानवती दात्री	दयालुर्दानवत्सला ।
दयाद्रा च दयाशीला दयाढ्या च दयात्मिका ॥८२॥	
दयाम्बुधिर्दयासारा	दयासागरपारगा ।
दयासिन्धुर्दयाभारा	दयावत्करुणाकरी ॥८३॥
दयावद्-वत्सला देवी दयादानरता सदा ।	
दयावद्भक्तिसुखिनी	दयावत्परितोषिता ॥८४॥

३२९. दूरदर्शिभ्रान्तिहरा, ३३०. दूरदर्शिहृदास्पदा । ३३१. दूरदर्श्यरिविद्भावा, ३३२. दीर्घदर्शिप्रमोदिनी ॥ ७९ ॥ ३३३. दीर्घदर्शिप्राणतुल्या, ३३४. दीर्घदर्शिप्रप्रदा, ३३५. दीर्घदर्शिहर्षदात्री, ३३६. दीर्घदर्शिप्रहर्षिता ॥ ८० ॥ ३३७. दीर्घदर्शिमहानन्दा, ३३८. दीर्घदर्शिगृहालया, ३३९. दीर्घदर्शिगृहीतार्चा, ३४०. दीर्घदर्शिहृताहंणा ॥ ८१ ॥ ३४१. दया, ३४२. दानवती, ३४३. दात्री, ३४४. दयालु, ३४५. दानवत्सला, ३४६. दयाद्रा, ३४७. दयाशीला, ३४८. दयाढ्या, ३४९. दयात्मिका ॥ ८२ ॥ ३५०. दयाम्बुधि, ३५१. दयासारा, ३५२. दयासागरपारगा, ३५३. दयासिन्धु, ३५४. दयाभारा, ३५५. दयावत्करुणाकरी ॥ ८३ ॥ ३५६. दयावद्भक्तिसुखिनी, ३५७. देवी, ३५८. दयादानरता, ३५९. दयावद्भक्तिसुखिनी, ३६०. दयावत्परितोषिता ॥ ८४ ॥

दयावत्स्नेहनिरता दयावत्प्रतिपादिका ।
 दयावत्त्राणकर्त्री च दयावन्मुक्तिदायिनी ॥८५॥
 दयावद्भावसन्तुष्टा दयावत्परितोषिता ।
 दयावत्तारणपरा दयावत् - सिद्धिदायिनी ॥८६॥
 दयावत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्ररूपिणी ।
 दयावद्देहनिलया दयाबन्धु दयाश्रया ॥८७॥
 दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी ।
 दयालुशरणासक्ता दयालुदेहमन्दिरा ॥८८॥
 दयालुभक्तिभावस्था दयालुप्राणरूपिणी ।
 दयालुसुखदादम्भा दयालुप्रेमवर्षिणी ॥८९॥
 दयालुवशगा दीर्घा दीर्घाङ्गी दीर्घलोचना ।
 दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घबाहुलतात्मिका ॥९०॥

तोषिता ॥ ८४ ॥ ३६१. दयावत्स्नेहनिरता, ३६२. दयावत्प्रति-
 पादिका, ३६३. दयावत्त्राणकर्त्री, ३६४. दयावन्मुक्तिदायिनी ॥ ८५ ॥
 ३६५. दयावद्भावसन्तुष्टा, ३६६. दयावत्परितोषिता । ३६७. दया-
 वत्तारणपरा, ३६८. दयावत्सिद्धिदायिनी ॥ ८६ ॥ ३६९. दयावत्पुत्र-
 वद्भावा, ३७०. दयावत्पुत्ररूपिणी ३७१. दयावद्देहनिलया, ३७२.
 दयाबन्धु, ३७३. दयाश्रया ॥ ८७ ॥

३७४. दयालुवात्सल्यकरी ३७५. दयालुसिद्धिदायिनी, ३७६. दया-
 लुशरणासक्ता ३७७. दयालुदेहमन्दिरा ॥ ८८ ॥ ३७८. दयालुभक्ति-
 भावस्था, ३७९. दयालुप्राणरूपिणी ३८०. दयालुसुखदा, ३८१. दम्भा,
 ३८२. दयालुप्रेमवर्षिणी ॥ ८९ ॥ ३८३. दयालुवशगा ३८४. दीर्घा,
 ३८५. दीर्घाङ्गी, ३८६. दीर्घलोचना, ३८७. दीर्घनेत्रा ३८८. दीर्घचक्षुः,

दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दारुणा ।
 दारुणासुरहन्त्री च दारुणासुरदारिणी ॥९१॥
 दारुणाहवकर्त्री च दारुणाहवहर्षिता ।
 दारुणाहवहोमाढ्या दारुणाचलनाशिनी ॥९२॥
 दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता ।
 दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी ॥९३॥
 दारुणक्षेपसंयुक्ता दोश्चतुष्कविराजिता ।
 दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता ॥९४॥
 दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यातविक्रमा ।
 दशरथाचितपदा दशरथिप्रिया सदा ॥९५॥
 दशरथिप्रेमतुष्टा दशरथिरतिप्रिया ।
 दशरथिप्रियकरी दशरथिप्रियंवदा ॥९६॥

३८९. दीर्घबाहुलतात्मिका ॥ ९० ॥ ३९०. दीर्घकेशी, ३९१. दीर्घ-
 मुखी, ३९२. दीर्घघोणा, ३९३. दारुणा, ३९४. दारुणासुरहन्त्री, ३९५.
 दारुणासुरदारिणी ॥ ९१ ॥ ३९६. दारुणाहवकर्त्री, ३९७. दारुणाहव-
 हर्षिता, ३९८. दारुणाहवहोमाढ्या, ३९९. दारुणाचलनाशिनी ॥९२॥

४०. दारुणाचारनिरता, ४०१. दारुणोत्सवहर्षिता ४०२. दारुणो-
 द्यतरूपा, ४०३. दारुणारि निवारिणी, ॥ ९३ ॥ ४०४. दारुणे-
 क्षेपसंयुक्ता, ४०५. दोश्चतुष्कविराजिता, ४०६. दशदोष्का, ४०७.
 दशभुजा, ४०८. दशबाहुविराजिता ॥ ९४ ॥ ४०९. दशास्त्रधारिणी,
 ४१०. देवी ४११. दशदिक्ख्यातविक्रमा, ४१२. दशरथाचितपदा,
 ४१३. दशरथिप्रिया ॥९५॥ ४१४. दशरथिप्रेमतुष्टा, ४१५. दशरथि-
 रतिप्रिया, ४१६. दशरथिप्रियकरी, ४१७. दशरथिप्रियंवदा ॥९६॥

दाशरथीष्टसंदात्री
दाशरथिद्वेषिनाशा
दाशरथिप्रियतमा
दशाननारिसम्पूज्या
दशाननारिप्रमदा
दशाननारितिदा
दशाननारिसुखदा
दशाननारीष्टदेवी
दशग्रीवारिजननी
दशग्रीवारिसहिता
दशग्रीवारिरमणी
दशग्रीवनाशकर्त्री

दाशरथीष्टदेवता ।
दाशरथ्यानुकूल्यदा ॥६७॥
दाशरथिप्रपूजिता ।
दशाननारिदेवता ॥६८॥
दशाननारिजन्मभूः ।
दशाननारिसेविता ॥९९॥
दशाननारिवैरिहृत् ।
दशग्रीवारिवन्दिता ॥१००॥
दशग्रीवारिभाविनी ।
दशग्रीवसभाजिता ॥१०१॥
दशग्रीववधूरपि ।
दशग्रीववरप्रदा ॥१०२॥

४१६. दाशरथीष्टसंदात्री, ४१९. दाशरथीष्टदेवता, ४२०. दाशरथिद्वेषि-
नाशा, ४२१. दाशरथ्यानुकूल्यदा ॥ ९७ ॥ ४२२. दाशरथिप्रियतमा,
४२३. दाशरथिप्रपूजिता, ४२४. दशाननारिसम्पूज्या, ४२५. दशाननारि-
देवता ॥ ९८ ॥ ४२६. दशाननारिप्रमदा, ४२७. दशाननारिजन्मभूः,
४२८. दशाननारितिदा, ४२९. दशाननारिसेविता ॥ ९९ ॥ ४३०.
दशाननारिसुखदा, ४३१. दशाननारिवैरिहृत् ४३२. दशाननारीष्ट-
देवी, ४३३. दशग्रीवारिवन्दिता ॥ १०० ॥

४३४. दशग्रीवारिजननी, ४३५. दशग्रीवारिभाविनी. ४३६. दश-
ग्रीवारिसहिता ४३७. दशग्रीवसभाजिता ॥ १०१ ॥ ४३८. दश-
ग्रीवारिरमणी, ४३९. दशग्रीववधू, ४४०. दशग्रीवनाशकर्त्री, ४४१. दश-

दशग्रीवपुरस्था च
दशग्रीवप्रीतिदात्री
दशग्रीवाहवकरी
दशग्रीवप्रियावन्द्या
दशग्रीवाहितकरी
दशग्रीवेश्वरप्राणा
दशग्रीवेश्वररता
दशवर्षीयबाला च
दशपापहरा दम्या
दशशस्त्रलसद्दोष्का
दशावताररूपा च
दशविद्याभिन्नदेवी

दशग्रीववधोत्सुका ।
दशग्रीवविनाशिनी ॥१०३॥
दशग्रीवानपायिनी ।
दशग्रीवाहता तथा ॥१०४॥
दशग्रीवेश्वरप्रिया ।
दशग्रीववरप्रदा ॥१०५॥
दशवर्षीयकन्यका ।
दशवर्षीयवासिनी ॥१०६॥
दशहस्तविभूषिता ।
दशदिक्पालवन्दिता ॥१०७॥
दशावताररूपिणी ।
दशप्राणस्वरूपिणी ॥१०८॥

ग्रीववरप्रदा ॥१०२॥ ४४२. दशग्रीवपुरस्था ४४३. दशग्रीववधोत्सुका,
४४४. दशग्रीवप्रीतिदात्री. ४४५. दशग्रीवविनाशिनी ॥ १०३ ॥
४४६. दशग्रीवाहवकरी, ४४७. दशग्रीवानपायिनी, ४४८. दशग्रीव-
प्रिया, ४४९. दशग्रीववन्द्या ४५०. दशग्रीवाहता ॥ १०४ ॥ ४५१.
दशग्रीवाहितकरी, ४५२. दशग्रीवेश्वरप्रिया, ४५३. दशग्रीवेश्वर-
प्राणा, ४५४. दशग्रीववरप्रदा ॥ १०५ ॥ ४५५. दशग्रीवेश्वररता,
४५६. दशवर्षीयकन्यका, ४५७. दशवर्षीयबाला, ४५८. दशवर्षीय-
वासिनी ॥ १०६ ॥ ४५९. दशपापहरा, ४६०. दम्या, ४६१. दशहस्तविभू-
षिता, ४६२. दशशस्त्रलसद्दोष्का, ४६३. दशदिक्पालवन्दिता ॥ १०७ ॥
४६४. दशावताररूपा ४६५. दशावताररूपिणी, ४६६. दश-

दशविद्यास्वरूपा च	दशविद्यामयी तथा ।
१३ दृक्स्वरूपा दृक्प्रदात्री	दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी ॥१०९॥
दिगन्तरा दिगन्तस्था	दिगम्बरविलासिनी ।
१४ दिगम्बरसमाजस्था	दिगम्बरप्रपूजिता ॥११०॥
दिगम्बरसहचरी	दिगम्बरकृतास्पदा ।
१५ दिगम्बरहृताचित्ता	दिगम्बरकथाप्रिया ॥१११॥
दिगम्बरगुणरता	दिगम्बरस्वरूपिणी ।
१६ दिगम्बरशिरोधार्या	दिगम्बरहृताश्रया ॥११२॥
दिगम्बरप्रेमरता	दिगम्बररतातुरा ।
१७ दिगम्बरीस्वरूपा च	दिगम्बरीगणार्चिता ॥११३॥
दिगम्बरीगणप्राणा	दिगम्बरीगणप्रिया ।
१८ दिगम्बरीगणाराध्या	दिगम्बरगणेश्वरी ॥११४॥

विद्याभिन्नदेवी, ४६७. दशप्राणस्वरूपिणी ॥ १०८ ॥ ४६८. दश-
विद्यास्वरूपा, ४६९. दशविद्यामयी, ४७०. दृक्स्वरूपा, ४७१. दृक्-
दात्री, ४७२. दृग्रूपा, ४७३. दृक्प्रकाशिनी ॥१०९॥ ४७४. दिगन्तरा,
४७५. दिगन्तस्था, ४७६. दिगम्बरविलासिनी, ४७७. दिगम्बर-
समाजस्था, ४७८. दिगम्बरप्रपूजिता ॥ ११० ॥ ४७९. दिगम्बर-
सहचरी, ४८०. दिगम्बरकृतास्पदा ४८१. दिगम्बरहृता, ४८२.
चित्ता, ४८३. दिगम्बरकथाप्रिया ॥ १११ ॥ ४८४. दिगम्बरगुणरता,
४८५. दिगम्बरस्वरूपिणी, ४८६. दिगम्बरशिरोधार्या, ४८७. दिगम्बर-
हृताश्रया ॥ ११२ ॥ ४८८. दिगम्बरप्रेमरता, ४८९. दिगम्बररतातुरा,
४९०. दिगम्बरीस्वरूपा, ४९१. दिगम्बरीगणार्चिता ॥ ११३ ॥ ४९२.
दिगम्बरीगणप्राणा, ४९३. दिगम्बरीगणप्रिया ४९४. दिगम्बरीगणा-

दिगम्बरगणस्पर्शा	मदिरापान-विह्वला ।
११५ दिगम्बरीकोटिवृता	दिगम्बरीगणावृता ॥११५॥
दुरन्ता दुष्कृतिहरा	दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।
११६ दुरन्तदानवद्वेष्टी	दुरन्तदनुजान्तकृत् ॥११६॥
दुरन्तपापहन्त्री च	दस्रनिस्तारकारिणी ।
११७ दस्रमानससंस्थाना	दस्रज्ञानविवर्द्धिनी ॥११७॥
दस्रसम्भोगजननी	दस्रसम्भोगदायिनी ।
११८ दस्रसम्भोगभवना	दस्रविद्याविधायिनी ॥११८॥
दस्रोद्वेगहरा	दस्रजननी दस्रमुन्दरी ।
११९ दस्रभक्तिविधाज्ञाना	दस्रद्विष्टविनाशिनी ॥११९॥
दस्रापकारदमनी	दस्रसिद्धिविधायिनी ।
१२० दस्रताराराधिता च	दस्रमातुप्रपूजिता ॥१२०॥

राध्या, ४९५. दिगम्बरगणेश्वरी ॥ ११४ ॥ ४९६ दिगम्बरगणस्पर्शा,
४९७. मदिरापानविह्वला, ४९८. दिगम्बरीकोटिवृता, ४९९. दिग-
म्बरीगणावृता ॥११५॥ ५००. दुरन्ता, ५०१. दुष्कृतिहरा, ५०२. दुर्ध्येया,
५०३. दुरतिक्रमा, ५०४. दुरन्तदानवद्वेष्टी, ५०५. दुरन्ता, ५०६. दनु-
जान्तकृत् ॥ ११६ ॥ ५०७. दुरन्तपापहन्त्री, ५०८. दस्रनिस्तार-
कारिणी ५०९. दस्रमानससंस्थाना, ५१०. दस्रज्ञानविवर्द्धिनी ॥११७॥
५११. दस्रसंभोगजननी, ५१२. दस्रसंभोगदायिनी, ५१३. दस्र-
संभोगभवना, ५१४. दस्रविद्या विधायिनी ॥ ११८ ॥ ५१५. दस्रो-
द्वेगहरा, ५१६. दस्रजननी, ५१७. दस्रमुन्दरी, ५१८. दस्रभक्ति-
विधाज्ञाना, ५१९. दस्रद्विष्टविनाशिनी ॥ ११९ ॥ ५२०. दस्राप-
कारदमनी, ५२१. दस्रसिद्धिविधायिनी, ५२२. दस्रताराराधिता,

दस्रदैन्यहरा चैव दस्रतातनिषेविता ।
 दस्रपितृ-शतज्योति-र्दस्रकौशलदायिनी ॥१२१॥
 दशशीर्षारिसहिता दशशीर्षारिकामिनी ।
 दशशीर्षपुरी देवी दशशीर्षसभाजिता ॥१२२॥
 दशशीर्षारिसुप्रीता दशशीर्षवधूप्रिया ।
 दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी ॥१२३॥
 दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्षहरात्मिका ।
 दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षारिवन्दिता ॥१२४॥
 दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी ।
 दशशीर्षज्ञानदात्री दशशीर्षारिदेविता ॥१२५॥
 दशशीर्षवधोपात्त-श्रीरामचन्द्ररूपता ।
 दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारिणी ॥१२६॥

५२३. दस्रमातृप्रपूजिता ॥ १२० ॥ ५२४. दस्रदैन्यहरा, ५२५. दस्र-
 तातनिषेविता, ५२६. दस्रपितृशतज्योति, ५२७. दस्रकौशल-
 दायिनी ॥ १२१ ॥ ५२८. दशशीर्षारिसहिता, ५२९. दशशीर्षारि-
 कामिनी, ५३०. दशशीर्षपुरी देवी, ५३१. दशशीर्षसभाजिता ॥ १२२ ॥

५३२. दशशीर्षारिसुप्रीता, ५३३. दशशीर्षवधूप्रिया, ५३४. दश-
 शीर्षशिरश्छेत्री, ५३५. दशशीर्षनितम्बिनी ॥ १२३ ॥ ५३६. दश-
 शीर्षहरप्राणा, ५३७. दशशीर्षहरात्मिका, ५३८. दशशीर्षहराराध्या,
 ५३९. दशशीर्षारिवन्दिता ॥ १२४ ॥ ५४०. दशशीर्षारिसुखदा, ५४१.
 दशशीर्षकपालिनी, ५४२. दशशीर्षज्ञानदात्री ५४३. दशशीर्षारि-
 देवता । १२५ ॥ ५४४. दशशीर्षवधोपात्त-श्रीरामचन्द्ररूपता,
 ५४५. दशशीर्षराष्ट्रदेवी, ५४६. दशशीर्षारिसारिणी ॥ १२६ ॥

दशशीर्षभ्रातृतुष्टा दशशीर्षवधूप्रिया ।
 दशशीर्षवधूप्राणा दशशीर्षवधूरता ॥१२७॥
 दैत्यगुरुरतासाध्वी दैत्यगुरुप्रपूजिता ।
 दैत्यगुरुरूपदेष्ट्री च दैत्यगुरुनिषेविता ॥१२८॥
 दैत्यगुरुगुणतप्राणा दैत्यगुर्तापनाशिनी ।
 दुरन्तदुःखशमनी दुरन्तदमनीतमी ॥१२९॥
 दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिनी ।
 दुरन्तवैरिदमनी दुरन्तदैत्यनाशिनी ॥१३०॥
 दुरन्तकलुषघ्नी च दुःकृतिस्तोमनाशिनी ।
 दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी ॥१३१॥
 दर्शनीया च दृश्या च दृश्या च दृष्टिगोचरा ।
 द्वतीयागप्रिया द्वती द्वतीयागकरप्रिया ॥१३२॥

५४७. दशशीर्षभ्रातृतुष्टा ५४८. दशशीर्षवधूप्रिया, ५४९. दशशीर्षवधू-
 प्राणा, ५५०. दशशीर्षवधूरता ॥ १२७ ॥

५५१. दैत्यगुरुरतासाध्वी, ५५२. दैत्यगुरुप्रपूजिता, ५५३. दैत्य-
 गुरुरूपदेष्ट्री, ५५४. दैत्यगुरुनिषेविता ॥ १२८ ॥ ५५५. दैत्यगुरुगुण-
 तप्राणा, ५५६. दैत्यगुर्तापनाशिनी, ५५७. दुरन्तदुःखशमनी, ५५८.
 दुरन्तदमनी, ५५९. तमी ॥ १२९ ॥ ५६०. दुरन्तशोकशमनी, ५६१.
 दुरन्तरोगनाशिनी । ५६२. दुरन्तवैरिदमनी, ५६३. दुरन्तदैत्य-
 नाशिनी ॥ १३० ॥

५६४. दुरन्तकलुषघ्नी, ५६५. दुःकृतिस्तोमनाशिनी, ५६६. दुरा-
 शया, ५६७. दुराधारा, ५६८. दुर्जया, ५६९. दुष्टकामिनी ॥ १३१ ॥
 ५७०. दर्शनीया, ५७१. दृश्या, ५७२. दृष्टिगोचरा, ५७३. द्वतीयाग-

दूतीयागकरानन्दा दूतीयागसुखप्रदा ।
 दूतीयागकरायाता दूतीयागप्रमोदिनी ॥१३३॥
 दुर्वासः पूजिता चैव दुर्वासोमुनिभाविता ।
 दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमुनिभाविता ॥१३४॥
 दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता ।
 दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनिसिद्धिदा ॥१३५॥
 दुर्वासोमुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता ।
 दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता ॥१३६॥
 दुर्वासोमुनिसञ्चारा दुर्वासोहृदयङ्गमा ।
 दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा ॥१३७॥
 दुर्वासस्तापसाराध्या दुर्वासस्तापसाश्रया ।
 दुर्वासस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी ॥१३८॥

प्रिया, ५७४. दूती, ५७५. दूतीयागकरप्रिया, ॥१३२॥ ५७६. दूती-
 यागकरानन्दा, ५७७. दूतीयागसुखप्रदा, ५७८. दूतीयागकरायाता,
 ५७९. दूतीयागप्रमोदिनी ॥१३३॥ ५८०. दुर्वासपूजिता, ५८१.
 दुर्वासोमुनिभाविता ५८२. दुर्वासोऽर्चितपादा, ५८३. दुर्वासोमुनि-
 भाविता ॥१३४॥ ५८४. दुर्वासोमुनिवन्द्या, ५८५. दुर्वासोमुनिदेवता,
 ५८६. दुर्वासोमुनिमाता, ५८७. दुर्वासोमुनिसिद्धिदा ॥१३५॥

५८८. दुर्वासोमुनिभावस्था, ५८९. दुर्वासोमुनिसेविता, ५९०. दुर्वा-
 सोमुनिचित्तस्था, ५९१. दुर्वासोमुनिमण्डिता, ॥१३६॥ ५९२. दुर्वासो-
 मुनिसञ्चारा, ५९३. दुर्वासोहृदयङ्गमा, ५९४. दुर्वासोहृदयाराध्या,
 ५९५. दुर्वासोहृत्सरोजगा ॥१३७॥ ५९६. दुर्वासस्तापसाराध्या,
 ५९७. दुर्वासस्तापसाश्रया, ५९८. दुर्वासस्तापसरता, ५९९. दुर्वासस्ताप-

दुर्वासोमुनिकन्या च दुर्वासोद्भूतसिद्धिदा ।
 दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा ॥१३९॥
 दरघ्नी दरहन्त्री च दरयुक्ता दराश्रया ॥१४०॥
 दरस्मेरा दरापाङ्गी दयादात्री दयाश्रमा ।
 दसपूज्या दसमाता दसदेवीदरोन्मदा ॥१४१॥
 दससिद्धा दससंस्था दसतापविमोचिनी ।
 दसक्षोभहरा नित्या दसलोकगतात्मिका ॥१४२॥
 दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या दैत्यगुर्वङ्गनाप्रिया ।
 दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धा दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुका ॥१४३॥
 दैत्यगुरुप्रियतमा दैत्यगुरुनिषेविता ।
 देवगुरुप्रसूपा देवगुरुकृतार्हणा ॥१४४॥

शेखरी ॥१३८॥ ६००. दुर्वासोमुनिकन्या, ६०१. दुर्वासोद्भूतसिद्धिदा,
 ६०२. दररात्री, ६०३. दरहरा, ६०४. दरयुक्ता, ६०५.
 ६०६. दरापहा ॥१३९॥ ६०७. दरघ्नी, ६०८. दरहन्त्री, ६०९.
 दरयुक्ता, ६१०. दराश्रया, ॥१४०॥ ६११. दरस्मेरा, ६१२. दरापाङ्गी,
 ६१३. दयादात्री, ६१४. दयाश्रमा, ६१५. दसपूज्या, ६१६. दसमाता,
 ६१७. दसदेवीदरोन्मदा, ॥१४१॥ ६१८. दससिद्धा, ६१९. दस-
 संस्था, ६२०. दसतापविमोचिनी, ६२१. दसक्षोभहरा, नित्या,
 ६२२. दसलोकगतात्मिका ॥१४२॥

६२३. दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या, ६२४. दैत्यगुर्वङ्गनाप्रिया, ६२५. दैत्य-
 गुर्वङ्गनासिद्धा, ६२६. दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुका ॥१४३॥ ६२७. दैत्यगुरुप्रिय-
 तमा, ६२८. दैत्यगुरुनिषेविता, ६२९. देवगुरुप्रसूपा, ६३०. देव-

देवगुरुप्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता ।
 देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा ॥१४५॥
 देवगुरुज्ञानदात्री देवगुरुप्रमोदिनी ।
 दैत्यस्त्रीगणसम्पूज्या दैत्यस्त्रीगणपूजिता ॥१४६॥
 दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी ।
 देवस्त्रीगणपूज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता ॥१४७॥
 देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता ।
 देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता ॥१४८॥
 देवस्त्रीगणहस्तस्थ-चारुचामर-वीजिता ।
 देवस्त्रीगणहस्तस्थ-चारुगन्ध-विलेपिता ॥१४९॥
 देवाङ्गनाधृतादर्श-दृष्ट्यर्थमुख-चन्द्रमा ।
 देवाङ्गनोत्सृष्टनाग-वल्लीदल-कृतोत्सुका ॥१५०॥

गुरुकृताहंणा ॥१४४॥ ६३१. देवगुरुप्रेमयुता, ६३२. देवगुर्वनुमानिता,
 ६३३. देवगुरुप्रभावज्ञा, ६३४. देवगुरुसुखप्रदा, ॥१४५॥ ६३५. देवगुरु-
 ज्ञानदात्री, ६३६. देवगुरुप्रमोदिनी, ६३७. दैत्यस्त्रीगणसंपूज्या, ६३८.
 दैत्यस्त्रीगणपूजिता ॥१४६॥ ६३९. दैत्यस्त्रीगणरूपा, ६४०. दैत्यस्त्री-
 चित्तहारिणी ४४१. देवस्त्रीगणपूज्या, ४४२. देवस्त्रीगणवन्दिता ॥१४७॥
 ४४३. देवस्त्रीगणचित्तस्था, ४४४. देवस्त्रीगणभूषिता, ४४५. देव-
 स्त्रीगणसंसिद्धा, ४४६. देवस्त्रीगणतोषिता ॥१४८॥ ४४७. देवस्त्रीगण-
 हस्तस्थचारुचामरवीजिता, ४४८. देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्ध-
 विलेपिता ॥१४९॥ ४४९. देवाङ्गनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमा,
 ४५०. देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका ॥१५०॥

देवस्त्रीगणहस्तस्थ-दीपमाला-विलोकना ।
 देवस्त्रीगणहस्तस्थ-धूपघ्राण-विनोदिनी ॥१५१॥
 देवनारीकरगत-वासकासवपायिनी ।
 देवनारीकङ्कतिका-कृत्तकेश-निमार्जना ॥१५२॥
 देवनारीरुष्ट्यगात्रा देवनारीकृतोत्सुका ।
 देवनारीविरचिता-पुष्पमाला-विराजिता ॥१५३॥
 देवनारीविचित्राङ्गी देवस्त्रीदत्तभोजना ।
 देवस्त्रीगणगीता च देवस्त्रीगीतसोत्सुका ॥१५४॥
 देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यप्रदर्शिनी ।
 देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादुपदाम्बुजा ॥१५५॥
 देवस्त्रीगणविस्तीर्ण-चारुतल्प-निषेदुषी ।
 देवनारीचारुकरा-कलिताङ्घ्र्यादिदेहिका ॥१५६॥

६५१. देवस्त्रीगणहस्तस्थ-दीपमालाविलोकना, ६५२. देवस्त्री-
 गणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी ॥१५१॥ ६५३. देवनारीकरगतवासका-
 सवपायिनी, ६५४. देवनारीकङ्कतिका-कृत्तकेशनिमार्जना ॥१५२॥
 ६५५. देवनारीरुष्ट्यगात्रा, ६५६. देवनारीकृतोत्सुका ६५७. देव-
 नारीविरचितापुष्पमालाविराजिता ॥१५३॥ ६५८. देवनारी-
 विचित्राङ्गी, ६५९. देवस्त्रीदत्तभोजना, ६६०. देवस्त्रीगणगीता, ६६१.
 देवस्त्रीगीतसोत्सुका ॥१५४॥ ६६२. देवस्त्रीनृत्यसुखिनी ६६३. देव-
 स्त्रीनृत्यप्रदर्शिनी, ६६४. देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादुपदाम्बुजा ॥१५५॥
 ६६५. देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्पनिषेदुषी, ६६६. देवनारीचारु-
 दु. त०—६

देवनारीकरव्यग्र-तालवृन्त-मरुत्सुखा	।
देवनारीवेणुवीणा-नादसोत्कण्ठमानसा	॥१५७॥
देवकोटिस्तुतिनुता	देवकोटिकृतार्हणा ।
देवकोटिगीतगुणा	देवकोटिकृतस्तुतिः ॥१५८॥
दन्तदष्टचोद्वेगफला	देवकोलाहलाकुला ।
द्वेषरागपरित्यक्ता	द्वेषरागविवर्जिता ॥१५९॥
दामपूज्या	दामभूषा दामोदरविलासिनी ।
दामोदरप्रेमरता	दामोदरभगिन्यपि ॥१६०॥
दामोदर-प्रसूदामोदरपत्नी-पतिव्रता	।
दामोदराभिन्नदेहा	दामोदररतिप्रिया ॥१६१॥
दामोदराभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा	।
दामोदरकृतप्राणा	दामोदरगतात्मिका ॥१६२॥

करा-कलिताङ्घ्र्यादिदेहिका ॥ १५६ ॥ ६६७. देवनारीकरव्यग्रताल-
वृन्तमरुत्सुखा, ६६८. देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा ॥ १५७ ॥
६६९. देवकोटिस्तुतिनुता, ६७०. देवकोटिकृतार्हणा, ६७१. देवकोटि-
गीतगुणा, ६७२. देवकोटिकृतस्तुति ॥ १५८ ॥ ६७३. दन्तदष्टचोद्वेग-
फला, ६७४. देवकोलाहलाकुला, ६७५. द्वेषरागपरित्यक्ता, ६७६. द्वेष-
रागविवर्जिता ॥१५९॥ ६७७. दामपूज्या, ६७८. दामभूषा, ६७९. दामो-
दरविलासिनी ६८०. दामोदरप्रेमरता, ६८१. दामोदरभगिनी ॥१६०॥
६८२. दामोदरप्रसू, ६८३. दामोदरपत्नी, ६८४. दामोदर-
पतिव्रता, ६८५. दामोदराभिन्नदेहा, ६८६. दामोदररतिप्रिया
॥ १६१ ॥ ६८७. दामोदराभिन्नतनु, ६८८. दामोदरकृता-
स्पदा, ६८९. दामोदरकृतप्राणा, ६९०. दामोदरगतात्मिका ॥ १६२ ॥

दामोदरकौतुकाढ्या	दामोदरकलाकला ।
दामोदरालिङ्गिताङ्गी	दामोदरकुतूहला ॥१६३॥
दामोदरकृताह्लादा	दामोदरसुचुम्बिता ।
दामोदरसुताकृष्टा	दामोदरसुखप्रदा ॥१६४॥
दामोदरसहाढ्या	च दामोदरसहायिनी ।
दामोदरगुणज्ञा	च दामोदरवरप्रदा ॥१६५॥
दामोदरानुकूला	च दामोदरनितम्बिनी ।
दामोदरजलक्रीडा-कुशलादर्शनप्रिया	॥१६६॥
दामोदरबलक्रीडा-त्यक्तस्वजनसौहृदा	।
दामोदरलसद्रास-केलिकौतुकिनी	तथा ॥१६७॥
दामोदरभ्रातृका	च दामोदरपरायणा ।
दामोदरधरा	दामोदरवैरि-विनाशिनी ॥१६८॥
दामोदरोपजाया	च दामोदरनिमन्त्रिता ।
दामोदरपराभूता	दामोदरपराजिता ॥१६९॥

१६१. दामोदरकौतुकाढ्या, ६९२. दामोदरकलाकला, ६९३. दामोदरा-
लिङ्गिताङ्गी, ६९४. दामोदरकुतूहला ॥ १६३ ॥ ६९५. दामोदरकृता
ह्लादा, ६९६. दामोदरसुचुम्बिता, ६९७. दामोदरसुता ६९८.
दामोदरसुखप्रदा ॥ १६४ ॥ ६९९. दामोदरसहाढ्या, ७००. दामोदर-
सहायिनी, ७०१. दामोदरगुणज्ञा, ७०२. दामोदरवरप्रदा ॥१६५॥ ७०३.
दामोदरानुकूला, ७०४. दामोदरनितम्बिनी, ७०५. दामोदरजलक्रीडा-
कुशला, ७०६. दामोदरदर्शनप्रिया ॥ १६६ ॥ ७०७. दामोदरबलक्रीडा-
त्यक्तस्वजनसौहृदा, ७०८. दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिनी ॥ १६७ ॥
७०९. दामोदरभ्रातृका, ७१०. दामोदरपरायणा, ७११. दामोदर-

दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा ।
 दामोदरोत्सवरता दामोदरोत्सवावहा ॥१७०॥
 दामोदरस्तन्यदात्री दामोदरगवेषिता ।
 दमयन्ती-सिद्धिदात्री दमयन्तीप्रसाधिता ॥१७१॥
 दमयन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्वरूपिणी ।
 दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिविभाविता ॥१७२॥
 दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी ।
 दमनर्षिस्वरूपा च दम्भपूरितविग्रहा ॥१७३॥
 दम्भहन्त्री दम्भदात्री दम्भलोकविमोहिनी ।
 दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमदिनी ॥१७४॥
 दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसन्तानदारिणी ।
 दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तरोग्याथ दाम्भिका ॥१७५॥

घरा, ७१२. दामोदरवैरिनाशिनी ॥ १६८ ॥ ७१३. दामोदरोपजाया,
 ७१४. दामोदरनिमन्त्रिता, ७१५. दामोदरपराभूता, ७१६. दामोदर-
 पराजिता ॥ १६९ ॥ ७१७. दामोदरसमाक्रान्ता, ७१८. दामोदर-
 हताशुभा, ७१९. दामोदरोत्सवरता, ७२०. दामोदरोत्सवावहा ॥१७०॥
 ७२१. दामोदरस्तन्यदात्री, ७२२. दामोदरगवेषिता, ७२३. दमयन्ती-
 सिद्धिदात्री, ७२४. दमयन्तीप्रसाधिता, ॥ १७१ ॥ ७२५. दमयन्तीष्ट-
 देवी, ७२६. दमयन्तीस्वरूपिणी, ७२७. दमयन्तीकृतार्चा, ७२८.
 दमनर्षिविभाविता ॥ १७२ ॥

७२९. दमनर्षिप्राणतुल्या, ७३०. दमनर्षिस्वरूपिणी, ७३१.
 दमनर्षिस्वरूपा, ७३२. दम्भपूरितविग्रहा, ॥१७३॥ ७३३. दम्भहन्त्री,
 ७३४. दम्भदात्री, ७३५. दम्भलोकविमोहिनी, ७३६. दम्भशीला,
 ७३७. दम्भहरा, ७३८. दम्भवत्परिमदिनी ॥ १७४ ॥ ७३९. दम्भ-

दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्तहारा च दारिका ।
 दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना ॥१७६॥
 दत्तमतिदत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका ।
 दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्र्यनाशिनी ॥१७७॥
 दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गा च दासदा ।
 दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा ॥१७८॥
 दाररूपा दारवासा दास्वासिहृदास्पदा ।
 दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया ॥१७९॥
 दारवासि-विनिर्नीता दारवासिसमर्चिता ।
 दारवास्याहृतप्राणा दारवास्यरिनाशिनी ॥१८०॥
 दारवासिविघ्नहरा दारवासिविमुक्तिदा ।
 दाराग्निरूपिणी दारा दारकार्यरिनाशिनी ॥१८१॥

रूपा, ७४०. दम्भकरी, ७४१. दम्भसन्तानदारिणी, ७४२. दत्तमोक्षा,
 ७४३. दत्तधना, ७४४. दत्तरोग्या, ७४५. दाम्भिका, ॥ १७५ ॥ ७४६-
 दत्तपुत्रा, ७४७. दत्तदारा, ७४८. दत्तहारा, ७४९. दारिका, ७५०.
 दत्तभोगा, ७५१. दत्तशोका, ७५२. दत्तहस्त्यादिवाहना ॥१७६॥ ७५३.
 दत्तमति, ७५४. दत्तभार्या, ७५५. दत्तशास्त्रावबोधिका, ७५६. दत्तपाना,
 ७५७. दत्तदाना, ७५८. दत्तदारिद्र्यनाशिनी, ॥ १७७ ॥ ७५९. दत्त-
 सौधावनीवासा, ७६०. दत्तस्वर्गा, ७६१. दासदा, ७६२. दास्यतुष्टा,
 ७६३. दास्यहरा, ७६४. दासदासीशतप्रदा ॥१७८॥ ७६५. दाररूपा,
 ७६६. दारवासा, ७६७. दास्वासिहृदास्पदा, ७६८. दारवासिजनाराध्या,
 ७६९. दारवासिजनप्रिया, ॥ १७९ ॥ ७७०. दारवासिविनिर्नीता,
 ७७१. दारवासिसमर्चिता, ७७२. दारवास्याहृतप्राणा, ७७३. दार-
 वास्यरिनाशिनी, ॥१८०॥ ७७४. दारवासिविघ्नहरा, ७७५. दारवासि-

दम्पती दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणरूपिका ।
 दम्पतिस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनप्रिया ॥१८२॥
 दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी ।
 दम्पत्याचारनिरता दम्पत्यामोदमोदिता ॥१८३॥
 दम्पत्यामोदमुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी ।
 दम्पतीष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी ॥१८४॥
 दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी ।
 दाडिमीफलसन्तुष्टा दाडिमीफलमानसा ॥१८५॥
 दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी ।
 दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी ॥१८६॥
 दाडिमीफलसाम्योरूपयोधरविवर्जिता ।
 दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी ॥१८७॥

विमुक्तिदा, ७७६. दाराग्निरूपिणी, ७७७. दारा, ७७८. दारकार्यरि-
 नाशिनी ॥ १८१ ॥

७७९. दम्पती, ७८०. दम्पतीष्टा, ७८१. दम्पतीप्राणरूपिका,
 ७८२. दम्पतीस्नेहनिरता, ७८३. दाम्पत्यसाधनप्रिया, ॥ १८२ ॥
 ७८४. दाम्पत्यसुखसेना, ७८५. दाम्पत्यसुखदायिनी, ७८६. दाम्पत्या-
 चारनिरता, ७८७. दम्पत्यामोदमोदिता, ॥ १८३ ॥ ७८८. दम्पत्यामोद-
 मुखिनी, ७८९. दाम्पत्याह्लादकारिणी, ७९०. दम्पतीष्टपादपद्मा,
 ७९१. दाम्पत्यप्रेमरूपिणी, ॥ १८४ ॥ ७९२. दाम्पत्यभोगभवना, ७९३.
 दाडिमीफलभोजिनी, ७९४. दाडिमीफलसन्तुष्टा, ७९५. दाडिमीफल-
 मानसा ॥ १८५ ॥ ७९६. दाडिमीवृक्षसंस्थाना, ७९७. दाडिमीवृक्ष-
 वासिनी, ७९८. दाडिमीवृक्षरूपा, ७९९. दाडिमीवनवासिनी ॥ १८६ ॥

८००. दाडिमीफलसाम्योरूपयोधरविवर्जिता ८०१. दक्षिणा, ८०२.

दक्षकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः ।
 दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ८८ ॥
 दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी ।
 दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी ॥ ८९ ॥
 दक्षात्मजा दक्षसूनुर्दक्षजा दक्षजातिका ।
 दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा ॥ ९० ॥
 दक्षजनिर्दक्षयाग-ध्वंसिनी दक्षकन्यका ।
 दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा ॥ ९१ ॥
 दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता ।
 दक्षिणाचारमुखिनी दक्षिणाचारसाधिता ॥ ९२ ॥
 दक्षिणाचारमोक्षाप्ति-र्दक्षिणाचार-वन्दिता ।
 दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता ॥ ९३ ॥

दक्षिणारूपा, ८०३. दक्षिणारूपधारिणी, ॥ १८७ ॥ ८०४. दक्षकन्या,
 ८०५. दक्षपुत्री, ८०६. दक्षमाता, ८०७. दक्षसू, ८०८. दक्षगोत्रा, ८०९.
 दक्षसुता, ८१०. दक्षयज्ञविनाशिनी, ॥ १८८ ॥ ८११. दक्षयज्ञनाशकर्त्री,
 ८१२. दक्षयज्ञान्तकारिणी, ८१३. दक्षप्रसूति, ८१४. दक्षेज्या, ८१५. दक्ष-
 वंशैकपावनी, ॥ १८९ ॥ ८१६. दक्षात्मजा, ८१७. दक्षसूनु ८१८.
 दक्षजा, ८१९. दक्षजातिका, ८२०. दक्षजन्मा, ८२१. दक्षजनु, ८२२.
 दक्षदेहसमुद्भवा, ॥ १९० ॥ ८२३. दक्षजनि, ८२४. दक्षयागविध्वंसिनी,
 ८२५. दक्षकन्यका, ८२६. दक्षिणाचारनिरता, ८२७. दक्षिणाचार-
 तुष्टिदा, ॥ १९१ ॥ ८२८. दक्षिणाचारसंसिद्धा, ८२९. दक्षिणाचार-
 भाविता, ८३०. दक्षिणाचारमुखिनी, ८३१. दक्षिणाचारसाधिता ॥ १९२ ॥
 ८३२. दक्षिणाचारमोक्षाप्ति, ८३३. दक्षिणाचारवन्दिता, ८३४.
 दक्षिणाचारशरणा, ८३५. दक्षिणाचारहर्षिता ॥ १९३ ॥

द्वारपालप्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता ।
 द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी ॥१९४॥
 द्वारकारी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता ।
 दोषकरा दोषहरा दोषराशिविनाशिनी ॥१९५॥
 दोषाकर-विभूषाढ्या दोषाकरकपालिनी ।
 दोषाकरसहस्राभा दोषाकरसमानना ॥१९६॥
 दोषाकरमुखीदिव्या दोषाकरकराग्रजा ।
 दोषाकरसमज्योति-दोषाकरसुशीतला ॥१९७॥
 दोषाकरश्रेणि दोषसदृशापाङ्गवीक्षणा ।
 दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता ॥१९८॥
 दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका ।
 दोषाकरोल्लसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी ॥१९९॥

८३६. द्वारपालप्रिया, ८३७. द्वारवासिनी, ८३८. द्वारसंस्थिता,
 ८३९. द्वाररूपा, ८४०. द्वारसंस्था, ८४१. द्वारदेशनिवासिनी ॥१९४॥
 ८४२. द्वारकारी, ८४३. द्वारधात्री, ८४४. दोषमात्रविवर्जिता, ८४५.
 दोषकरा, ८४६. दोषहरा, ८४७. दोषराशिविनाशिनी, ॥१९५॥
 ८४८. दोषाकरविभूषाढ्या, ८४९. दोषाकरकपालिनी, ८५०. दोषाकर-
 सहस्राभा, ८५१. दोषाकरसमानना ॥१९६॥ ८५२. दोषाकरमुखी,
 ८५३. दिव्या, ८५४. दोषाकरकराग्रजा, ८५५. दोषाकरसमज्योति,
 ८५६. दोषाकरसुशीतला ॥१९७॥ ८५७. दोषाकरश्रेणि, ८५८.
 दोषसदृशापाङ्गवीक्षणा, ८५९. दोषाकरेष्टदेवी, ८६०. दोषाकर-
 निषेविता ॥१९८॥ ८६१. दोषाकरप्राणरूपा, ८६२. दोषाकरमरीचिका,
 ८६३. दोषाकरोल्लसद्भाला, ८६४. दोषाकरसुहर्षिणी, ॥१९९॥

दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया ।
 दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूर्मता ॥२००॥
 दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरपि ।
 दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी ॥२०१॥
 दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा ।
 दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी ॥२०२॥
 दोषापूजक-वात्सल्यकारिणी जगदम्बिका ।
 दोषापूजकवैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत् ॥२०३॥
 दोषापूजकसन्तुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा ।
 दमप्रसूनसम्पूज्या दमपुष्पप्रिया सदा ॥२०४॥
 दुर्योधनपूज्या च दुःशासनसमर्चिता ।
 दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधिः ॥२०५॥

८६५. दोषाकरशिरोभूषा, ८६६. दोषाकरवधूप्रिया, ८६७. दोषाकर-
 वधूप्राणा, ८६८. दोषाकरवधू, ॥२००॥ ८६९. दोषाकरवधूप्रीता,
 ८७०. दोषाकरवधू, ८७१. दोषापूज्या, ८७२. दोषापूजिता, ८७३.
 दोषहारिणी, ॥२०१॥ ८७४. दोषाजापमहानन्दा, ८७५. दोषाजाप-
 परायणा, ८७६. दोषापुरश्चाररता, ८७७. दोषापूजकपुत्रिणी, ॥२०२॥
 ८७८. दोषापूजकवात्सल्यकारिणी, ८७९. जगदम्बिका, ८८०. दोषा-
 पूजकवैरिघ्नी, ८८१. दोषापूजकविघ्नहृत्, ॥२०३॥ ८८२. दोषा-
 पूजकसन्तुष्टा, ८८३. दोषापूजकमुक्तिदा, ८८४. दमप्रसूनसम्पूज्या,
 ८८५. दमपुष्पप्रिया, ॥२०४॥ ८८६. दुर्योधनपूज्या, ८८७. दुःशा-
 सनसमर्चिता, ८८८. दण्डपाणिप्रिया, ८८९. दण्डपाणिमाता, ८९०.

दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता ।
 दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा ॥२०६॥
 दण्डपाणिप्रियमता दण्डपाणिमनोहरा ।
 दण्डपाणिहृतप्राणा दण्डपाणिसुसिद्धिदा ॥२०७॥
 दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता ।
 दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता ॥२०८॥
 दण्डपाणिप्राप्तचर्चा दण्डपाण्युन्मुखी सदा ।
 दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखी ॥२०९॥
 दण्डहस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत् ।
 दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा ॥२१०॥
 दण्डविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी ।
 दण्डिप्रिया दण्डिपूज्या दण्डिसन्तोषदायिनी ॥२११॥

दयानिधि, ॥ २०५ ॥ ८९१. दण्डपाणिसमाराध्या ८९२. दण्डपाणि
 प्रपूजिता, ८९३. दण्डपाणिगृहासक्ता, ८९४. दण्डपाणिप्रियंवदा ॥२०६॥
 ८९५. दण्डपाणिप्रियमता, ८९६. दण्डपाणिमनोहरा, ८९७.
 दण्डपाणिहृतप्राणा, ८९८. दण्डपाणिसुसिद्धिदा ॥ २०७ ॥ ८९९.
 दण्डपाणिपरामृष्टा, ९००. दण्डपाणिप्रहर्षिता, ९०१. दण्डपाणि-
 विघ्नहरा, ९०२. दण्डपाणिशिरोधृता ॥ २०८ ॥ ९०३. दण्डपाणि-
 प्राप्तचर्चा, ९०४. दण्डपाण्युन्मुखी, ९०५. दण्डपाणिप्राप्तपदा, ९०६.
 दण्डपाणिवरोन्मुखी ॥२०९॥ ९०७. दण्डहस्ता, ९०८. दण्डपाणि, ९०९.
 दण्डबाहु, ९१०. दरान्तकृत्, ९११. दण्डदोष्का, ९१२. दण्डकरा,
 ९१३. दण्डचित्तकृतास्पदा, ॥ २१० ॥ ९१४. दण्डविद्या, ९१५.
 दण्डिमाता, ९१६. दण्डिखण्डकनाशिनी, ९१७. दण्डिप्रिया, ९१८.

दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी ॥
 दस्युवर्गकृताहर्हा च दस्युवर्गविनाशिनी ॥२१२॥
 दस्युनिर्नाशिनी दस्युकुलनिर्नाशिनी तथा ।
 दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा ॥२१३॥
 दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा ।
 दुष्टवर्गनिग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी ॥२१४॥
 दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी ।
 दूषकद्वेषनकरी दाहिका दहनात्मिका ॥२१५॥
 दारकारीनिहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता ।
 दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता ॥२१६॥
 दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता ।
 दर्भमयी दर्भतनुदर्भसर्वस्वरूपिणी ॥२१७॥

दण्डिपूज्या, ९१९. दण्डिसन्तोषदायिनी, ॥ २११ ॥ ९२०. दस्युपूज्या,
 ९२१. दस्युरता, ९२२. दस्युद्रविणदायिनी, ९२३. दस्युवर्गकृताहर्हा,
 ९२४. दस्युवर्गविनाशिनी, ॥ २१२ ॥ ९२५. दस्युनिर्नाशिनी,
 ९२६. दस्युकुलनिर्नाशिनी, ९२७. दस्युप्रियकरी, ९२८. दस्युनृत्य-
 दर्शनतत्परा ॥ २३ ॥ ९२९. दुष्टदण्डकरी, ९३०. दुष्टवर्ग-
 विद्राविणी ९३१. दुष्टवर्गनिग्रहार्हा, ९३२. दूषकप्राणनाशिनी ॥२१४॥
 ९३३. दूषकोत्तापजननी, ९३४. दूषकारिष्टकारिणी, ९३५. दूषक-
 द्वेषनकरी, ९३६. दाहिका, ९३७. दहनात्मिका ॥ २१५ ॥ ९३८. दारु-
 कारिनिहन्त्री, ९३९. दारुकेश्वरपूजिता, ९४०. दारुकेश्वरमाता,
 ९४१. दारुकेश्वरवन्दिता ॥ २१६ ॥ ९४२. दर्भहस्ता, ९४३. दर्भयुता,
 ९४४. दर्भकर्मविवर्जिता, ९४५. दर्भमयी, ९४६. दर्भतनु, ९४७. दर्भ-

दर्भकर्मचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा ।
 दर्भानुकूला दर्भर्या दर्वीपात्रानुदामिनी ॥२१८॥
 दमघोषप्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा ।
 दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी तथा ॥११९॥
 दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्नाशितमहाबला ।
 दन्तदंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका ॥२२०॥
 दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तनिर्नाशितासुरा ।
 दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी ॥२२१॥
 दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी ।
 दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी ॥२२२॥
 दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता ।
 दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी ॥२२३॥

सर्वस्वरूपिणी, ॥ २१७ ॥ १४८. दर्भकर्मचाररता, १४९. दर्भहस्त-
 कृतार्हणा । १५०. दर्भानुकूला, १५१. दर्भर्या, १५२. दर्वीपात्रानु-
 दामिनी ॥ २१८ ॥ १५३. दमघोषप्रपूज्या, १५४. दमघोषवरप्रदा,
 १५५. दमघोषसमाराध्या, १५६. दावाग्निरूपिणी ॥ २१९ ॥ १५७.
 दावाग्निरूपा, १५८. दावाग्निनिर्नाशितमहाबला, १५९. दन्तदंष्ट्रा-
 सुरकला, १६०. दन्तचर्चितहस्तिका ॥ २२० ॥ १६१. दन्तदंष्ट्र-
 स्यन्दना, १६२. दन्तनिर्नाशितासुरा, १६३. दधिपूज्या, १६४. दधि-
 प्रीता, १६५. दधीचिवरदायिनी ॥ २२१ ॥ १६६. दधीचीष्टदेवता,
 १६७. दधीचिमोक्षदायिनी, १६८. दधीचिदैन्यहन्त्री, १६९. दधीचिदर-
 दारिणी ॥ २२२ ॥ १७०. दधीचिभक्तिसुखिनी, १७१. दधीचिमुनि-
 सेविता, १७२. दधीचिज्ञानदात्री, १७३. दधीचिगुणदायिनी ॥ २२३ ॥

दधीचिकुलसम्भूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा ।
 दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता ॥२२४॥
 दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता ।
 दधीचिसुखदात्री च दधीचिदीनहारिणी ॥२२५॥
 दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी ।
 दधीचिकुलसम्भूता दधीचिकुलपालिनी ॥२२६॥
 दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी ।
 दधीचिदानसन्तुष्टा दधीचिदानदेवता ॥२२७॥
 दधीचिजयसम्प्रीता दधीचिजपमानसा ।
 दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका ॥२२८॥
 दधीचिजपसन्तुष्टा दधीचिजपतोषिणी ।
 दधीचितपसाराध्या दधीचिशुभदायिनी ॥२२९॥

१७४. दधीचिकुलसंभूषा, १७५. दधीचिभुक्तिमुक्तिदा, १७६. दधीचि-
 कुलदेवी, १७७. दधीचिकुलदेवता ॥ २२४ ॥ १७८. दधीचिकुलगम्या
 १७९. दधीचिकुलपूजिता, १८०. दधीचिसुखदात्री, १८१. दधीचिदीन-
 हारिणी ॥ २२५ ॥ १८२. दधीचिदुःखहन्त्री, १८३. दधीचिकुलसुन्दरी
 १८४. दधीचिकुलसंभूता, १८५. दधीचिकुलपालिनी ॥ २२६ ॥ १८६.
 दधीचिदानगम्या, १८७. दधीचिदानमानिनी । १८८. दधीचिदाच-
 संतुष्टा, १८९. दधीचिदानदेवता ॥ २२७ ॥ १९०. दधीचिजयसंप्रीता
 १९१. दधीचिजपमानसा, १९२. दधीचिजपपूजाढ्या, १९३. दधीचि-
 जपमालिका ॥ २२८ ॥ १९४. दधीचिजपसन्तुष्टा, १९५. दधीचि-
 जपतोषिणी, १९६. दधीचितपसाराध्या, १९७. दधीचिशुभ-

दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युतिः ।
 नाम्नां सहस्रं दुर्गाया दादीनामिति कीर्तितम् ॥२३०॥
 यः पठेत् साधकाधीशः सर्वसिद्धीर्लभेत्तु सः ।
 प्रातर्मध्याह्नकाले च सन्ध्यायां नियतः शुचिः ॥२३१॥
 तथाऽर्द्धरात्रसमये स महेश इवाऽपरः ।
 शक्तियुक्तो महारात्रौ महावीरः प्रपूजयेत् ॥२३२॥
 महादेवीमकाराद्यैः पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमैः ।
 तत् पठेत् स्तुतिमिमां यः स च सिद्धिस्वरूपधृक् ॥२३३॥
 देवालये श्मशाने च गङ्गातीरे निजे गृहे ।
 वाराङ्गनागृहे चैव श्रीगुरोः सन्निधावपि ॥२३४॥

दायिनी ॥ २२९ ॥ ९९८. दूर्वा, ९९९. दूर्वादलश्यामा, १०००. दूर्वादलसमद्युति । इस प्रकार आदि में दकार वर्णवाले नामों से मैंने दुर्गा के एक हजार नामों को कहा ॥ २३० ॥

जो साधक नियमपूर्वक प्रातःकाल, मध्याह्नकाल अथवा सन्ध्याकाल में पवित्र होकर नियमतः इस दुर्गासहस्रनाम-स्तोत्र का पाठ करते हैं, उन्हें सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है ॥ २३१ ॥

जो साधक अर्द्धरात्रि में इसका पाठ करते हैं अथवा देवी का पूजन करते हैं, वे महादेव के समान शक्तिमान् तथा महावीर हो जाते हैं ॥ २३२ ॥ जो साधक पञ्चमकार से एवं उत्तमोत्तम द्रव्यों से महादेवीका पूजा कर उनके सन्निधान में इस स्तुति का पाठ करते हैं वे तो सिद्धि के स्वरूप हो जाते हैं ॥ २३३ ॥

देवालय, श्मशान, गङ्गातट, अपने घर, वेश्यागृह, गुरु के सन्निधान,

पर्वते प्रान्तरे घोरे स्तोत्रमेतत् सदा पठेत् ।
 दुर्गानामसहस्रं हि दुर्गा पश्यति चक्षुषा ॥२३५॥
 शतावर्त्तनमेतस्य पुरश्चरणमुच्यते ।
 स्तुतिसारो निगदितः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ? ॥२३६॥

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्त मिश्रशास्त्रि-संस्कृते
 दुर्गातन्त्रे श्रीकुलार्णवतन्त्रान्तर्गत-दुर्गादकारादि-
 सहस्र-नामस्तोत्रं समाप्तम् ।

पर्वत, घोर जंगल में इस दुर्गा सहस्रनाम का पाठ करने से स्वयं दुर्गा देवी का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है ॥ २३४-२३५ ॥

केवल इस सहस्रनाम को एक सौ आवृत्ति मात्र से एक पुरश्चरण हो जाता है । अब हे देवताओ ! तुम लोग क्या सुचना चाहते हो ? ॥ २३६ ॥

इस प्रकार आचार्य-पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्रीकृत 'शिवदत्ती'

हिन्दीटीका सहित दुर्गातन्त्र में कुलार्णवतन्त्र में कथित आदि में

दकार अक्षर वाले दुर्गाका सहस्र नाम स्तोत्र सम्पूर्ण ।

विशेष—इस दुर्गासहस्रनाम स्तोत्र के सभी नामों के आदि में दकार वर्ण का प्रयोग किया गया है, जो दुर्गा का बीज है, पर कहीं एकाक्ष स्थल पर जैसे तिमि, नित्या, जगदम्बिका आदि नामों में तकार, नकार एवं मध्यभाग में दकार का प्रयोग हुआ है । जो प्रायः दकार वर्ण से सम्बन्धित हैं । कहीं एक ही नाम कई बार आवृत्त भी हैं । जिसका प्रयोग सहस्रनाम प्रत्यर्थ भी किया गया है । इन नामों के प्रयोग में जो इतिहास, आख्यान आये हैं, वे तन्त्रग्रन्थों में द्रष्टव्य हैं । अधिकांश नाम भगवती के गुण परक हैं ।

दकारादि-दुर्गासहस्रनामावली

सङ्कल्पः—साधकः (यजमानो वा) आचम्य, प्राणानायम्य, दक्षिणहस्ते जला-ऽक्षत-पुष्प-द्रव्याभ्यादाय, अद्येत्याद्युच्चार्य, शुभ-पुण्यतिथौ अमुकनाम्नो मम सपरिवारस्य सकलपापक्षय-निवृत्ति-पूर्वक-दीर्घायुः - पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्म्यैहिका-ऽऽमुष्मिक-समस्तकामनासिद्धि-द्वारा धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विधफला-वाप्तये श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं तद्दिव्य-सहस्रनामावलीभिः पुष्पादिसमर्पणं करिष्ये ।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीदुर्गासहस्रनाममाला मन्त्रस्य नारद-ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, हुं कीलकं, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं रोग-दारिद्र्य-दोषाभ्य-शोक-दुःखविनाशार्थं सर्वाशा-पूरणार्थं च तद्दिव्यसहस्रनामावलीभिः पुष्पादिद्रव्य - समर्पणे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—

नारद-ऋषये नमः
गायत्री-छन्दसे नमः
श्रीदुर्गादेवतायै नमः
हुं बीजाय नमः
ह्रीं शक्तये नमः
ॐ कीलकाय नमः

शिरसि
मुखे
हृदये
गुह्ये
पादयोः
नाभौ

दकारादि-दुर्गासहस्रनामावली

९७

वदङ्गन्यासः—

हां ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः ।
ह्रीं ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै तर्जनीभ्यां स्वाहा शिरसे स्वाहा ।
हूं ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै मध्यमाभ्यां वषट् शिखायै वषट् ।
हें ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै अनामिकाभ्यां हुं कवचाय हुं ।
हौं ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै कनिष्ठाभ्यां वौषट् नेत्रत्रयाय वौषट् ।
हः ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः

शङ्खं चक्र-धनुः-शरांश्च दधतीः नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।

आमुक्ताङ्गद-हार-कङ्कण-रणत्-काञ्ची-क्वणन्-नूपुरा

दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्-कुण्डला ॥

*

दकारादि-दुर्गासहस्रनामावली:

१. ॐ दुर्गायै नमः
२. ॐ दुर्गतिहरायै नमः
३. ॐ दुर्गाचलनिवासिन्यै नमः
४. ॐ दुर्गमार्गानुसञ्चारायै नमः
५. ॐ दुर्गमार्गनिवासिन्यै नमः
६. ॐ दुर्गमार्गप्रविष्टायै नमः
७. ॐ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै नमः
८. ॐ दुर्गमार्गकृतावासायै नमः
९. ॐ दुर्गमार्गजयप्रियायै नमः
१०. ॐ दुर्गमार्गगृहीतार्चायै नमः
११. ॐ दुर्गमार्गस्थितात्मिकायै नमः
१२. ॐ दुर्गमार्गस्तुतिपरायै नमः
१३. ॐ दुर्गमार्गस्मृतिपरायै नमः
१४. ॐ दुर्गमार्गसदास्थाल्यै नमः
१५. ॐ दुर्गमार्गरतिप्रियायै नमः
१६. ॐ दुर्गमार्गस्थलस्थानायै नमः
१७. ॐ दुर्गमार्गबिलासिन्यै नमः
१८. ॐ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रायै नमः
१९. ॐ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्यै नमः
२०. ॐ दुर्गासुरनिहन्यै नमः
२१. ॐ दुर्गासुरनिषूदन्यै नमः
२२. ॐ दुर्गासुरहरायै नमः
२३. ॐ दूत्यै नमः
२४. ॐ दुर्गासुरविनाशिन्यै नमः
२५. ॐ दुर्गासुरबधोन्मत्तायै नमः
२६. ॐ दुर्गासुरबधोत्सुकायै नमः
२७. ॐ दुर्गासुरबधोत्साहायै नमः
२८. ॐ दुर्गासुरबधोत्साहायै नमः
२९. ॐ दुर्गासुरबधोत्साहायै नमः
३०. ॐ दुर्गासुरमाखन्तकृते नमः
३१. ॐ दुर्गासुरध्वंसतोषायै नमः
३२. ॐ दुर्गदानवदारिण्यै नमः
३३. ॐ दुर्गविद्रावणकयै नमः
३४. ॐ दुर्गविद्राविण्यै नमः
३५. ॐ दुर्गविक्षोभणकयै नमः
३६. ॐ दुर्गभीषनिकृन्तिन्यै नमः
३७. ॐ दुर्गविध्वंसनकयै नमः
३८. ॐ दुर्गदैन्यनिकृन्तिन्यै नमः
३९. ॐ दुर्गदैत्यप्राणहरायै नमः
४०. ॐ दुर्गदैत्यान्तकारिण्यै नमः
४१. ॐ दुर्गदैत्यहरत्रात्रे नमः
४२. ॐ दुर्गदैत्यासृग्मदायै नमः
४३. ॐ दुर्गदैत्याशनकयै नमः
४४. ॐ दुर्गचर्माश्वरावृतायै नमः
४५. ॐ दुर्गयुद्धोत्सवकयै नमः
४६. ॐ दुर्गयुद्धविशारदायै नमः
४७. ॐ दुर्गयुद्धासवरतायै नमः
४८. ॐ दुर्गयुद्धविमर्दिन्यै नमः
४९. ॐ दुर्गयुद्धहास्परतायै नमः
५०. ॐ दुर्गयुद्धाट्टहासिन्यै नमः

५१. ॐ दुर्गयुद्धमहामत्तायै नमः
५२. ॐ दुर्गयुद्धानुसारिण्यै नमः
५३. ॐ दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहायै नमः
५४. ॐ दुर्गदेशनिषेविण्यै नमः
५५. ॐ दुर्गदेशवासरतायै नमः
५६. ॐ दुर्गदेशविलासिन्यै नमः
५७. ॐ दुर्गदेशार्चनरतायै नमः
५८. ॐ दुर्गदेशजनप्रियायै नमः
५९. ॐ दुर्गमस्थानसंस्थानायै नमः
६०. ॐ दुर्गमध्यानुसाधनायै नमः
६१. ॐ दुर्गमान्यै नमः
६२. ॐ दुर्गमध्यानायै नमः
६३. ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः
६४. ॐ दुर्गमागमसन्धानायै नमः
६५. ॐ दुर्गमागमसंस्तुतायै नमः
६६. ॐ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै नमः
६७. ॐ दुर्गमश्रुतिसम्मतायै नमः
६८. ॐ दुर्गमश्रुतिमान्यायै नमः
६९. ॐ दुर्गमश्रुतिपूजितायै नमः
७०. ॐ दुर्गमश्रुतिसुप्रीतायै नमः
७१. ॐ दुर्गमश्रुतिहर्षदायै नमः
७२. ॐ दुर्गमश्रुतिसंस्थानायै नमः
७३. ॐ दुर्गमश्रुतिमानितायै नमः
७४. ॐ दुर्गमाचारसन्तुष्टायै नमः
७५. ॐ दुर्गमाचारतोषितायै नमः
७६. ॐ दुर्गमाचारनिर्वृत्तायै नमः
७७. ॐ दुर्गमाचारपूजितायै नमः
७८. ॐ दुर्गमाचारवशितायै नमः
७९. ॐ दुर्गमस्थानदायिन्यै नमः
८०. ॐ दुर्गमप्रेमनिरतायै नमः
८१. ॐ दुर्गमद्रविणप्रदायै नमः
८२. ॐ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थायै नमः
८३. ॐ दुर्गमाम्बुजवासिन्यै नमः
८४. ॐ दुर्गनाडीमार्गगत्यै नमः
८५. ॐ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै नमः
८६. ॐ दुर्गनाडीपञ्चरतायै नमः
८७. ॐ दुर्गनाड्यम्बुजस्थितायै नमः
८८. ॐ दुर्गनाडीगतायातायै नमः
८९. ॐ दुर्गनाडीकृतास्पदायै नमः
९०. ॐ दुर्गनाडीरतरतायै नमः
९१. ॐ दुर्गनाडीशसंस्तुतायै नमः
९२. ॐ दुर्गनाडीश्वररतायै नमः
९३. ॐ दुर्गनाडीशचुम्बितायै नमः
९४. ॐ दुर्गनाडीशक्रोडस्थायै नमः
९५. ॐ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुकायै नमः
९६. ॐ दुर्गनाड्यारोहणायै नमः
९७. ॐ दुर्गनाडीनिषेवितायै नमः
९८. ॐ दरिस्थानायै नमः
९९. ॐ दरिस्थानवासिन्यै नमः
१००. ॐ दनुजान्तकृते नमः
१०१. ॐ दरीकृततपस्यायै नमः
१०२. ॐ दरीकृतहरार्चनायै नमः
१०३. ॐ दरीजापितदिष्टायै नमः
१०४. ॐ दरीकृतरतिक्रियायै नमः
१०५. ॐ दरीकृतहरार्हायै नमः
१०६. ॐ दरीक्रीडितपुत्रिकायै नमः

- १०७ ॐ दरीसन्दर्शनरतायै नमः १३५ ॐ दानवार्याहाररतायै नमः
 १०८ ॐ दरीरोदितवृश्चिकायै नमः १३६ ॐ दानवारिप्रबोधिनायै नमः
 १०९ ॐ दरीगुप्तिकौतुकाढ्यायै नमः १३७ ॐ दानवारिधृतप्रेमायै नमः
 ११० ॐ दरीभ्रमणतत्परायै नमः १३८ ॐ दुःखशोकविमोचिन्यै नमः
 १११ ॐ दनुजान्तर्गते नमः १३९ ॐ दुःखहन्त्र्यै नमः
 ११२ ॐ दीनायै नमः १४० ॐ दुःखदात्र्यै नमः
 ११३ ॐ दनुसन्तानदारिण्यै नमः १४१ ॐ दुःखनिर्मूलकारिण्यै नमः
 ११४ ॐ दनुजध्वंसिन्यै नमः १४२ ॐ दुःखनिर्मूलनकर्त्र्यै नमः
 ११५ ॐ दूनायै नमः १४३ ॐ दुःखदार्यरिनाशिन्यै नमः
 ११६ ॐ दनुजेन्द्रविनाशिन्यै नमः १४४ ॐ दुःखहरायै नमः
 ११७ ॐ दानवध्वंसिन्यै नमः १४५ ॐ दुःखनाशायै नमः
 ११८ ॐ देव्यै नमः १४६ ॐ दुःखग्रामायै नमः
 ११९ ॐ दानवानां भयङ्कर्यै नमः १४७ ॐ दुरासदायै नमः
 १२० ॐ दानव्यै नमः १४८ ॐ दुःखहीनायै नमः
 १२१ ॐ दानवारारध्यायै नमः १४९ ॐ दुःखधारायै नमः
 १२२ ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै नमः १५० ॐ द्रविणाचारदायिन्यै नमः
 १२३ ॐ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै नमः १५१ ॐ द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टायै नमः
 १२४ ॐ दानवद्वेषिणीसत्यै नमः १५२ ॐ द्रविणत्यागतोषिकायै नमः
 १२५ ॐ दानवारिप्रेमरतायै नमः १५३ ॐ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टायै नमः
 १२६ ॐ दानवारिप्रपूजितायै नमः १५४ ॐ द्रविणस्पर्शमानदायै नमः
 १२७ ॐ दानवारिकृताचार्यै नमः १५५ ॐ द्रविणस्पर्शहर्षाढ्यायै नमः
 १२८ ॐ दानवारिविभूतिदायै नमः १५६ ॐ द्रविणस्पर्शतुष्टिदायै नमः
 १२९ ॐ दानवारिमहानन्दायै नमः १५७ ॐ द्रविणस्पर्शनकर्त्र्यै नमः
 १३० ॐ दानवारिरतिप्रियायै नमः १५८ ॐ द्रविणस्पर्शनातुरायै नमः
 १३१ ॐ दानवारिदानरतायै नमः १५९ ॐ द्रविणस्पर्शनोत्साहायै नमः
 १३२ ॐ दानवारिकृतास्पदायै नमः १६० ॐ द्रविणस्पर्शसाधितायै नमः
 १३३ ॐ दानवारिस्तुतिरतायै नमः १६१ ॐ द्रविणस्पर्शनमतायै नमः
 १३४ ॐ दानवारिस्मृतिप्रियायै नमः १६२ ॐ द्रविणस्पर्शपुत्रिकायै नमः

- १६३ ॐ द्रविणस्पर्शरक्षिण्यै नमः १९१ ॐ दत्तात्रेयविभावितायै नमः
 १६४ ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै नमः १९२ ॐ दत्तात्रेयकृताह्वयै नमः
 १६५ ॐ द्रविणार्कषणकर्त्र्यै नमः १९३ ॐ दत्तात्रेयप्रसाधितायै नमः
 १६६ ॐ द्रविणौघविर्जिन्यै नमः १९४ ॐ दत्तात्रेयहर्षदात्र्यै नमः
 १६७ ॐ द्रविणाचलदानाढ्यायै नमः १९५ ॐ दत्तात्रेयमुखप्रदायै नमः
 १६८ ॐ द्रविणाचलवासिन्यै नमः १९६ ॐ दत्तात्रेयस्तुतायै नमः
 १६९ ॐ दीनमात्रे नमः १९७ ॐ दत्तात्रेयसदानुतायै नमः
 १७० ॐ दीनबन्धवे नमः १९८ ॐ दत्तात्रेयप्रेमरतायै नमः
 १७१ ॐ दीनविघ्नविनाशिन्यै नमः १९९ ॐ दत्तात्रेयानुमानितायै नमः
 १७२ ॐ दीनसेव्यायै नमः २०० ॐ दत्तात्रेयसमुद्गीतायै नमः
 १७३ ॐ दीनसिद्धायै नमः २०१ ॐ दत्तात्रेयकुटुम्बिन्यै नमः
 १७४ ॐ दीनसाध्यायै नमः २०२ ॐ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै नमः
 १७५ ॐ दिगम्बर्यै नमः २०३ ॐ दत्तात्रेयशरीरिण्यै नमः
 १७६ ॐ दीनगेहकृतानन्दायै नमः २०४ ॐ दत्तात्रेयकृतानन्दायै नमः
 १७७ ॐ दीनगेहविलासिन्यै नमः २०५ ॐ दत्तात्रेयांशसम्भवायै नमः
 १७८ ॐ दीनभावप्रेमरतायै नमः २०६ ॐ दत्तात्रेयविभूतिस्थायै नमः
 १७९ ॐ दीनभावविनोदिन्यै नमः २०७ ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै नमः
 १८० ॐ दीनमानवचेतःस्थायै नमः २०८ ॐ दत्तात्रेयगीतिरतायै नमः
 १८१ ॐ दीनमानवहर्षदायै नमः २०९ ॐ दत्तात्रेयघनप्रदायै नमः
 १८२ ॐ दीनदैत्यविघातेच्छायै नमः २१० ॐ दत्तात्रेयदुःखहरायै नमः
 १८३ ॐ दीनद्रविणदायिन्यै नमः २११ ॐ दत्तात्रेयवरप्रदायै नमः
 १८४ ॐ दीनसाधनसन्तुष्टायै नमः २१२ ॐ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्यै नमः
 १८५ ॐ दीनदर्शनदायिन्यै नमः २१३ ॐ दत्तात्रेयभयापहायै नमः
 १८६ ॐ दीनपुत्रादिदात्र्यै नमः २१४ ॐ देवकन्यायै नमः
 १८७ ॐ दीनसम्पद्विधायिन्यै नमः २१५ ॐ देवमान्यायै नमः
 १८८ ॐ दत्तात्रेयध्यानरतायै नमः २१६ ॐ देवदुःखविनाशिन्यै नमः
 १८९ ॐ दत्तात्रेयप्रपूजितायै नमः २१७ ॐ देवसिद्धायै नमः
 १९० ॐ दत्तात्रेयषिसंसिद्धायै नमः २१८ ॐ देवपूज्यायै नमः

- २१९ ॐ देवज्यायै नमः
 २२० ॐ देववन्दितायै नमः
 २२१ ॐ देवमान्यायै नमः
 २२२ ॐ देवधन्यायै नमः
 २२३ ॐ देवविघ्नविनाशिन्यै नमः
 २२४ ॐ देवरम्यायै नमः
 २२५ ॐ देवस्तायै नमः
 २२६ ॐ देवकौतुकतत्परायै नमः
 २२७ ॐ देवक्रीडायै नमः
 २२८ ॐ देवक्रीडायै नमः
 २२९ ॐ देववैरिविनाशिन्यै नमः
 २३० ॐ देवकामायै नमः
 २३१ ॐ देवरामायै नमः
 २३२ ॐ देवद्विष्टविनाशिन्यै नमः
 २३३ ॐ देवदेवप्रियायै नमः
 २३४ ॐ देव्यै नमः
 २३५ ॐ देवदानववन्दितायै
 २३६ ॐ देवदेवस्तानन्दायै नमः
 २३७ ॐ देवदेववरोत्सुकायै नमः
 २३८ ॐ देवदेवप्रेमस्तायै नमः
 २३९ ॐ देवदेवप्रियम्बदायै नमः
 २४० ॐ देवदेवप्राणतुल्यायै नमः
 २४१ ॐ देवदेववन्तिम्बिन्यै नमः
 २४२ ॐ देवदेवहृतमनसे नमः
 २४३ ॐ देवदेवसुखावहायै नमः
 २४४ ॐ देवदेवक्रीडरतायै नमः
 २४५ ॐ देवदेवसुखप्रदायै नमः
 २४६ ॐ देवदेवमहानन्दायै नमः
 २४७ ॐ देवदेवप्रचुम्बितायै नमः
 २४८ ॐ देवदेवोपभृक्तायै नमः
 २४९ ॐ देवदेवानुसेवितायै नमः
 २५० ॐ देवदेवगतप्राणायै नमः
 २५१ ॐ देवदेवगतात्मिकायै नमः
 २५२ ॐ देवदेवहर्षदात्र्यै नमः
 २५३ ॐ देवदेवसुखप्रदायै नमः
 २५४ ॐ देवदेवमहानन्दायै नमः
 २५५ ॐ देवदेवविलासिन्यै नमः
 २५६ ॐ देवदेवधर्मपत्न्यै नमः
 २५७ ॐ देवदेवमनोगतायै नमः
 २५८ ॐ देवदेववध्वे नमः
 २५९ ॐ देवदेवार्चनप्रियायै नमः
 २६० ॐ देवदेवाङ्गनिलयायै नमः
 २६१ ॐ देवदेवाङ्गशायिन्यै नमः
 २६२ ॐ देवदेवाङ्गसुखिन्यै नमः
 २६३ ॐ देवदेवाङ्गवासिन्यै नमः
 २६४ ॐ देवदेवाङ्गभूषायै नमः
 २६५ ॐ देवदेवाङ्गभूषणायै नमः
 २६६ ॐ देवदेवप्रियकर्यै नमः
 २६७ ॐ देवदेवाप्रियान्तकृते नमः
 २६८ ॐ देवदेवाप्रियप्राणायै नमः
 २६९ ॐ देवदेवप्रियात्मिकायै नमः
 २७० ॐ देवदेवार्चकप्राणायै नमः
 २७१ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै नमः
 २७२ ॐ देवदेवार्चकोत्साहायै नमः
 २७३ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै नमः
 २७४ ॐ देवदेवार्चकाविघ्नायै नमः

- २७५ ॐ देवदेवप्रसवे नमः
 २७६ ॐ देवदेवस्यजन्यै नमः
 २७७ ॐ देवदेवविधायिन्यै नमः
 २७८ ॐ देवदेवस्यरमण्यै नमः
 २७९ ॐ देवदेवहृदाश्रयायै नमः
 २८० ॐ देवदेवेष्टदेव्यै नमः
 २८१ ॐ देवतापसपातिन्यै नमः
 २८२ ॐ देवताभावसन्तुष्टायै नमः
 २८३ ॐ देवताभावतोषितायै नमः
 २८४ ॐ देवताभाववरदायै नमः
 २८५ ॐ देवताभावसिद्धिदायै नमः
 २८६ ॐ देवताभावसंसिद्धायै नमः
 २८७ ॐ देवताभावसम्भवायै नमः
 २८८ ॐ देवताभावसुखिन्यै नमः
 २८९ ॐ देवताभाववन्दितायै नमः
 २९० ॐ देवताभावसुप्रीतायै नमः
 २९१ ॐ देवताभावहर्षदायै नमः
 २९२ ॐ देवताविघ्नहर्त्र्यै नमः
 २९३ ॐ देवताद्विष्टनाशिन्यै नमः
 २९४ ॐ देवतापूजितपदायै नमः
 २९५ ॐ देवताप्रेमतोषितायै नमः
 २९६ ॐ देवतागारनिलयायै नमः
 २९७ ॐ देवतासौख्यदायिन्यै नमः
 २९८ ॐ देवतानिलभावायै नमः
 २९९ ॐ देवताहृतमानसायै नमः
 ३०० ॐ देवताकृतपादाचार्यै नमः
 ३०१ ॐ देवताहृतभक्तिकायै नमः
 ३०२ ॐ देवतागर्वमध्यस्थायै नमः
 ३०३ ॐ देवतायै नमः
 ३०४ ॐ देवतायै नमः
 ३०५ ॐ दनवे नमः
 ३०६ ॐ दुर्गायै नमोनाम्न्यै नमः
 ३०७ ॐ दुर्गा मन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
 ३०८ ॐ दू नमोमन्त्रस्वरूपायै नमः
 ३०९ ॐ दू नमोमूर्त्तिकात्मिकायै नमः
 ३१० ॐ दूरदक्षिप्रियायै नमः
 ३११ ॐ दुष्टायै नमः
 ३१२ ॐ दुष्टभूतनिषेवितायै नमः
 ३१३ ॐ दूरदक्षिप्रेमस्तायै नमः
 ३१४ ॐ दूरदक्षिप्रियंदायै नमः
 ३१५ ॐ दूरदक्षिसिद्धिदात्र्यै नमः
 ३१६ ॐ दूरदक्षिप्रतोषितायै नमः
 ३१७ ॐ दूरदक्षिकण्ठसंस्थायै नमः
 ३१८ ॐ दूरदक्षिप्रहृषितायै नमः
 ३१९ ॐ दूरदक्षिगृहीताचार्यै नमः
 ३२० ॐ दूरदक्षिप्रतपितायै नमः
 ३२१ ॐ दूरदक्षिप्राणतुल्यायै नमः
 ३२२ ॐ दूरदक्षिसुखप्रदायै नमः
 ३२३ ॐ दूरदक्षिभ्रान्तिहरायै नमः
 ३२४ ॐ दूरदक्षिहृदास्पदायै नमः
 ३२५ ॐ दूरदक्षिरिविद्धावायै नमः
 ३२६ ॐ दीर्घदक्षिप्रमोदिन्यै नमः
 ३२७ ॐ दीर्घदक्षिप्राणतुल्यायै नमः
 ३२८ ॐ दीर्घदक्षिवरप्रदायै नमः
 ३२९ ॐ दीर्घदक्षिहर्षदात्र्यै नमः
 ३३० ॐ दीर्घदक्षिप्रहृषितायै नमः

- ३३१ ॐ दीर्घदशिमहानन्दायै नमः ३५९ ॐ दयावद्वत्सलायै नमः
 ३३२ ॐ दीर्घदशिमहालयायै नमः ३६० ॐ देव्यै नमः
 ३३३ ॐ दीर्घदशिमहोताचार्यै नमः ३६१ ॐ दयायै नमः
 ३३४ ॐ दीर्घदशिमहोताहर्णायै नमः ३६२ ॐ दानरतायै नमः
 ३३५ ॐ दयायै नमः ३६३ ॐ दयावद्वक्तिसुखिन्यै नमः
 ३३६ ॐ दानवत्यै नमः ३६४ ॐ दयावत्परितोषितायै नमः
 ३३७ ॐ दात्र्यै नमः ३६५ ॐ दयावत्स्नेहनिरतायै नमः
 ३३८ ॐ दयालवे नमः ३६६ ॐ दयावत्प्रतिपादिकायै नमः
 ३३९ ॐ दीनवत्सलायै नमः ३६७ ॐ दयावत्त्राणकर्त्र्यै नमः
 ३४० ॐ दयाद्रायै नमः ३६८ ॐ दयावन्मुक्तिदायिन्यै नमः
 ३४१ ॐ दयाशीलायै नमः ३६९ ॐ दयावद्भावसन्तुष्टायै नमः
 ३४२ ॐ दयाढ्यायै नमः ३७० ॐ दयावत्परितोषितायै नमः
 ३४३ ॐ दयात्मिकायै नमः ३७१ ॐ दयावत्तारणपरायै नमः
 ३४४ ॐ दयायै नमः ३७२ ॐ दयावत्सिद्धिदायिन्यै नमः
 ३४५ ॐ दानवत्यै नमः ३७३ ॐ दयावत्पुत्रवद्भाव्यायै नमः
 ३४६ ॐ दात्र्यै नमः ३७४ ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै नमः
 ३४७ ॐ दयालवे नमः ३७५ ॐ दयावद्देहनिलयायै नमः
 ३४८ ॐ दीनवत्सलायै नमः ३७६ ॐ दयाबन्धवे नमः
 ३४९ ॐ दयाद्रायै नमः ३७७ ॐ दयाश्रयायै नमः
 ३५० ॐ दयाशीलायै नमः ३७८ ॐ दयालूवात्सल्यकर्त्र्यै नमः
 ३५१ ॐ दयाढ्यायै नमः ३७९ ॐ दयालुसिद्धिदायिन्यै नमः
 ३५२ ॐ दयात्मिकायै नमः ३८० ॐ दयालुशरणासक्तायै नमः
 ३५३ ॐ दयाम्बुधये नमः ३८१ ॐ दयालुर्देहमन्दिरायै नमः
 ३५४ ॐ दयासारायै नमः ३८२ ॐ दयालुभक्तिभावस्थायै नमः
 ३५५ ॐ दयासागरपारगायै नमः ३८३ ॐ दयालुमाणरूपिण्यै नमः
 ३५६ ॐ दयासिन्धवे नमः ३८४ ॐ दयालुमुखदायै नमः
 ३५७ ॐ दयाभारायै नमः ३८५ ॐ दम्भायै नमः
 ३५८ ॐ दयावत्करुणाकर्त्र्यै नमः ३८६ ॐ दयालुप्रेमवर्षिण्यै नमः

- ३८७ ॐ दयालुवशगायै नमः ४१४ ॐ देव्यै नमः
 ३८८ ॐ दीर्घायै नमः ४१५ ॐ दशदिक्ख्यातविक्रमायै नमः
 ३८९ ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः ४१६ ॐ दशरथाचितपादायै नमः
 ३९० ॐ दीर्घलोचनायै नमः ४१७ ॐ दाशरथिप्रियायै नमः
 ३९१ ॐ दीर्घनेत्रायै नमः ४१८ ॐ दाशरथिप्रेमतुष्टायै नमः
 ३९२ ॐ दीर्घचक्षुषे नमः ४१९ ॐ दाशरथिरतिप्रियायै नमः
 ३९३ ॐ दीर्घबाहुलतात्मिकायै नमः ४२० ॐ दाशरथिप्रियकर्त्र्यै नमः
 ३९४ ॐ दीर्घकेश्यै नमः ४२१ ॐ दाशरथिप्रियम्बदायै नमः
 ३९५ ॐ दीर्घमुख्यै नमः ४२२ ॐ दाशरथीष्टसंदात्र्यै नमः
 ३९६ ॐ दीर्घत्रोणायै नमः ४२३ ॐ दाशरथीष्टदेवतायै नमः
 ३९७ ॐ दारुणायै नमः ४२४ ॐ दाशरथिद्वेषनाशायै नमः
 ३९८ ॐ दारुणासुरहन्त्र्यै नमः ४२५ ॐ दाशरथ्यानुकूल्यदायै नमः
 ३९९ ॐ दारुणासुरदारिण्यै नमः ४२६ ॐ दाशरथिप्रियतमायै नमः
 ४०० ॐ दारुणाहवकर्त्र्यै नमः ४२७ ॐ दाशरथिप्रपूजितायै नमः
 ४०१ ॐ दारुणाहवहर्षितायै नमः ४२८ ॐ दशाननारिसम्पूज्यायै नमः
 ४०२ ॐ दारुणाहवहोमाढ्यायै नमः ४२९ ॐ दशाननारिदेवतायै नमः
 ४०३ ॐ दारुणाचलनाशिन्यै नमः ४३० ॐ दशाननारिप्रमदायै नमः
 ४०४ ॐ दारुणाचारनिरतायै नमः ४३१ ॐ दशाननारिजन्मभूम्यै नमः
 ४०५ ॐ दारुणोत्सवहर्षितायै नमः ४३२ ॐ दशाननारिरतिदायै नमः
 ४०६ ॐ दारुणोद्यतरूपायै नमः ४३३ ॐ दशाननारिसेवितायै नमः
 ४०७ ॐ दारुणारिनिवारिण्यै नमः ४३४ ॐ दशाननारिमुखदायै नमः
 ४०८ ॐ दारुणेश्वरसंयुक्तायै नमः ४३५ ॐ दशाननारिवैरिहृते नमः
 ४०९ ॐ दोश्रतुष्कविराजितायै नमः ४३६ ॐ दशाननारिष्टदेव्यै नमः
 ४१० ॐ दशदोषकायै नमः ४३७ ॐ दशग्रीवारिवन्दितायै नमः
 ४११ ॐ दशभुजायै नमः ४३८ ॐ दशग्रीवारिजन्यै नमः
 ४१२ ॐ दशबाहुविराजितायै नमः ४३९ ॐ दशग्रीवारिभाविन्यै नमः
 ४१३ ॐ दशास्त्रधारिण्यै नमः ४४० ॐ दशग्रीवारिसहितायै नमः
 ४४१ ॐ दशग्रीवसभाजितायै नमः

- ५५२ ॐ दैत्यगुरुरतासाध्यै नमः
 ५५३ ॐ दैत्यगुरुप्रपूजितायै नमः
 ५५४ ॐ दैत्यगुरूपदेष्टृयै नमः
 ५५५ ॐ दैत्यगुरुनिषेवितायै नमः
 ५५६ ॐ दैत्यगुरुमतप्राणायै नमः
 ५५७ ॐ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै नमः
 ५५८ ॐ दुरन्तदुःखशमन्यै नमः
 ५५९ ॐ दुरन्तदमनीतम्यै नमः
 ५६० ॐ दुरन्तशोकशमन्यै नमः
 ५६१ ॐ दुरन्तरोगनाशिन्यै नमः
 ५६२ ॐ दुरन्तवैरिदमन्यै नमः
 ५६३ ॐ दुरन्तदैत्यनाशिन्यै नमः
 ५६४ ॐ दुरन्तकलुषघ्न्यै नमः
 ५६५ ॐ दुष्कृतिस्तोमनाशिन्यै नमः
 ५६६ ॐ दुराशयायै नमः
 ५६७ ॐ दुराधारायै नमः
 ५६८ ॐ दुर्जयायै नमः
 ५६९ ॐ दुष्टकामिन्यै नमः
 ५७० ॐ दर्शनीयायै नमः
 ५७१ ॐ दृश्यायै नमः
 ५७२ ॐ अदृश्यायै नमः
 ५७३ ॐ दृष्टिगोचरायै नमः
 ५७४ ॐ द्वीयागप्रियायै नमः
 ५७५ ॐ द्वयै नमः
 ५७६ ॐ द्वीयागकरप्रियायै नमः
 ५७७ ॐ द्वीयागकरानन्दायै नमः
 ५७८ ॐ द्वीयागसुखप्रदायै नमः
 ५७९ ॐ द्वीयागकरायातायै नमः

- ५८० ॐ द्वीयागप्रमोदिन्यै नमः
 ५८१ ॐ दुर्वासःपूजितायै नमः
 ५८२ ॐ दुर्वासोमुनिभावितायै नमः
 ५८३ ॐ दुर्वासोऽर्चितपादायै नमः
 ५८४ ॐ दुर्वासोमौनभावितायै नमः
 ५८५ ॐ दुर्वासोमुनिवन्द्यायै नमः
 ५८६ ॐ दुर्वासोमुनिदेवतायै नमः
 ५८७ ॐ दुर्वासोमुनिमात्रे नमः
 ५८८ ॐ दुर्वासोमुनिसिद्धिदायै नमः
 ५८९ ॐ दुर्वासोमुनिभावस्थायै नमः
 ५९० ॐ दुर्वासोमुनिसेवितायै नमः
 ५९१ ॐ दुर्वासोमुनिचित्तस्थायै नमः
 ५९२ ॐ दुर्वासोमुनिमण्डितायै नमः
 ५९३ ॐ दुर्वासोमुनिसञ्चारायै नमः
 ५९४ ॐ दुर्वासोहृदयङ्गमायै नमः
 ५९५ ॐ दुर्वासोहृदयाराध्यायै नमः
 ५९६ ॐ दुर्वासोहृत्सरोजगायै नमः
 ५९७ ॐ दुर्वासस्तापसाराध्यायै नमः
 ५९८ ॐ दुर्वासस्तापसाश्रयायै नमः
 ५९९ ॐ दुर्वासस्तापसरतायै नमः
 ६०० ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै नमः
 ६०१ ॐ दुर्वासोमुनिकन्यायै नमः
 ६०२ ॐ दुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदायै नमः
 ६०३ ॐ दररात्र्यै नमः
 ६०४ ॐ दरहरायै नमः
 ६०५ ॐ दरयुक्तायै नमः
 ६०६ ॐ दरापहायै नमः
 ६०७ ॐ दरघ्न्यै नमः

- ६०८ ॐ दरहन्त्र्यै नमः
 ६०९ ॐ दरयुक्तायै नमः
 ६१० ॐ दराश्रयायै नमः
 ६११ ॐ दरस्मेरायै नमः
 ६१२ ॐ दरापाङ्ग्यै नमः
 ६१३ ॐ दयादात्र्यै नमः
 ६१४ ॐ दयाश्रयायै नमः
 ६१५ ॐ दसपूज्यायै नमः
 ६१६ ॐ दसमात्रे नमः
 ६१७ ॐ दसदेव्यै नमः
 ६१८ ॐ दुरोन्मदायै नमः
 ६१९ ॐ दससिद्धायै नमः
 ६२० ॐ दससंस्थायै नमः
 ६२१ ॐ दसतापविमोचिन्यै नमः
 ६२२ ॐ दसक्षोभहरानिन्यायै नमः
 ६२३ ॐ दसलोकगतात्मिकायै नमः
 ६२४ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्यायै नमः
 ६२५ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनाप्रियायै नमः
 ६२६ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धायै नमः
 ६२७ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुकायै नमः
 ६२८ ॐ दैत्यगुरुप्रियतमायै नमः
 ६२९ ॐ देवगुरुनिषेवितायै नमः
 ६३० ॐ देवगुरुप्रसूपायै नमः
 ६३१ ॐ देवगुरुकृतार्हणायै नमः
 ६३२ ॐ देवगुरुप्रेमयुतायै नमः
 ६३३ ॐ देवगुर्वनुमानितायै नमः
 ६३४ ॐ देवगुरुप्रभावज्ञायै नमः
 ६३५ ॐ देवगुरुसुखप्रदायै नमः
 ६३६ ॐ देवगुरुज्ञानदात्र्यै नमः
 ६३७ ॐ देवगुरुप्रमोदिन्यै नमः
 ६३८ ॐ दैत्यस्त्रीगणसम्पूज्यायै नमः
 ६३९ ॐ दैत्यस्त्रीगणपूजितायै नमः
 ६४० ॐ दैत्यस्त्रीगणरूपायै नमः
 ६४१ ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहारिण्यै नमः
 ६४२ ॐ देवस्त्रीगणपूज्यायै नमः
 ६४३ ॐ देवस्त्रीगणवन्दितायै नमः
 ६४४ ॐ देवस्त्रीगणचित्तस्थायै नमः
 ६४५ ॐ देवस्त्रीगणभूषितायै नमः
 ६४६ ॐ देवस्त्रीगणसंसिद्धायै नमः
 ६४७ ॐ देवस्त्रीगणतोषितायै नमः
 ६४८ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारु-
 चामरवीजितायै नमः
 ६४९ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्ध-
 विलेपितायै नमः
 ६५० ॐ देवाङ्गनाधृतादशदृष्ट्यर्थ-
 मुखचन्द्रमायै नमः
 ६५१ ॐ देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्ली-
 दलकृतोत्सुकायै नमः
 ६५२ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थदीप-
 मालाविलोकनायै नमः
 ६५३ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राण-
 विनोदिन्यै नमः
 ६५४ ॐ देवनारीकरगतवासकासव-
 पापिन्यै नमः
 ६५५ ॐ देवनारीकङ्कृतिकाकृतकेश-
 निर्मार्जनायै नमः

- ६५६ ॐ देवनारीसेव्यगात्रायै नमः ६७८ ॐ दामपूज्यायै नमः
 ६५७ ॐ देवनारीकृतोत्सुकायै नमः ६७९ ॐ दामभूषायै नमः
 ६५८ ॐ देवनारीविरचितपुष्पमाला- ६८० ॐ दामोदरविनाशिन्यै नमः
 विराजितायै नमः ६८१ ॐ दामोदरप्रेमरतायै नमः
 ६५९ ॐ देवनारीविविचित्राङ्ग्यै नमः ६८२ ॐ दामोदरभगिन्यै नमः
 ६६० ॐ देवस्त्रीदत्तभोजनायै नमः ६८३ ॐ दामोदरप्रसवे नमः
 ६६१ ॐ देवस्त्रीगणगीतायै नमः ६८४ ॐ दामोदरपत्न्यै नमः
 ६६२ ॐ देवस्त्रीगीतसोत्सुकायै नमः ६८५ ॐ दामोदरपतिव्रतायै नमः
 ६६३ ॐ देवस्त्रीनृत्यमुखिन्यै नमः ६८६ ॐ दामोदराऽभिन्नदेहायै नमः
 ६६४ ॐ देवस्त्रीनृत्यदर्शिन्यै नमः ६८७ ॐ दामोदररतिप्रियायै नमः
 ६६५ ॐ देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपाद- ६८८ ॐ दामोदराऽभिन्नतनवे नमः
 पदाम्बुजायै नमः ६८९ ॐ दामोदरकृतास्पदायै नमः
 ६६६ ॐ देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारु- ६९० ॐ दामोदरकृतप्राणायै नमः
 तल्पनिषेदुष्यै नमः ६९१ ॐ दामोदरगतात्मिकायै नमः
 ६६७ ॐ देवनारी-चारुकराकलि- ६९२ ॐ दामोदरकौतुकाढ्यायै नमः
 ताङ्ग्यादिदेहिकायै नमः ६९३ ॐ दामोदरकलाकुलायै नमः
 ६६८ ॐ देवनारीकरव्यग्रतालवृन्द- ६९४ ॐ दामोदरालिङ्गिताङ्ग्यै नमः
 मस्तुकायै नमः ६९५ ॐ दामोदरकुतूहलायै नमः
 ६६९ ॐ देवनारीवेणुवीणानाद- ६९६ ॐ दामोदरकृताह्लादायै नमः
 सोत्कण्ठमानसायै नमः ६९७ ॐ दामोदरमुचुक्षितायै नमः
 ६७० ॐ देवकोटिस्तुतिनुतायै नमः ६९८ ॐ दामोदरसुताकृष्टायै नमः
 ६७१ ॐ देवकोटिकृतार्हणायै नमः ६९९ ॐ दामोदरसुखप्रदायै नमः
 ६७२ ॐ देवकोटिगातगुणायै नमः ७०० ॐ दामोदरसहाढ्यायै नमः
 ६७३ ॐ देवकोटिकृतस्तुत्यै नमः ७०१ ॐ दामोदरसहायिन्यै नमः
 ६७४ ॐ दन्तदण्डचोद्वेगफलायै नमः ७०२ ॐ दामोदरगुणज्ञायै नमः
 ६७५ ॐ देवकोलाहलाकुलायै नमः ७०३ ॐ दामोदरवरप्रदायै नमः
 ६७६ ॐ द्वेषरागपरित्यक्तायै नमः ७०४ ॐ दामोदरानुकूलायै नमः
 ६७७ ॐ द्वेषरागविवर्जितायै नमः ७०५ ॐ दामोदरनितम्बिन्यै नमः

- ७०६ ॐ दामोदरजलक्रीडाकुशलायै ७३१ ॐ दमनषिस्वरूपिण्यै नमः
 नमः ७३२ ॐ दमनषिस्वरूपायै नमः
 ७०७ ॐ दमनप्रियायै नमः ७३३ ॐ दम्भपूरितविग्रहायै नमः
 ७०८ ॐ दामोदरजलक्रीडात्यक्त- ७३४ ॐ दम्भहन्त्र्यै नमः
 स्वजनसोहदायै नमः ७३५ ॐ दम्भदात्र्यै नमः
 ७०९ ॐ दामोदरलसद्रासकेलि- ७३६ ॐ दम्भलोकविमोहिन्यै नमः
 कौतुकिन्यै नमः ७३७ ॐ दम्भशीलायै नमः
 ७१० ॐ दामोदरभ्रातृकायै नमः ७३८ ॐ दम्भहरायै नमः
 ७११ ॐ दामोदरपरायणायै नमः ७३९ ॐ दम्भवत्परिमर्दिन्यै नमः
 ७१२ ॐ दामोदरधरायै नमः ७४० ॐ दम्भरूपायै नमः
 ७१३ ॐ दामोदरवैरिविनाशिन्यै नमः ७४१ ॐ दम्भकयै नमः
 ७१४ ॐ दामोदरोपजायायै नमः ७४२ ॐ दम्भसन्तानदारिण्यै नमः
 ७१५ ॐ दामोदरनिमन्त्रितायै नमः ७४३ ॐ दत्तमोक्षायै नमः
 ७१६ ॐ दामोदरपराभूतायै नमः ७४४ ॐ दत्तधन्यायै नमः
 ७१७ ॐ दामोदरपराजितायै नमः ७४५ ॐ दत्तारोग्यायै नमः
 ७१८ ॐ दामोदरसमाक्रान्तायै नमः ७४६ ॐ दाम्भिकायै नमः
 ७१९ ॐ दामोदरहृताशुभायै नमः ७४७ ॐ दत्तपुत्रायै नमः
 ७२० ॐ दामोदरोत्सवरतायै नमः ७४८ ॐ दत्तदारायै नमः
 ७२१ ॐ दामोदरोत्सवावहायै नमः ७४९ ॐ दत्तहारायै नमः
 ७२२ ॐ दामोदरस्तन्यदात्र्यै नमः ७५० ॐ दारिकायै नमः
 ७२३ ॐ दामोदरगवेषितायै नमः ७५१ ॐ दत्तभोगायै नमः
 ७२४ ॐ दमयन्तीसिद्धिदात्र्यै नमः ७५२ ॐ दत्तशोकायै नमः
 ७२५ ॐ दमयन्तीप्रसाधितायै नमः ७५३ ॐ दत्तहस्त्यादिवाहनायै नमः
 ७२६ ॐ दमयन्तीष्टदेव्यै नमः ७५४ ॐ दत्तमत्यै नमः
 ७२७ ॐ दमयन्तीस्वरूपिण्यै नमः ७५५ ॐ दत्तभार्यायै नमः
 ७२८ ॐ दमयन्तीकृतार्चायै नमः ७५६ ॐ दत्तशास्त्रावबोधिकायै नमः
 ७२९ ॐ दमनषिविभावितायै नमः ७५७ ॐ दत्तपानायै नमः
 ७३० ॐ दमनषिप्राणतुल्यायै नमः ७५८ ॐ दत्तदानायै नमः

७५९ ॐ दत्तदारिद्र्यनाशिन्यै नमः ७८७ ॐ दाम्पत्याचारनिरतायै नमः
 ७६० ॐ दत्तसौधावनीवासायै नमः ७८८ ॐ दम्पत्यामोदमोदितायै नमः
 ७६१ ॐ दत्तस्वर्गायै नमः ७८९ ॐ दपत्यामदमुखिन्यै नमः
 ७६२ ॐ दासदायै नमः ७९० ॐ दम्पत्याह्लादकारिण्यै नमः
 ७६३ ॐ दास्यंतुष्टायै नमः ७९१ ॐ दम्पतीष्टपादपद्मायै नमः
 ७६४ ॐ दास्यहरायै नमः ७९२ ॐ दाम्पत्यप्रेमरूपिण्यै नमः
 ७६५ ॐ दासदासीशतप्रदायै नमः ७९३ ॐ दाम्पत्यभोगभवनायै नमः
 ७६६ ॐ दाररूपायै नमः ७९४ ॐ दाडिमीफलभोजिन्यै नमः
 ७६७ ॐ दारवासायै नमः ७९५ ॐ दाडिमीफलमन्तुष्टायै नमः
 ७६८ ॐ दारवासिहृदास्पदायै नमः ७९६ ॐ दाडिमीफलमानसायै नमः
 ७६९ ॐ दारवासिजना राध्यायै नमः ७९७ ॐ दाडिमीवृक्षसंस्थानायै नमः
 ७७० ॐ दारवासिजनप्रियायै नमः ७९८ ॐ दाडिमीवृक्षवासिन्यै नमः
 ७७१ ॐ दारवासिविनिर्मितायै नमः ७९९ ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै नमः
 ७७२ ॐ दारवासिसमर्चितायै नमः ८०० ॐ दाडिमीवनवासिन्यै नमः
 ७७३ ॐ दारवास्याहृतप्राणायै नमः ८०१ ॐ दाडिमीफलसायोरुपयो-
 ७७४ ॐ दारवास्यरिनाशिन्यै नमः धरसमन्वितायै नमः
 ७७५ ॐ दारवासिविघ्नहरायै नमः ८०२ ॐ दक्षिणायै नमः
 ७७६ ॐ दारवासिविमुक्तिदायै नमः ८०३ ॐ दक्षिणारूपायै नमः
 ७७७ ॐ दाराग्निरूपिण्यै नमः ८०४ ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै नमः
 ७७८ ॐ दारायै नमः ८०५ ॐ दक्षकन्यायै नमः
 ७७९ ॐ दारकार्यरिनाशिन्यै नमः ८०६ ॐ दक्षपुत्र्यै नमः
 ७८० ॐ दम्पत्यै नमः ८०७ ॐ दक्षमात्रे नमः
 ७८१ ॐ दम्पतीष्टायै नमः ८०८ ॐ दक्षस्त्रे नमः
 ७८२ ॐ दम्पतीप्राणरूपिकायै नमः ८०९ ॐ दक्षगोत्रायै नमः
 ७८३ ॐ दम्पतीस्नेहनिरतायै नमः ८१० ॐ दक्षसुतायै नमः
 ७८४ ॐ दाम्पत्यसाधनप्रियायै नमः ८११ ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः
 ७८५ ॐ दाम्पत्यमुखसेनायै नमः ८१२ ॐ दक्षयज्ञनाशकत्र्यै नमः
 ७८६ ॐ दाम्पत्यमुखदायिन्यै नमः ८१३ ॐ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै नमः

८१४ ॐ दक्षप्रसूत्यै नमः ८४२ ॐ द्वारदेशनिवासिन्यै नमः
 ८१५ ॐ दक्षेज्यायै नमः ८४३ ॐ द्वारकर्यै नमः
 ८१६ ॐ दक्षवंशैकपावन्यै नमः ८४४ ॐ द्वारधात्र्यै नमः
 ८१७ ॐ दक्षात्मजायै नमः ८४५ ॐ दोषमात्रविवर्जितायै नमः
 ८१८ ॐ दक्षसूनवे नमः ८४६ ॐ दोषकरायै नमः
 ८१९ ॐ दक्षजायै नमः ८४७ ॐ दोषहरायै नमः
 ८२० ॐ दक्षजातिकायै नमः ८४८ ॐ दोषराशिविनाशिन्यै नमः
 ८२१ ॐ दक्षजन्मने नमः ८४९ ॐ दोषाकरविभूषाढ्यायै नमः
 ८२२ ॐ दक्षजनुषे नमः ८५० ॐ दोषाकरकमालिन्यै नमः
 ८२३ ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै नमः ८५१ ॐ दोषाकरसहस्राभायै नमः
 ८२४ ॐ दक्षजनुषे नमः ८५२ ॐ दोषाकरसमाननायै नमः
 ८२५ ॐ दक्षयागध्वंसिन्यै नमः ८५३ ॐ दोषाकरमुख्यै नमः
 ८२६ ॐ दक्षकन्यकायै नमः ८५४ ॐ दिव्यायै नमः
 ८२७ ॐ दक्षिणाचारनिरतायै नमः ८५५ ॐ दोषाकरकराग्रजायै नमः
 ८२८ ॐ दक्षिणाचारतुष्टिदायै नमः ८५६ ॐ दोषाकरसमज्योतिषे नमः
 ८२९ ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धायै नमः ८५७ ॐ दोषाकरसुशीतलायै नमः
 ८३० ॐ दक्षिणाचारभावितायै नमः ८५८ ॐ दोषाकरश्रेण्यै नमः
 ८३१ ॐ दक्षिणाचारसुखिन्यै नमः ८५९ ॐ दोषसदृशापाङ्गवीक्षणायै
 ८३२ ॐ दक्षिणाचारसाधितायै नमः नमः
 ८३३ ॐ दक्षिणाचारमोक्षाप्त्यै नमः ८६० ॐ दोषाकरेष्टदेव्यै नमः
 ८३४ ॐ दक्षिणाचारवन्दितायै नमः ८६१ ॐ दोषाकरनिषेवितायै नमः
 ८३५ ॐ दक्षिणाचारशरणायै नमः ८६२ ॐ दोषाकरप्राणरूपायै नमः
 ८३६ ॐ दक्षिणाचारहर्षिण्यै नमः ८६३ ॐ दोषाकरमरीचिकायै नमः
 ८३७ ॐ द्वारपालप्रियायै नमः ८६४ ॐ दोषाकरोल्लसद्भालायै
 ८३८ ॐ द्वारवासिन्यै नमः नमः
 ८३९ ॐ द्वारसंस्थितायै नमः ८६५ ॐ दोषाकरसुहर्षिण्यै नमः
 ८४० ॐ द्वाररूपायै नमः ८६६ ॐ दोषाकरशिरोभूषायै नमः
 ८४१ ॐ द्वारसंस्थायै नमः ८६७ ॐ दोषाकरवधूप्रियायै नमः

८६८ ॐ दोषाकरवधूप्राणायै नमः
 ८६९ ॐ दोषाकरवधूमतायै नमः
 ८७० ॐ दोषाकरवधूप्रीतायै नमः
 ८७१ ॐ दोषाकरवध्वै नमः
 ८७२ ॐ दोषापूज्यायै नमः
 ८७३ ॐ दोषापूजितायै नमः
 ८७४ ॐ दोषहारिण्यै नमः
 ८७५ ॐ दोषाजापमहानन्दायै नमः
 ८७६ ॐ दोषाजापपरायणायै नमः
 ८७७ ॐ दोषापुरश्चारतायै नमः
 ८७८ ॐ दोषापूजकपुत्रिण्यै नमः
 ८७९ ॐ दोषापूजकवात्सल्य-
 कारिणीजगदम्बिकायै नमः
 ८८० ॐ दोषापूजकबैरिण्यै नमः
 ८८१ ॐ दोषापूजकविघ्नहृते नमः
 ८८२ ॐ दोषापूजकसन्तुष्टायै नमः
 ८८३ ॐ दोषापूजकमुक्तिदायै नमः
 ८८४ ॐ दमप्रसूनसम्पूज्यायै नमः
 ८८५ ॐ दमपुष्पप्रियायै नमः
 ८८६ ॐ दुर्योधनप्रपूज्यायै नमः
 ८८७ ॐ दुःशासनसर्पचितायै नमः
 ८८८ ॐ दण्डपाणिप्रियायै नमः
 ८८९ ॐ दण्डपाणिमात्रे नमः
 ८९० ॐ दयानिधये नमः
 ८९१ ॐ दण्डपाणिसमाराध्यायै
 नमः
 ८९२ ॐ दण्डपाणिप्रपूजितायै नमः
 ८९३ ॐ दण्डपाणिगृहासक्तायै नमः

८९४ ॐ दण्डपाणिप्रियंवदायै नमः
 ८९५ ॐ दण्डपाणिप्रियतमायै नमः
 ८९६ ॐ दण्डपाणिमनोहरायै नमः
 ८९७ ॐ दण्डपाणिहृतप्राणायै नमः
 ८९८ ॐ दण्डपाणिसुसिद्धिदायै
 नमः
 ८९९ ॐ दण्डपाणिपरामृष्टायै
 नमः
 ९०० ॐ दण्डपाणिप्रहृषितायै नमः
 ९०१ ॐ दण्डपाणिविघ्नहरायै
 नमः
 ९०२ ॐ दण्डपाणिशिोधृतायै
 नमः
 ९०३ ॐ दण्डपाणिप्राप्तचर्यायै नमः
 ९०४ ॐ दण्डपाण्यन्मुख्यै नमः
 ९०५ ॐ दण्डपाणिप्राप्तपदायै नमः
 ९०६ ॐ दण्डपाणिवरोन्मुख्यै नमः
 ९०७ ॐ दण्डहस्तायै नमः
 ९०८ ॐ दण्डपाण्यै नमः
 ९०९ ॐ दण्डबाह्वे नमः
 ९१० ॐ दूरान्तकृते नमः
 ९११ ॐ दण्डदोष्कायै नमः
 ९१२ ॐ दण्डकरायै नमः
 ९१३ ॐ दण्डचित्तकृतास्पदायै नमः
 ९१४ ॐ दण्डविद्यायै नमः
 ९१५ ॐ दण्डिमात्रे नमः
 ९१६ ॐ दण्डिखण्डकनाशिन्यै नमः
 ९१७ ॐ दण्डिप्रियायै नमः

९१८ ॐ दण्डिपूज्यायै नमः
 ९१९ ॐ दण्डिसन्तोषदायिन्यै नमः
 ९२० ॐ दस्युपूज्यायै नमः
 ९२१ ॐ दस्युरतायै नमः
 ९२२ ॐ दस्युद्रविणशायिन्यै नमः
 ९२३ ॐ दस्युवर्गकृताहार्यै नमः
 ९२४ ॐ दस्युवर्गविनाशिन्यै नमः
 ९२५ ॐ दस्युनिर्णाशिन्यै नमः
 ९२६ ॐ दस्युकुलनिर्णाशिन्यै नमः
 ९२७ ॐ दस्युप्रियकर्यै नमः
 ९२८ ॐ दस्युनृत्यदर्शनतत्परायै
 नमः
 ९२९ ॐ दुष्टदण्डकर्यै नमः
 ९३० ॐ दुष्टवर्गविद्राविण्यै नमः
 ९३१ ॐ दुष्टवर्गनिग्रहाहार्यै नमः
 ९३२ ॐ दूषकप्राणनाशिन्यै नमः
 ९३३ ॐ दूषकोत्तापजन्यै नमः
 ९३४ ॐ दूषकारिष्टकारिण्यै नमः
 ९३५ ॐ दूषकद्वेषणकर्यै नमः
 ९३६ ॐ दाहिकायै नमः
 ९३७ ॐ दहनात्मिकायै नमः
 ९३८ ॐ दारुकारिनिहन्त्र्यै नमः
 ९३९ ॐ दारुकेश्वरपूजितायै नमः
 ९४० ॐ दारुकेश्वरमात्रे नमः
 ९४१ ॐ दारुकेश्वरचन्द्रितायै नमः
 ९४२ ॐ दर्भहस्तायै नमः
 ९४३ ॐ दर्भयुतायै नमः
 ९४४ ॐ दर्भकर्मविर्वजितायै नमः

९४५ ॐ दर्भमय्यै नमः
 ९४६ ॐ दर्भतनवे नमः
 ९४७ ॐ दर्भसर्वस्वरूपिण्यै नमः
 ९४८ ॐ दर्भकर्मचाररतायै नमः
 ९४९ ॐ दर्भहस्तकृताहंणायै नमः
 ९५० ॐ दर्भानुकूलायै नमः
 ९५१ ॐ दाम्भर्यायै नमः
 ९५२ ॐ दर्वापात्रानुदामिन्यै नमः
 ९५३ ॐ दमघोषप्रपूज्यायै नमः
 ९५४ ॐ दमघोषवरदायै नमः
 ९५५ ॐ दमघोषसमाराध्यायै नमः
 ९५६ ॐ दावाग्निरूपिण्यै नमः
 ९५७ ॐ दावाग्निरूपायै नमः
 ९५८ ॐ दावाग्ननिर्णाशितमहा-
 बलायै नमः
 ९५९ ॐ दन्तदंष्ट्रासुरकलायै नमः
 ९६० ॐ दन्तचक्षितहस्तिकायै०
 ९६१ ॐ दन्तदंष्ट्रस्यन्दनायै नमः
 ९६२ ॐ दन्तनिर्णाशितासुरायै०
 ९६३ ॐ दधिपूज्यायै नमः
 ९६४ ॐ दधिप्रीतायै नमः
 ९६५ ॐ दधीचिवरदायिन्यै नमः
 ९६६ ॐ दधीचीष्टदेवतायै नमः
 ९६७ ॐ दधीचिमोक्षदायिन्यै नमः
 ९६८ ॐ दधीचिदैत्यहन्त्र्यै नमः
 ९६९ ॐ दधीचिदरदारिण्यै नमः
 ९७० ॐ दधीचिभक्तिसुखिन्यै नमः
 ९७१ ॐ दधीचिमुनिसेवितायै नमः

- १७२ ॐ दधीचिज्ञानदात्र्यै नमः १८७ ॐ दधीचिदानमानिन्यै नमः
 १७३ ॐ दधीचिगुणदायिन्यै नमः १८८ ॐ दधीचिदानसन्तुष्टायै नमः
 १७४ ॐ दधीचिकुलसम्भूषायै नमः १८९ ॐ दधीचिदानदेवतायै नमः
 १७५ ॐ दधीचिभुक्तिमुक्तिदायै नमः १९० ॐ दधीचिजयसंप्रीतायै नमः
 १७६ ॐ दधीचिकुलदेव्यै नमः १९१ ॐ दधीचिजपमानसायै नमः
 १७७ ॐ दधीचिकुलदेवतायै नमः १९२ ॐ दधीचिजपपूजाढ्यायै नमः
 १७८ ॐ दधीचिकुलगम्यायै नमः १९३ ॐ दधीचिजपमालिकायै नमः
 १७९ ॐ दधीचिकुलपूजितायै नमः १९४ ॐ दधीचिजपसन्तुष्टायै नमः
 १८० ॐ दधीचिसुखदात्र्यै नमः १९५ ॐ दधीचिजपतोषिण्यै नमः
 १८१ ॐ दधीचिदेव्यहारिण्यै नमः १९६ ॐ दधीचितापसाराध्यायै नमः
 १८२ ॐ दधीचिदुःखहन्त्र्यै नमः १९७ ॐ दधीचिशुभदायिन्यै नमः
 १८३ ॐ दधीचिकुलसुन्दर्यै नमः १९८ ॐ दूर्वायै नमः
 १८४ ॐ दधीचिकुलसम्भूतायै नमः १९९ ॐ दूर्वादलव्यामयायै नमः
 १८५ ॐ दधीचिकुलपालिन्यै नमः १९९ ॐ दूर्वादलसमद्युतये नमः
 १८६ ॐ दधीचिदानगम्यायै नमः १९९ ॐ दूर्वादलसमद्युतये नमः

इति दुर्गतन्त्रे दकारादि-दुर्गासहस्रनामावली समाप्ता ।

दुर्गाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
 यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥ १ ॥
 सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
 आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥
 पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
 मनो-बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥
 सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्द-स्वरूपिणी ।
 अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याऽभव्या सदागतिः ॥ ४ ॥

भगवान् शङ्कर ने कहा—हे कमल के समान मुखवाली पावती ! मैं भगवती दुर्गा के अष्टोत्तरशत अर्थात् एक सौ आठ नामों का वर्णन करता हूँ, उसे तुम सावधान पूर्वक सुनो । जिस अष्टोत्तरशत दुर्गानाम के पाठ मात्र से सतीरूपी दुर्गा अत्यन्त प्रसन्न होती है ॥ १ ॥

१ सती, २ साध्वी, ३ भवप्रीता, ४ भवानी, ५ भवमोचनी, ६ आर्या, ७ दुर्गा, ८ जया, ९ आद्या, १० त्रिनेत्रा, ११ शूलधारिणी, ॥ २ ॥
 १२ पिनाकधारिणी, १३ चित्रा, १४ चन्द्रघण्टा, १५ महातपा, १६ मन, १७ बुद्धि, १८ अहङ्कारा, १९ चित्तरूपा, २० चिता, २१ चिति, ॥ ३ ॥
 २२ सर्वमन्त्रमयी, २३ सत्ता, २४ सत्यानन्दस्वरूपिणी, २५ अनन्ता, २६ भाविनी, २७ भाव्या, २८ भव्या, २९ अभव्या, ३० सदागति, ॥ ४ ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
 सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥
 अपर्णाऽनेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
 पट्टाम्बर-परीधाना कलमञ्जीर-रञ्जिनी ॥ ६ ॥
 अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
 वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
 चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥
 विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
 बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥
 निशुम्भ-शुम्भ-हननी महिषासुरमर्दिनी ।
 मधुकैटभहन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥ १० ॥

३१ शाम्भवी, ३२ देवमाता, ३३ चिन्ता, ३४ रत्नप्रिया, ३५ सर्वविद्या,
 ३६ दक्षकन्या, ३७ दक्षयज्ञविनाशिनी, ॥ ५ ॥

३८ अपर्णा, ३९ अनेकवर्णा, ४० पाटला, ४१ पाटलावती, ४२
 पट्टाम्बरपरीधाना, ४३ कमलञ्जीररञ्जिनी, ॥ ६ ॥ ४४ अमेयविक्रमा,
 ४५ क्रूरा, ४६ सुन्दरी, ४७ सुरसुन्दरी, ४८ वनदुर्गा, ४९ मातङ्गी,
 ५० मतङ्गमुनिपूजिता, ॥ ७ ॥ ५१ ब्राह्मी, ५२ माहेश्वरी, ५३ ऐन्द्री,
 ५४ कौमारी, ५५ वैष्णवी, ५६ चामुण्डा, ५७ वाराही, ५८ लक्ष्मी,
 ५९ पुरुषाकृति, ॥ ८ ॥ ६० विमला, ६१ उत्कर्षिणी, ६२ ज्ञाना,
 ६३ क्रिया, ६४ नित्या, ६५ बुद्धिदा, ६६ बहुला, ६७ बहुलप्रेमा,
 ६८ सर्ववाहनवाहना, ॥ ९ ॥ ६९ निशुम्भ-शुम्भहननी, ७० महिषासुर-
 मर्दिनी, ७१ मधुकैटभहन्त्री, ७२ चण्डमुण्डविनाशिनी, ॥ १० ॥

सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
 सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥
 अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकाऽस्त्रस्य धारिणी ।
 कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥ १२ ॥
 अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
 महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ १३ ॥
 अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
 नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ १४ ॥
 शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
 कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ १५ ॥
 य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानाम शताष्टकम् ।
 नाऽसाध्यं विद्यते देवि ! त्रिषु लोकेषु पार्वती ॥ १६ ॥
 धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।

७३ सर्वासुरविनाशा, ७४ सर्वदानवघातिनी, ७५ सर्वशास्त्रमयी,
 ७६ सत्या, ७७ सर्वास्त्रधारिणी, ॥ ११ ॥ ७८ अनेकशस्त्रहस्ता, ७९
 अनेकास्त्रधारिणी, ८० कुमारी, ८१ एककन्या, ८२ कैशोरी, ८३ युवती,
 ८४ यति, ॥ १२ ॥ ८५ अप्रौढा, ८६ प्रौढा, ८७ वृद्धमाता, ८८ बलप्रदा,
 ८९ महोदरी, ९० मुक्तकेशी, ९१ घोररूपा, ९२ महाबला, ॥ १३ ॥
 ९३ अग्निज्वाला, ९४ रौद्रमुखा, ९५ कालरात्रि, ९६ तपस्विनी, ९७
 नारायणी, ९८ भद्रकाली, ९९ विष्णुमाया, १०० जलोदरी, ॥ १४ ॥
 १०१ शिवदूती, १०२ कराली, १०३ अनन्ता, १०४ परमेश्वरी, १०५
 कात्यायनी, १०६ सावित्री, १०७ प्रत्यक्षा, तथा १०८ ब्रह्मवादिनी, ॥ १५ ॥

हे पार्वती, जो साधक इस एक सौ आठ दुर्गा नाम का पाठ करता
 है उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है ॥ १६ ॥

चतुर्वर्गं तथा चाऽन्ते लभेन् मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७॥

कुमारी पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।

पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नाम-शताष्टकम् ॥१८॥

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि ! सर्वैः सुरवरैरपि ।

राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥

गोरोचना-ऽलक्तक - कुङ्कुमेन सिन्दूर - कर्पूर-मधुत्रयेण ।

विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥२०॥

भौमा-ऽवास्या-निशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।

विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदांपदम् ॥२१॥

इति दुर्गातन्त्रे विश्वसारतन्त्रोक्तं दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

उक्त साधक धन-धान्य, पुत्र, पत्नी, घोड़ा, हाथी एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और अन्त में सायुज्य मृत्ति प्राप्त करता है ॥ १७ ॥

हे देवि ! पहले कुमारी का पूजन तथा सुरेश्वरी भगवती देवी का पूजन कर जो इस अष्टोत्तरशत नाम का पाठ करता है, उसे सभी सिद्धियाँ अवश्य ही प्राप्त होती हैं । उस साधक के लिए राजगण सेवक बन जाते हैं तथा उक्त साधक राज्यश्री को प्राप्त करता है । इस अष्टोत्तरशत नाम का सभी श्रेष्ठ इन्द्रादि देवगणों ने पाठ कर समस्त सिद्धियाँ प्राप्त की थीं ॥ १८-१९ ॥

सर्वशास्त्रज्ञ भगवान् पुरारि-शंकर भी गोरोचन, अलता, कुंकुम, सिन्दूर, कपूर तथा त्रिमधु से इस दुर्गा यन्त्र को लिखकर भुजा में धारण करते हैं ॥ २० ॥ इस यन्त्र को शतभिषा नक्षत्र युक्त चन्द्र तथा मङ्गलवार, भौमवती अमावस्या के दिन रात्रि में लिखकर जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे समस्त सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं ॥ २१ ॥

इस प्रकार आचार्य-पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित दुर्गातन्त्र में विश्वसारतन्त्रोक्त दुर्गाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्र समाप्त ।

दुर्गा-द्वात्रिंशन्नाम-माला

दुर्गा दुर्गातिशमनी दुर्गापद्-विनिवारिणी ।

दुर्गमच्छेदिनी दुर्ग-साधिनी दुर्ग-नाशिनी ॥ १ ॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।

दुर्गम-ज्ञानदा दुर्गदैत्यलोक-दवानला ॥ २ ॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।

दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥ ३ ॥

दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यान-भासिनी ।

दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥ ४ ॥

भगवान् शङ्कर ने कहा—हे पावन्ती ! मैं भगवती दुर्गा के बत्तीस नामों का वर्णन करता हूँ, जो इस प्रकार है—

१. दुर्गा, २. दुर्गातिशमनी, ३. दुर्गापद्विनिवारिणी, ४. दुर्ग-मच्छेदिनी, ५. दुर्गसाधिनी, ६. दुर्गनाशिनी, ॥१॥ ७. दुर्गतोद्धारिणी, ८. दुर्गनिहन्त्री, ९. दुर्गमापहा, १०. दुर्गम-ज्ञानदा, ११. दुर्गदैत्यलोक-दवानला, ॥ २ ॥ १२. दुर्गमा, १३. दुर्गमालोका, १४. दुर्गमात्म-स्वरूपिणी, १५. दुर्गमार्गप्रदा, १६. दुर्गमविद्या, १७. दुर्गमाश्रिता, ॥३॥ १८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना, १९. दुर्गमध्यान-भासिनी, २०. दुर्गमोहा, २१. दुर्गमगा, २२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी, ॥ ४ ॥

दुर्गमासुरसंहन्त्री

दुर्गमायुध-धारिणी ।

दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥ ५ ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गमा दुर्गदारिणी ।

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥ ६ ॥

पठेत् सर्वभयान् मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥ ७ ॥

इति दुर्गातन्त्रे दुर्गा-द्वात्रिंशन्नाम-माला समाप्ता ।

*

२. दुर्गमासुरसंहन्त्री, २४. दुर्गमायुधधारिणी, २५. दुर्गमाङ्गी, २६. दुर्गमता, २७. दुर्गम्या, २८. दुर्गमेश्वरी, ॥ ५ ॥ २९. दुर्गभीमा, ३०. दुर्गभामा, ३१. दुर्गमा, ३२. दुर्गदारिणी । जो मनुष्य मरे द्वारा वणित भगवती दुर्गा के इन ३२ नामों का श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह प्राणी निःसन्देह समस्त भयों से मुक्त हो जाता है ॥ ६-७ ॥

इस प्रकार पण्डित श्री शिवदत्तमिश्र शास्त्री कृत 'शिवदत्ती' हिन्दी

टीका सहित दुर्गातन्त्र में दुर्गा-द्वात्रिंशन्नाम-माला समाप्त ।

*

अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीदेवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

जय त्वं देवि ! चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

विशेष—अर्गला ब्योड़ा को कहते हैं, यह लोहे या काठका होता है, द्वार पर जिसके लगा देने से किवाड़ नहीं खुलते । इसी तरह इस स्तोत्र के पाठ से होता है । अर्थात् इसके पाठ से किसी प्रकार की बाहरी विघ्न-बाधा घर में प्रवेश नहीं कर पाती ।

जिस जगदम्बिका का नाम जयन्ती (सब की अपेक्षा अत्यधिक उत्कर्ष वाली,) मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी । मुण्डमाल को धारण करने वाली) दुर्गा, क्षमा शिवा धात्री (सब को धारण करने वाली), स्वाहा (यज्ञों को स्वीकार कर देवताओं का पोषण करने वाली) तथा स्वधा, पितरों को श्राद्ध, तर्पणादि को स्वीकार कर पोषण करने वाली है, उस भगवती को हम नमस्कार करते हैं ॥ १ ॥ हे चामुण्डे ! (चण्ड, मुण्ड का विनाश करने वाली) तुम्हारी जय हो, प्राणियों का सन्ताप हरण करने वाली हे देवी, तुम्हारी जय हो । सब में व्याप्त रहने वाली हे देवी, तुम्हारी जय हो, संहाररूपेण संसार

मधु-कैटभ-विद्रावि विधातृवरदे नमः ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ३ ॥
 महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ४ ॥
 रक्तबीजवधे देहि चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ५ ॥
 शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ६ ॥
 वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ७ ॥

का विनाश करने वाली हे कालरात्रि, तुम्हारी जय हो ॥ ३ ॥ मधु तथा कैटभ का विदारण करने वाली तथा ब्रह्मादेव को वरदान देने वाली हे देवि, तुम्हारी जय हो । हे भगवती, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ ३ ॥ महिषासुर का विनाश कर भक्तों को सुख देने वाली हे देवि, तुम्हें नमस्कार है । तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ ४ ॥ रक्तबीज का वध करने वाली तथा चण्ड, मुण्ड का विनाश करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ ५ ॥ शुम्भ तथा निशुम्भ और धूम्राक्ष का मर्दन करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का नाश करो ॥ ६ ॥

वन्दनीय चरणों वाली, सम्पूर्ण सौभाग्य को प्रदान करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ८ ॥
 न तेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ९ ॥
 स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १० ॥
 चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ११ ॥
 देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १२ ॥
 विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १३ ॥

करो ॥ ७ ॥ अचिन्त्यरूप तथा अचिन्त्य चरित्र वाली, सम्पूर्ण शत्रुओं का विनाश करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ ८ ॥ हे पापों का नाश करने वाली चण्डिके देवि, जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हें नमस्कार करते हैं उन्हें तुम रूप दो, जय दो और यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ ९ ॥ हे व्याधियों का विनाश करने वाली चण्डिके देवि, जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, तुम उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ १० ॥ हे चण्डिके, जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ ११ ॥

हे भगवति, तुम मुझे सौभाग्य तथा आरोग्य दो, मुझे अत्यन्त सुख प्रदान करो और रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥
 सुरा-ऽसुर - शिरोरत्न - निघृष्ट - चरणेऽम्बिके ! ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥
 विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥
 प्रचण्ड - दैत्य - दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥
 हिमाचल - सुतानाथ - संस्तुते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥

शत्रुओं का विनाश करो ॥ १२ ॥ हे देवि, मेरे शत्रुओं का नाश करो, मुझे बल दो, रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का नाश करो ॥ १३ ॥ हे देवि, मेरा कल्याण करो, मुझे विपुल सम्पत्ति दो, रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १४ ॥ हे भगवति, देवताओं तथा असुरों के शिरोरत्न के नमस्कार से तुम्हारे चरण घिसते रहते हैं । अतः हे अम्बिके ! तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का नाश करो ॥ १५ ॥ हे भगवति, तुम अपने भक्तों को विद्वान्, यशस्वी तथा लक्ष्मीवान् बनाओ । तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १६ ॥

बड़े-बड़े उद्धत दैत्यों के घमण्ड को चूर्ण करने वाली हे चण्डिके, मुझ शरणागत को तुम रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १७ ॥ हे चारभुजा वाली, ब्रह्मदेव से स्तुति की जाने वाली हे परमेश्वरी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥
 हिमाचल - सुतानाथ - संस्तुते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥
 इन्द्राणी पतिसद्भाव-पूजिते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥
 देवि प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्यदर्प-विनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥
 देवि भक्तजनोद्दाम-दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥

हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १८ ॥ हे भगवति, भगवान् विष्णु नित्य-निरन्तर तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ १९ ॥ भगवान् सदाशिव से स्तुति की जाने वाली हे परमेश्वरि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का विनाश करो ॥ २० ॥ इन्द्र के द्वारा शुद्ध भावना से पूजी जाने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ २१ ॥ अपने प्रचण्ड भुजाओं से दैत्यों के घमण्ड को चूर-चूर कर देने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ २२ ॥ अपने भक्त-जनका अत्यन्त आनन्द बढ़ानेवाली हे अम्बिके ! तुम मुझे रूप दो, जय दो,

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
 तारिणीं दुर्गसंसार - सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥
 इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
 स तु सप्तशतीसंख्या-वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥

इति दुर्गातन्त्रे श्रीदेव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

*

यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥२३॥ हे भगवति ! हमारी इच्छा
 के अनुकूल चलने वाली सुन्दर पत्नी मुझे प्रदान करो, जो उत्तम कुलमें
 उत्पन्न हुई हो तथा संसाररूपी सागर से पार करने वाली हो ॥२४॥

जो लोग इस अर्गला स्तोत्र का पाठ कर दुर्गासप्तशती का पाठ
 करते हैं, वे सप्तशती के पाठ के उत्तम फल को प्राप्त करते हैं तथा
 प्रचुर धनराशि भी भगवती की दया से उन्हें मिलती है ॥२५॥

इस प्रकार आचार्य-पण्डित श्री शिवदत्तमिश्र शालिकृत 'शिवदत्ती'
 हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्र में अर्गलास्तोत्र समाप्त ।

*

कीलकस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, महा-
 सरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे
 विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

विशुद्ध - ज्ञान - देहाय त्रिवेदी-दिव्यचक्षुषे ।
 श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥ १ ॥

सर्वमेतद् विज्ञानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ।
 सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥

विशेष—दुर्गा सप्तशती-द्वारा भगवती के अत्यन्त उदीप्त प्रभाव को देख-
 कर महर्षियोंने शाप से उसे कीलित कर दिया, अतः उस विघ्नरूपी कील को
 निवारण करने के लिए कीलक का पाठ अवश्य करना चाहिये ।

विनियोग—पूर्वोक्त प्रकार से यहाँ पर भी हाथमें जल लेकर
 'ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य०' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर
 जल छोड़ दे ।

मार्कण्डेयजी ने कहा—जिन भगवान् शङ्कर का विशुद्ध ज्ञान ही
 शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन नेत्र हैं, जो द्वितीया के चन्द्रमा
 को मस्तक में धारण किये हुए हैं तथा समस्त कल्याणके हेतुभूत हैं,
 मैं उन शंकर को नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ सप्तशती के पाठ करने-
 वालों को यह कीलक सप्तशती मन्त्रों का अंग ही जानना चाहिए ।
 अतः जो दुर्गा-सप्तशती के साथ इस कीलक का पाठ करते हैं उनका

सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
 एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति ॥ ३ ॥
 न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ।
 विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥
 समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।
 कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥
 स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
 समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६ ॥
 सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।
 कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥

सदैव कल्याण होता है ॥२॥ जो लोग कीलक के साथ दुर्गा-सप्तशती के स्तोत्रों से भगवती की स्तुति करते हैं, उनके उच्चाटन आदि सभी क्रियाएँ सिद्ध होती हैं और उन्हें दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति तथा भगवती की सिद्धि भी हो जाती है ॥ ३ ॥

कीलकपूर्वक सप्तशती का पाठ करने वाले पुरुष को किसी मन्त्र अथवा औषधि की आवश्यकता नहीं होती। उनके द्वारा किये गये समस्त उच्चाटनादि प्रयोग बिना जप के ही सिद्ध हो जाते हैं ॥ ४ ॥

अन्य मन्त्रों के जवादि से भी यदि अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है और दुर्गा सप्तशती के पाठ से भी मनोरथ की सिद्धि होती है तो दोनों में कौन-सा श्रेष्ठ है? लोगों की इस शंका को सामने रख कर भगवान् शंकर ने यही निर्णय किया कि दुर्गा सप्तशती स्तोत्र ही सबसे बढ़कर है ॥ ५ ॥ दुर्गासप्तशती का यथावत् पाठ करने वाले पुरुष के पुण्य की कभी समाप्ति नहीं होती। यह देखकर भगवान् शंकर ने दुर्गा सप्तशती के स्तोत्र को गुप्त कर दिया ॥ ६ ॥

जो कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या अष्टमी को समाहित एकाग्रचित्त

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिद्धयति ।
 इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥
 यो निष्क्रीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
 स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९ ॥
 न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ।
 नाऽपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥
 ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
 ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥

होकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, वे निश्चय ही कल्याण के भागी होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥८॥ जो भगवती को अपनी समस्त सम्पत्ति समर्पित कर दासरूप में पुनः उस सम्पत्ति का उपयोग करता है, भगवती उसके ऊपर निश्चय ही प्रसन्न होती हैं अन्यथा प्रसन्न नहीं होतीं। श्री महादेवजी ने इसी प्रकार के प्रतिबन्धक कील से (कृष्ण-पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को भगवती की प्रीति के लिए सारी सम्पत्ति समर्पित कर, पुनः भगवती की आज्ञा से उसका सदुपयोग करना) सप्तशती के फल को कीलित कर दिया है ॥८॥ जो लोग इस प्रकार के कीलक को करके नित्य ही दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, वे सिद्ध हो जाते हैं, देवी का पार्षद (पासमें रहनेवाला) तथा गन्धर्व (उत्तम गायकों की एक विशेष देवजाति) हो जाते हैं ॥ ९ ॥ सर्वत्र विचरते रहने पर भी उन्हें कभी कोई भय नहीं रहता। उनकी अपमृत्यु नहीं होती और वे मर जाने पर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ॥१०॥ इस कीलक को जानकर ही उसका परिहार कर, दुर्गा सप्तशती का पाठ करवा चाहिए। यदि कीलक को न जान कर दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जाता है तो उसका विनाश हो जाता है। अतः कीलक (फल का बिघ्न) तथा निष्क्रीलन (दुर्गा सप्तशती के फल के बिघ्न को

सौभाग्यादि च यत् किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।
तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुचकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ? ॥१४॥

इति दुर्गातन्त्रे श्रीभगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ।

*

वारण करने की प्रक्रिया) को जान कर ही दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए ॥ ११ ॥

स्त्रियों में सौभाग्य, सन्तति तथा स्थिर लक्ष्मी आदि जो कुछ भी बिखाई पड़ता है वह भगवती की प्रसन्नता का ही फल है, इसलिए भगवती को प्रसन्न करने के लिए इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए ॥ १२ ॥

इस स्तोत्र का मन्द स्वर से उच्चारण कर पाठ करने से स्वल्प सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, किन्तु उच्च स्वर से पाठ करने पर तो सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है । अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ करना चाहिए ॥ ३ ॥ जिस भगवती की प्रसन्नता से मनुष्य को ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, श्रेष्ठ सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है, उस जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते ? ॥१४॥
इस प्रकार 'शिवदस्ती' हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्र में कीलक-स्तोत्र समाप्त ।

*

नवार्णमन्त्र-जपविधिः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे न्यासे च विनियोगः ।
ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, सर्वाङ्गे ।

करादिन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

विनियोग—साधक को चाहिए कि वह कीलक के पाठ के अनन्तर दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ०' से लेकर 'जपे न्यासे च विनियोगः' पर्यन्त पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ।

ऋष्यादिन्यास—'ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः' पढ़कर मस्तक का, 'गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः' से मुख का, 'महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः' से हृदय का, 'ऐं बीजाय नमः' से गुप्तांग का, 'ह्रीं शक्तये नमः' से पैर का, 'क्लीं कीलकाय नमः' से नाभि का स्पर्श करे । तथा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः' पढ़कर सभी अंगों का स्पर्श करे ।

करादिन्यास—'ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' पढ़कर दोनों हाथों की

ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै
विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं
शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे
नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ
ह्रीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः,

तर्जनी अँगुलियों से अँगूठे का, 'ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः' पढ़कर अँगूठ
से तर्जनी अँगुलि का, 'ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः' से अँगूठे से मध्यमा
अँगुलियों का, 'ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः' से अँगूठे से अना-
मिका का, 'ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः' पढ़कर कानी अँगुलियों
का तथा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः'
पढ़कर हथेलियों एवं उनके पृष्ठभाग का स्पर्श करे ।

हृदयादिन्यास—'ॐ ऐं हृदयाय नमः' से हृदय का, 'ॐ ह्रीं शिरसे
स्वाहा' से शिर का, 'ॐ क्लीं शिखायै वषट्' से शिखा का, 'ॐ
चामुण्डायै कवचाय हुम्' से दोनों बाहुओं का, 'ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय
वौषट्' पढ़कर दोनों नेत्रों का स्पर्श करे । पुनः 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्' पढ़कर बायें हाथ की हथेली पर दायें
हाथ की अनामिका, मध्यमा अँगुलियों से ताली बजाये ।

अक्षरन्यास—'ॐ ऐं नमः, शिखायाम्' से शिखा का, 'ॐ ह्रीं
नमः, दक्षिणनेत्रे' से दाहिने नेत्र का, 'ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे' से बायें

वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यै नमः, वाम-
नासापुटे । ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्वे नमः, गुह्ये । एवं
विन्यस्याऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात् ।

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः । ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः । ॐ ह्रीं
दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः । ॐ ह्रीं प्रतीच्यै नमः ।
ॐ ह्रीं वायव्यै नमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ॐ
चामुण्डायै ऐशान्यै नमः । ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै
नमः । ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ।

नेत्र का, 'ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे' से दक्षिण कान का, 'ॐ मुं नमः,
वामकर्णे' से बायें कान का, 'ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे' से दाहिनी
नाक का, 'ॐ यै नमः, वामनासापुटे' से बायीं नाक का, 'ॐ विं नमः,
मुखे' से मुखक तथा 'ॐ च्वे नमः, गुह्ये' से गुप्तांग का स्पर्श करे ।
इस प्रकार न्यासकर मूलमन्त्र से आठ बार दोनों हाथों द्वारा मस्तक
से पैर तक समस्त अंगों का स्पर्श करे ।

दिङ्न्यास—'ॐ ऐं प्राच्यै नमः' पढ़कर पूर्व दिशा की ओर, 'ॐ
ऐं आग्नेय्यै नमः' से अग्निकोणमें, 'ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः' से दक्षिण
दिशामें, 'ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः' से नैऋत्य कोणमें, 'ॐ क्लीं प्रतीच्यै
नमः' से पश्चिममें, 'ॐ क्लीं वायव्यै नमः' से वायव्य कोणमें, 'ॐ
चामुण्डायै उदीच्यै नमः' से उत्तर दिशा में, 'ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै
नमः' से ईशान कोण में, 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै
नमः' से ऊपर की ओर तथा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं' पढ़कर नीचे की ओर
नमस्कार करे ।

ध्यानम्

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
 शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषाश्रिताम् ।
 नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाददशकां सेवे महाकालिकां
 यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥
 अक्ष-सक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
 दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
 शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
 सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
 घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकं
 हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्यप्रभाम् ।
 गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
 पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यादिनीम् ॥३॥
 ततः—‘ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः’ इति पठित्वा मालां
 सम्पूज्य, प्रार्थयेत् ।

माला-प्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ! ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥१॥

तत्पश्चात् ‘खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं’ से लेकर ‘शुम्भादि-
 दैत्यादिनीम्’ पर्यन्त श्लोक पढ़कर श्री भगवती दुर्गा का ध्यान करे ।

उसके बाद ‘ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः’ पढ़कर जपमाला

अविघ्नं कुरु माले ! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
 जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥ २ ॥
 तत्पश्चात्, ‘ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे’ इति नवार्ण-
 मन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत् । ततः—

गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
 सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥
 इति पठित्वा, देव्या वामकरे जपं निवेदयेत् ।

इति नवार्णमन्त्रजप-विधिः समाप्तः ।

*

का पूजन कर ‘ॐ मां माले महामाये’ से लेकर ‘प्रसीद मम सिद्धये’
 तक पढ़कर माला की प्रार्थना करे ।

पुनः ‘ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे’ इस नवार्ण मन्त्र का एक
 सौ आठ (१०८) बार जप करे । तथा ‘गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं’
 श्लोक पढ़कर एक आचमनी जल भूमि पर छोड़ते हुए देवीको जप
 समर्पित करे ।

इति नवार्णमन्त्रजप-विधिः समाप्तः ।

*

रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति-संहार-कारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि ! जननी परा ॥ ३ ॥
त्वयैतद्वार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत् पाल्यते देवि ! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ४ ॥

समस्त विश्व की अधीश्वरी, संसार की स्थिति, पोषण तथा संहार करने वाली, भगवान् विष्णु की अनुपमशक्तिस्वरूपा भगवती निद्रा की स्तुति ब्रह्मा जी करने लगे ॥ १ ॥

ब्रह्माजी ने कहा—हे देवि ! तुम स्वाहा (देवताओं को हवि पहुँचाने वाली), स्वधा (पितरों को श्राद्ध, तर्पण आदि से तृप्त करने वाली), वषट्कार तथा स्वर (अकारादि) स्वरूप हो। तुम्हीं सुधा (प्राणशक्ति को जाग्रत् करने वाली), अक्षररूपेण विराजमान रहने वाली हो, नित्य हो तथा प्रणव में अकार, उकार, मकार आदि तीन मात्राओं से विराजमान रहने वाली हो ॥ २ ॥ इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त बिन्दुरूपेण विराजमान अर्धमात्रा तुम्हीं हो, जिसका उच्चारण नहीं किया जा सकता। तुम्हीं सन्ध्या तथा सावित्री हो तथा तुम्हीं पराम्बा हो ॥ ३ ॥ हे देवि ! तुम्हीं इस ब्रह्माण्ड को धारण, सृजन तथा पालन करने वाली हो तथा कल्पान्त में इस

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय-विभाविनी ।
कालरात्रि - महारात्रि - मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी परिघायुधा ॥ ९ ॥
सौम्या सौम्यतराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
पराऽपराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥

सृष्टि का संहार करने वाली हो ॥ ४ ॥ हे जगन्मये ! तुम जगत् की सृष्टि करने के समय सृष्टिस्वरूपा, पालन के समय स्थितिरूपा तथा संहार-काल में संहतिरूपा हो ॥ ५ ॥ हे देवि ! तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहस्वरूपा, महादेवी तथा महासुरी हो ॥ ६ ॥ सत्त्व, रज तथा तम गुणों को प्रकट करने वाली, सबकी प्रकृति तुम्हीं हो, भयंकर कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि भी तुम्हीं हो ॥ ७ ॥

हे माँ ! तुम्हीं श्री, ईश्वरी तथा ह्री हो, ज्ञान देने वाली बुद्धि भी तुम्हीं हो। तुम्हीं लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति तथा क्षान्ति हो ॥ ८ ॥ तुम्हीं खड्गधारिणी, त्रिशूलधारिणी, घोरस्वरूपा, गदा, चक्र, शङ्ख, धनुष, बाण, भुशुण्डी तथा परिघ धारण करने वाली हो ॥ ९ ॥ हे माँ, तुम सौम्य तथा सौम्यतर हो, संसार में जितने सुन्दर पदार्थ हैं

यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्राऽखिलात्मिके ।
 तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥११॥
 यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत् पात्यति यो जगत् ।
 सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोबुमिहेश्वरः ॥१२॥
 विष्णुः शरीग्रहणमहममीशान एव च ।
 कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥१३॥
 सा त्वमित्थं प्रभावेः स्वैरुदारैर्देवि ! संस्तुता ।
 मोहयंतौ दुराधर्षासुरौ मधु-कैटभौ ॥१४॥
 प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामन्युतो लघु ।
 बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥
 इति दुर्गातन्त्रे रात्रिसूक्तं समाप्तम् ।

उन सबसे कहीं अधिक तुम सुन्दरी हो। पर और अपर से पृथक् रहने वाली परमेश्वरी भी तुम्हीं हो ॥ १० ॥
 हे जगन्मयी ! इस जगत् में जो भी सत्, असत् वस्तु दिखाई पड़ती है उसकी शक्ति तुम्हीं हो, अतः मैं तुम्हारी क्या स्तुति कर सकता हूँ ? ॥११॥ हे माँ ! जगत् की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाले महाविष्णु को भी तुमने निद्रा के वश में कर रखा है, अतः मैं तुम्हारी क्या स्तुति कर सकता हूँ ॥ १२ ॥ मुझको, शंकर तथा भगवान् विष्णु को भी तुमने ही धारण किया है अतः तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है ॥ १३ ॥ हे देवि ! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसा के योग्य हो। अतः इन दुराधर्ष मधु, कैटभ राक्षसों को तुम मोहित करो ॥ १४ ॥ हे मातः ! जगत् के स्वामी इन महाविष्णु को शीघ्र ही जगा दो और इनमें उन राक्षसों के मारने की बुद्धि उत्पन्न करो ॥ १५ ॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्रिकृत 'शिवदत्तो'
 हिन्दी टीका सहित दुर्गातन्त्रमें रात्रिसूक्त समाप्त ।

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
 नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥
 रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
 ज्योत्स्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥
 कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
 नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥
 दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
 ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥
 अतिसौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
 नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥

देवताओं ने कहा—देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सदैव नमस्कार है। प्रकृति और भद्रा को नमस्कार है, हम लोग भगवती जगदम्बा को नियम पूर्वक नमस्कार करते हैं ॥ १ ॥ रौद्रा को नमस्कार है, नित्या, गौरी एवं धात्री को हमारा बारम्बार नमस्कार है। चन्द्रिका तथा चन्द्रस्वरूपिणी को हमारा नमस्कार है, सुखस्वरूपा को हमारा नमस्कार है ॥ २ ॥ हम लोग शरणागत को कल्याण, वृद्धि तथा सिद्धि देने वाली भगवती को नमस्कार करते हैं। राक्षसों तथा राजाओं में लक्ष्मी स्वरूपेण वर्तमान भगवती शिवा को हम नमस्कार करते हैं ॥ ३ ॥ दुर्गा, दुर्ग संकट से पार करने वाली, जगत् की सारभूता, सर्वकारिणी, ख्याति कृष्णा तथा धूम्रा को नमस्कार है ॥ ४ ॥ अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्र को हम लोग

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १० ॥
 या देवी सर्वभूतेषु छाया रूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ११ ॥

नमस्कार करते हैं । जगत् की आधारभूता तथा जगत्-कारिणी को हमारा नमस्कार है ॥ ५ ॥ जो देवी समस्त प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से कही जाती है, उसे नमस्कार है, नमस्कार है, उसे बार-बार नमस्कार है ॥ ६ ॥ जो देवी समस्त प्राणियों में चेतनारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, उन्हें नमस्कार है, फिर उन्हें नमस्कार है ॥ ७ ॥ जो देवी समस्त प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ ८ ॥ जो देवी समस्त प्राणियों में निद्रारूपेण अवस्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है, उन्हें पुनः-पुनः नमस्कार है ॥ ९ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में क्षुधारूपेण स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १० ॥ जो देवी सभी प्राणियों में छाया रूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ ११ ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १२ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १३ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १४ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १५ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १७ ॥

जो देवी सभी प्राणियों में शक्तिस्वरूप से विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है, फिर भी उन्हें नमस्कार है ॥ १२ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में तृष्णारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १३ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में शान्ति (क्षमा) स्वरूपेण विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १४ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में जाति रूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १५ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में लज्जारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १६ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में शान्तिस्वरूप से विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
 या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमो नमः ॥१९॥
 या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
 या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥
 या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
 या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥

नमस्कार है ॥ १७ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥१८॥ जो देवी सभी प्राणियों में कान्तिस्वरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ १९ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में लक्ष्मी-स्वरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा फिर भी उन्हें नमस्कार है ॥२०॥ जो देवी समस्त प्राणियों में वृत्तिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें बार-बार नमस्कार है ॥ २१ ॥ जो देवी समस्त प्राणियों में स्मृतिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें बार-बार नमस्कार है ॥ २२ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में दयारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
 या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
 या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥
 इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाऽखिलेषु या ।
 भूतेषु सत्ततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥
 चित्तिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥
 स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्
 तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।

है ॥२३॥ जो देवी सभी प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें पुनः-पुनः नमस्कार है ॥२४॥ जो देवी सभी प्राणियों में मातृरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, उन्हें नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ २५ ॥ जो देवी सभी प्राणियों में भ्रान्तिरूप से विद्यमान हैं, उन्हें नमस्कार है, उन्हें नमस्कार है तथा उन्हें बार-बार नमस्कार है ॥२६॥ जो देवी समस्त प्राणियों में इन्द्रियों के अधिष्ठातृरूपेण विराजमान तथा समस्त भूतों में व्याप्त हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥२७॥ जो देवी इस समस्त संसार में ज्ञानरूप से व्याप्त होकर स्थित हैं, उन्हें बारम्बार नमस्कार है ॥२८॥

देवताओं ने अपने अभीष्ट की प्राप्ति हो जाने से जिनकी स्तुति

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२९॥

या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥३०॥

इति दुर्गातन्त्रे देवीसूक्तं समाप्तम् ।

*

की थी तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिस परमेश्वरी की सेवा की थी, परम कल्याण की साधनभूता वह ईश्वरी हमारा मङ्गल करें तथा हमारे समस्त आपत्तियों को दूर करे ॥२९॥ इस समय प्रचण्ड दैत्यों से सताये गये हम देवतागण जिस परमेश्वरी को नमस्कार करते हैं तथा जो भक्तिपूर्वक स्मरण किये जाने पर अपने भक्तों के संकट को तत्क्षण दूर कर देती हैं, वही ईशा (जगदम्बा) हमारे समस्त संकटों को दूर करें ॥ ३० ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित दुर्गा-तन्त्र में देवीसूक्त समाप्त ।

❀

शक्रादि-स्तुतिः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदा मौलिवद्वेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

शक्रदायः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन् दुरात्मनि सुरारिवले च देव्या ।

तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारुदेहाः ॥ २ ॥

व्यान—जिन देवी को चारों ओर से देवगण घेरे रहते हैं, जिनकी सेवा-शुश्रूषा में अभीष्ट सिद्धि चाहने वाले व्यक्ति सदैव सन्नद्ध रहते हैं, उन 'जया' नामधारिणी दुर्गा देवी की उपासना करनी चाहिए । उनके शरीरांग का वर्ण श्यामघन के सदृश श्याम रंग का है । उनके दृष्टिपात से ही शत्रु-समुदाय भयातुर हो जाता है, उनके ललाट पर चन्द्रमा की बद्धरेखा शोभित होती है । उनके कर-कमलों में शंख, चक्र, खड्ग और त्रिशूल आदि विभूषित हैं । वे ही त्रिनेत्रा देवी अपने वाहन सिंह पर आरुढ़ होकर अपने प्रभाव से त्रिभुवन को आच्छादित कर रही हैं ।

ऋषि ने कहा—॥१॥ अत्यन्त बलवान् दुरात्मा दानव महिषासुर तथा उसकी आसुरी सेना का भगवती के हाथों विध्वंस होने पर इन्द्रा-

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
 निशेष - देवगण - शक्तिसमूह-मूर्त्या ।
 तामम्बिकामखिल - देव - महर्षि - पूज्यां
 भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सानः ॥ ३ ॥
 यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
 ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
 सा चण्डिकाऽखिल-जगत्परिपालनाय
 नाशाय चाऽशुभभयस्य मर्ति करोतु ॥ ४ ॥
 या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
 पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
 श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
 तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥

दिक देवता भूमिष्ठ हं कर देवी दुर्गा की स्तुति करने लगे । इस समय प्रसन्नतावश उनके मनोहर अंगों में रोमांच का संचार हो रहा था ॥ २ ॥ देवी ने कहा—आपका स्वरूप ही सब देवों की शक्ति है, अपनी शक्ति से आपने समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा है, आप सभी देवों और महर्षियों के द्वारा अत्यन्त पूजनीया हैं । हे जगदम्बा ! हम सब मिलकर आपको भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं । आप हम सबों का मंगल करें ॥ ३ ॥ जिन देवी के अद्वितीय प्रभाव तथा उनके पराक्रम का बखान करने में भगवान् शेषनाग, ब्रह्मा और शिवजी सर्वथा असमर्थ हैं, वे ही भगवती चण्डिका समग्र सृष्टिका पालन एवं अकल्याणकारी भय के निवारण का उपाय करें ॥ ४ ॥ जो धर्मपरायण पुरुषों के गृह में लक्ष्मी रूप से, दुराचारियों के यहाँ अलक्ष्मी रूप से,

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
 किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
 किं चाहवेषु चरितानि तवाऽद्भुतानि
 सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥
 हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
 न ज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा ।
 सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
 मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥
 यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
 तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।

विशुद्ध अन्तःकरण वालों के यहाँ हृदय में स्थित बुद्धिरूप से, सज्जनों में श्रद्धा रूप से तथा कुलीन जनों में लज्जा रूप से निवास करती हैं, उन महामाया भगवती दुर्गा को हम सब प्रणाम करते हैं । हे देवि ! आप समस्त जगत् का पालन कीजिए ॥ ५ ॥ हम आपके इस अचिन्त्य रूप, असुरों के विध्वंसक शौर्य तथा सम्पूर्ण देवासुरों के समक्ष प्रादुर्भूत हुए अद्भुत चरित्र का वर्णन नहीं कर सकते ॥ ६ ॥ सृष्टि की उत्पत्ति में आप ही कारण स्वरूप हैं । आपमें तीनों गुण (सत्त्व, रज, तम) अवस्थित हैं, फिर भी आपका सम्पर्क दोषों से नहीं होता है । आपकी महिमा को भगवान् विष्णु और शिवजी भी नहीं जान सकते । यह चराचर जगत् आप का ही अंश है, आप ही प्राणिमात्र के लिए आधारभूत हैं, क्योंकि आप ही एकमात्र सब की मूलभूत अव्याकृता परा प्रकृति हैं ॥ ७ ॥

हे देवि ! यज्ञों में जिसके उच्चारण से सभी देवों को परितृप्ति

स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-

रुच्यार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-

मभ्यस्यसे मुनियतेन्द्रिय-तत्त्वसारैः ।

मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त-समस्त-दोषै-

र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥

शब्दात्मिका सुविमलग्र्यजुषां निधान-

मुद्गीथ-रम्य-पदपाठवतां च साम्नाम् ।

देवी त्रयी भगवती भवभावनाय

वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥

होती है, वह 'स्वाहा' आप ही हैं । इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्तिदायिनी हैं, अतएव सभी जन आपको 'स्वधा' के नाम से अभिहित करते हैं ॥ ८ ॥ हे देवि ! आप ही वह परा विद्या हैं, जिससे मोक्षलाभ, अचिन्त्य महाव्रतस्वरूपता, सम्पूर्ण दोषराहित्य, जितेन्द्रियत्व और तत्त्व की सारता प्राप्त होती है तथा समस्त मुनिजन जिनके लिए सतत अभ्यासरत रहते हैं ॥ ९ ॥

आप शब्दस्वरूपा, अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा उद्गीथ (एक प्रकार का वैदिक, जो छन्द के रूप में गान किया जाता है) के मनमोहक पाठ से युक्त पद्यरूपमें सामवेद की आधार हैं । आप ही देवी, त्रय-वेद और छहों ऐश्वर्य से युक्त भगवती हैं । सृष्टि की उत्पत्ति एवं पालन के निमित्त आप ही वार्त्ता (कृषि एवं जीविका)

मेधासि देवि ! विदिताखिलशास्त्रसारा ।

दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।

श्रीः कैटभारि-हृदयैक-कृताधिवासा

गौरी त्वमेव शशिमौलिकृत-प्रतिष्ठा ॥ ११ ॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-

बिम्बानुकारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम् ।

अत्यद्भुतं ग्रहतमात्तरुषा तथाऽपि

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥

दृष्ट्वा तु देवि ! कुपितं भ्रुकुटीकराल-

मुद्यच्छशाङ्क-सदृशच्छवि यन्न सद्यः ।

प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं

कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥

के रूप में प्रादुर्भूत हुई हैं । आप ही जगत् के महान् क्लेश की नाशकर्त्री हैं ॥ १० ॥ हे देवि ! सम्पूर्ण शास्त्रों का तत्त्वज्ञान की उपलब्धि के निमित्त आप ही मेधा शक्ति हैं, इस दुस्तर भव-सागर से तारने वाली नौका स्वरूपिणी आप ही दुर्गा देवी हैं । आप सदैव ही निरासक्त हैं । आप ही कैटभ के शत्रु विष्णु भगवान् के वक्षमें निवास करने वाली तथा शिव द्वारा आदृत गौरी देवी भी हैं ॥ ११ ॥ आपका मुख-कमल मधुर त्रास्य युक्त, स्वच्छ पर्ण चन्द्र की बिम्ब के सदृश और उत्तम स्वर्ण मनोरम आभा से प्रतिभासित है, फिर भी आपके इस अनुगम रूप-राशि को देखकर दानव महिषासुर ने क्रोधपूर्वक आप पर आक्रमण कर दिया, यह घटना अतीव आश्चर्य-जनक है ॥ १२ ॥ हे देवि ! वही मुख क्रोध की मुद्रा में जब उदयकालीन

देवि ! प्रसीद परमा भवती भवाय
 सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
 विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
 न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥
 ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
 तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
 धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा
 येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥
 धर्म्याणि देवि ! सकलानि सदैव कर्मा-
 ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृतीं करोति ।

चन्द्र के सदृश रक्ताभ तथा वक्र भृकुटी के कारण भयानक हो उठा, तब उस विकराल रूपको देखकर महिषासुर का सहसा प्राण नहीं निकल गया, यह और भी अधिक आश्चर्यान्वित बात है। क्योंकि, कुपित यमराज के सामने ऐसा कौन प्राणधारी है जो जीवन धारण में समर्थ हो ॥ १३ ॥ हे परमात्मस्वरूपा देवि ! आप प्रसन्न हों, आपके प्रसन्न होने पर ही इस विश्व का कल्याण होता है एवं क्रुद्ध होने पर कितने ही कुलों का क्षय हो जाता है, यह बात अनुभव द्वारा प्रत्यक्ष देखने में आयी है। महिषासुर की विशाल दानवी सेना आपके क्रोधानल में क्षणभर में ही भस्मसात हो उठी ॥ १४ ॥ आप सदैव ही अभ्युत्थानकर्त्री हैं, जिन लोगों पर आपकी कृपादृष्टि रहती है, वे ही लोग देश में सम्मानित, धन-सम्पन्न और ख्यातिलब्ध होते हैं। उन लोगों का धर्म कभी शिथिलता को प्राप्त नहीं होता तथा वे ही अपने स्त्री, पुत्र एवं अनुचरादि के साथ रहकर जगत् में कृतकृत्य होते हैं ॥१५॥ हे देवि ! धार्मिक पुरुष आप की ही कृपा से सदैव

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादात्
 लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१६॥
 दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
 स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
 दारिद्र्य-दुःख-भयहारिणि का त्वदन्या
 सर्वोपकारकराय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥
 एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
 कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
 संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
 मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥
 दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
 सर्वसुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।

श्रद्धान्वित होकर धर्माचरण में रत रहता है, जिसके फलस्वरूप उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। एतदर्थं निश्चय ही, आप त्रैलोक्य को अभीप्सित फल प्रदान करती हैं ॥१६॥ हे माँ दुर्गे ! आपके स्मरण मात्र से ही सब प्राणियों के भय का विमोचन होता है एवं स्वस्थ प्राणियों द्वारा आपका ध्यान करने पर उन्हें आप मंगलदायक बुद्धि प्रदान करती हैं। हे दुःख-दारिद्र्य और भयहारी देवि ! आपका चित्त परोपकारार्थ सदैव द्रवीभूत रहा करता है, तुम्हारे समान जगत् में दूसरा ऐसा कौन है ? ॥१७॥ हे देवि ! जो राक्षसगण नरकवास करने के लिए अनन्त काल तक दुराचार करते रहे, उन्हें युद्ध में वध करके स्वर्गलाभ कराने तथा संसार को सुखी बनाने के निमित्त ही आप उनका वध करती हैं ॥१८॥ आप अपने शत्रुओं पर शस्त्र क्यों चलाती

लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
 इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१९॥
 खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः
 शूलाप्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
 यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
 योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥
 दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
 रूपं तथैतद्विचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
 वीर्यं च हन्तु हतदेवपराक्रमाणां
 वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥
 केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
 रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।

हैं ? आप में अपने दृष्टिपातसे ही दानव-समुदाय के भस्म कर देने की क्षमता है, फिर भी आप ऐसा न करके रणस्थल में उनका वध करती हैं। इस बात में भी कोई रहस्य निहित है। अनुमानतः वह यही है कि वे सब मेरे शस्त्रों से पुनीत होकर स्वर्गारोहण करें, इस प्रकार उन दुरात्माओं के प्रति भी आपके उत्तम विचार होते हैं ॥१९॥ उन असुरों की आँखें खड्ग की भयंकर दीप्ति और त्रिशूल की घनीभूत कान्ति से चौंधिया जाने पर भी प्रकाशहीन नहीं हुई, क्योंकि वे सब आपके आनन्ददायक मुखचन्द्र का अवलोकन कर रहे थे। २०॥ हे देवि ! आपका शील पापात्माओं के असद्व्यवहार का निवारक है। आपका स्वरूप चिन्तनातीत एवं अतुलनीय है, आपका शौर्य देवताओं के विजेता दानवों का संहारक है। इस प्रकार आपने सदैव अपने शत्रुओं पर दया-दृष्टि ही की है ॥२१॥ हे वरदायिनी

चित्रे कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
 त्वय्येव देवि ! वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२२॥
 त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
 त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
 नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
 मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥२३॥
 शूलेन पाहि नो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
 घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२४॥
 प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
 भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥
 सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
 यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२६॥

देवि ! आपके शौर्य की समता कहीं भी नहीं हो सकती, शत्रुओं का त्रासक एवं मनमोहक रूप अन्यत्र कहाँ दिखाई पड़ सकता है ? हृदय में कोमलता एवं युद्ध में निर्दयता—ये दोनों बातें एक साथ होने का भाव आपके अतिरिक्त त्रैलोक्य में अन्यत्र नहीं दीखती ॥२२॥ हे खगदम्बे ! शत्रुओं का वध करके आपने उन्हें अमरपद की प्राप्ति कराई है, उनसे प्राप्त होनेवाला हमलोगों का भय भी दूर किया है, इसलिए आपको हम सबों का प्रणाम है ॥२३॥ हे देवि ! आप शूल के द्वारा हमारी रक्षा करें। हे अम्बिके ! आप अपने खड्ग, घण्टा ध्वनि और घनुष की टंकार से हमारी रक्षा करें ॥२४॥

हे चण्डिके ! आप हमारा पूर्व, पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर में आप अपने त्रिशूल को घुमा कर मेरा त्राण करें ॥२५॥ आपके जो

खड्गशूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥

ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥
भक्त्या समस्तैर्द्विदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता ।
ग्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥३०॥

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

त्रियतां त्रिदशः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥३२॥

परम मुग्धकारी और भीषण रूप त्रैलोक्य में दृश्यमान हो रहे हैं, उनके द्वारा आप हमारी तथा भूतल की रक्षा कीजिए ॥२६॥ हे अम्बिके ! आपके कर-कमलों में शोभा पाने वाले खड्ग, शूल, गदा आदि जो भी आयुध हों, उन सभी के द्वारा आप हम सबों की रक्षा करें ॥२७॥

ऋषि ने—कहा ॥२८॥ इस प्रकार समस्त देवगणों ने उन जगन्माता का समवेत स्वर में स्तुति-गान किया तथा नन्दनवन (इन्द्रपुरी का बगीचा) के दिव्य पुष्पों और गन्ध-चन्दनादि के द्वारा पूजन किया ॥२९॥ इसके बाद देवों ने उन्हें दिव्य धूपों की सुगन्धि से सुगन्धित किया । देवी ने करबद्ध प्रणाम करते हुए उन देवों से कहा ॥३०॥

देवी बोलीं—॥ ३१ ॥ हे देवगण ! तुम लोग मुझसे अपना अभिलषित पदार्थ माँग लो ॥ ३२ ॥

देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥३४॥

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।
यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ! ॥३५॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३६॥
तस्य वित्तद्विविभवेर्धन-दारादि-सम्पदाम् ।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३७॥

ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ! ॥३९॥

उनके उत्तर में देवों ने कहा—॥३३॥ हम लोगों की समस्त अभिलाषाएँ भगवती की कृपा से पूरी हो गयी हैं, अब कुछ भी कामना शेष नहीं है ॥३४॥ हे महेश्वरि ! आपने हमारे परम शत्रु महिषासुर का संहार किया है, फिर भी यदि आप हमलोगों को कुछ और देना चाहती हैं तो मेरी यही कामना है ॥३५॥ कि जब भी हम आपका स्मरण करें, आप दर्शन देकर हम सबों के कष्ट का निवारण करें । हे प्रसन्नवदना अम्बिके ! जो भी मनुष्य इन स्तोत्रों के द्वारा आपका गुणानुवाद करे, उसे आप धन-धान्य एवं स्त्री-पुत्रादि से पूरित करें तथा हम लोगों पर सदैव प्रसन्नता की दृष्टि रखें ॥३६-३७॥

ऋषि ने कहा—॥३८॥ हे राजन् ! देवताओं ने अपने तथा विश्व की शान्ति के लिए जब भद्रकाली देवी को स्तुति द्वारा प्रसन्न किया, तब वे 'तथाऽस्तु' कहकर वहीं अन्तर्धान हो गयीं ॥३९॥

इत्येतत् कथितं भूप ! सम्भूता सा यथा पुरा ।
 देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥
 पुनश्च गौरीदेहात् सा समुद्भूता यथाऽभवत् ।
 वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भ-निशुम्भयोः ॥४१॥
 रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।
 तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत् कथयामि ते
 ॥ ह्रीं ॐ ॥४२॥

इति दुर्गातन्त्रे श्रीमार्कण्डेय-पुराणोक्ता शक्रादि स्तुतिः समाप्ता ।

*

हे राजन् ! प्राचीनकाल में त्रिलोक्य हितकारिणी देवी, देवों के शरीरांश से जिस प्रकार प्रकट हुई थीं वह सब कथा मैंने तुम्हें बतला दी ॥४०॥ तत्पश्चात् देवों की हितैषिणी देवी दुष्ट दैत्यों तथा शुम्भ एवं निशुम्भ नामक दानवों के संहार के लिए जिस प्रकार गौरी देवी के अंगों से प्रादूर्भूत हुई थीं, उनका वर्णन अब मैं तुम्हें सुनता हूँ ॥ ४१-४२ ॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र आसन्नोक्त 'शिवदत्ती'
 हिन्दी टीका सहित दुर्गा-तन्त्रमें शक्रादि-स्तुति समाप्त ।

*

सिद्ध-कुञ्जिका-स्तोत्रम्

शिव उवाच—

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
 येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥ १ ॥
 न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
 न सूक्तं नाऽपि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥ २ ॥
 कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
 अति गुह्यतरं देवि ! देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिर्वि पार्वति ! ।
 मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
 पाठमात्रेण सांसद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

भगवान् शंकर ने पार्वती से कहा—हे देवि ! मैं इस उत्तम कुञ्जिकास्तोत्र का वर्णन करता हूँ । जिस कुञ्जिका मन्त्र के प्रभाव से ही चण्डी (दुर्गा) पाठ का पूर्ण फल प्राप्त होता है ॥ १ ॥ कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य-देवीसूक्त, रात्रिसूक्त, प्रथम, मध्यम, उत्तम चरित्र के ध्यान न्यास, पूजन आदि जो कि दुर्गासप्तशतीपाठ के लिए अत्यावश्यक हैं, ये सभी केवल कुञ्जिका स्तोत्र के पाठ मात्र से ही दुर्गासप्तशती पाठ का फल प्राप्त होता है । हे देवि ! यह कुञ्जिका स्तोत्र अत्यन्त गोपनीय एवं देवताओं के लिए भी दुर्लभ है ॥ ३-३ ॥ अतः हे पार्वती ! अपने गुप्तांग के समान इसे गुप्त ही रखना चाहिए । इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठ मात्र से ही मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन तथा उच्चाटन आदि सभी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

मन्त्रः-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ॐ ग्लौं हुं
क्लीं जूं सः ज्वालय-ज्वालय ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल ऐं ह्रीं
क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।

नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ १ ॥

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भाऽसुरघातिनि ॥ २ ॥

जाग्रतं हि महादेवि ! जपं सिद्धं कुरुष्व मे ।

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥ ३ ॥

क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥ ४ ॥

विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ५ ॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि ! शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥ ६ ॥

मन्त्र - 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे०' से लेकर 'हं सं लं क्षं फट् स्वाहा' तक कुञ्जिका मन्त्र है ।

कुञ्जिकास्तोत्र—शिवस्वरूपिणी, मधु-कैटभनाशिनी, महिषा-सुरघातिनी और शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्य को नष्ट करनेवाली, आपको नमस्कार है ॥ १-२ ॥ हे महादेवि ! आप मेरे जप को सिद्ध करें । आप ऐं रूप से जगत् की उत्पत्ति, ह्रीं रूप से पालन, क्लीं रूप से संहार करने वाली, चामुण्डा रूप से चण्ड नामक दैत्य का वध करने वाली, यै स्वरूप से भक्तों को अभीष्ट वर देने वाली तथा विच्चे रूप से अभय प्रदान करने वाली, त्वार्ण मन्त्र स्वरूप वाली, हे जगदम्बा ! आप को नमस्कार है ॥ ३-५ ॥

धां धीं धूं स्वरूप धूर्जटी (शंकर) की पत्नी, वां वीं वूं स्वरूप

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं ।

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरुकुरु स्वाहा ।

पां पीं पूं पार्वतीपूर्णां खां खीं खूं खेचरी तथा ।

म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्ण-कुञ्जिकायै नमो नमः ।

सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ८ ॥

वाग् (वाणी) की अधीश्वरी सरस्वती, क्रां क्रीं क्रूं रूपिणी कालिका, शां शीं शूं स्वरूपिणी शान्ति देवी मेरा कल्याण करें ॥ ६ ॥

हुं हुं स्वरूपवाली हुंकाररूपिणी देवी, जं जं जं रूपिणी जम्भनादिनी देवी तथा भ्रां भ्रीं भ्रूं स्वरूपवाली भैरवी, भद्रा तथा भवानी आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७ ॥ 'अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं' से 'कुरु कुरु स्वाहा' तक पाठ करे । पां पीं पूं स्वरूपिणी पार्वती, पूर्णा, खां खीं खूं रूपिणी खेचरी एवं म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्णरूपिणी कुञ्जिका देवी को नमस्कार है । तथा सां सीं सूं स्वरूपवाली दुर्गासप्तशती के समस्त मन्त्रों की सिद्धि हे देवि ! मुझे प्राप्त हो ॥ ८ ॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागतिहेतवे ।
 अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ! ॥ ९ ॥
 यस्तु कुञ्जिकाया देवि ! हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
 न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ १० ॥

इति दुर्गातन्त्रे रुद्रयामलस्थ-गौरीतन्त्रे शिव-पार्वती-संवादे
 सिद्धकुञ्जिका-स्तोत्रं समाप्तम् ।

*

फलश्रुति—इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठ मात्र से ही दुर्गासप्तशती के समस्त मन्त्र सिद्ध होते हैं । हे पार्वती ! इस गुप्त स्तोत्र का रहस्य नास्तिक अर्थात् शास्त्र में अश्रद्धालु जनों के लिए नहीं बताना चाहिए ॥ ९ ॥

हे देवि ! जो इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठ बिना दुर्गासप्तशती का पाठ करता है, उसे अरण्य (जंगल) में रोदन के समान सिद्धि प्राप्त नहीं होती अर्थात् उसका सप्तशती पाठ व्यर्थ सिद्ध होता है ॥ १० ॥

इस प्रकार आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्री-कृत दुर्गातन्त्र में
 सिद्ध-कुञ्जिकास्तोत्र की 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका समाप्त ।

*

दुर्गोपनिषत्

सर्वं देवा देवीमुपतस्थुः । काऽसि त्वं महादेवि ? साऽब्रवीदहं
 ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृति-पुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाऽशून्यं
 च अहमानन्दावानन्दौ । अहं विज्ञानाऽविज्ञाने । अहं ब्रह्माणी
 वेदब्रह्मणि वेदितव्ये, इति चाथर्वणी श्रुतिः । अहं पञ्चभूतानि
 अहं पञ्चतन्मात्राणि । अहमखिलं जगत्, वेदोऽहमवेदोऽहम्, विद्या-
 ऽहमविद्याऽहम्, अजाऽहमनजाहम्, अभश्चोद्ध्वं च तिर्यक् चाऽहम् ।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः । अहं
 मित्रावरुणावुभौ विभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ । अहं
 सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं सन्दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माण-
 सुत्प्रजापतिं दधामि । द्रविणं हविष्मते सुप्रजाय यजमानाय सुन्वते ।
 अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं
 सुवेर्यः पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद
 स देवीपदमाप्नोति ।

ते देवा अब्रुवन्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलमुपजुष्टाम् ।

दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशयते तमः ।

देवीमम्बामजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्त्रेऽपमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुष सुष्टुतैतु ॥

कालरात्रीं वापस्तुतानां तां वैष्णवीं स्कन्दमातरं सरस्वती-
मदिति दक्षदुहितरं नमाम्यहं पावनां शिवाम् ।

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी
प्रचोदयात् ।

अदितिहजनिष्ट दक्षया दुहिता तव ।

तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृत बन्धवाः ॥

कामे योनिः कमलवेत्रपाणिगुहाहस्ता मातरिश्वाशमिन्द्रः
पुनर्गेहा सफला मायया चापृथुकेन विश्वमातादि विद्या ।

एषाऽऽत्मा शक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशा-ऽङ्कुश-
धनुर्वाणधरा, एषा श्रीमहाविद्या य एवं वेद स शोक तरति ।

नमस्ते भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः । सैषाऽष्टौ वसवः,
सैषा एकादश रुद्राः, सैषा द्वादशादित्याः, सैषा विश्वेदेवाः,
सोमपा असोमपाश्च, सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा
यक्षसिद्धाः, सैषा सत्त्व-रजस्तमांसि, सैषा ब्रह्म-विष्णु-रुद्ररूपिणी,
सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः, सैषा ग्रह-नक्षत्र-ज्योतीर्षि कलाकाष्ठादीनि
भस्मरूपिणी तामहं प्रणतोऽस्मि ।

नित्यापहारिणी देवी शक्ति-शक्तिप्रदायिनी ।

अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शुभाम् ॥ २ ॥

वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।

अर्द्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ ३ ॥

एवमेकाक्षरं मन्त्रं क्रतवः शुद्धचेतसः ।

ध्यायन्ति परमानन्दं मया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ ४ ॥

वामा या ब्रह्मभूतस्मात्पृथक्त्रसमन्वितम् ।

सूर्यो वामश्रोत्रविन्दुः संयुक्ताष्टातृतीयकः ॥ ५ ॥

नारायणेन सम्मित्रो सावाद्यश्चाधरयुक्तयः ।

विधे नवार्णकोणः स्यान्महानन्दप्रदायकः ॥ ६ ॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।

पाशाङ्कुशधरां सौम्यवरदाभयहस्तकाम् ॥ ७ ॥

त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहां भजे ।

भजामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ।

महादारिद्र्यशमनी महारूपास्वरूपिणी ॥ ८ ॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अनन्ता ।

यस्या गृह नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्यम् । यस्या
जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा । एकेव सर्वत्र वर्तते
तस्मादेका । एकैकविश्वरूपिणी तस्मादनेका । अनन्ततपोवाच्य-
ज्ञेयानन्तालक्ष्याजैकानेकानमन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां
ज्ञानरूपिणी ।

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।

यस्याः परतरं नास्ति सैवा दुर्गा प्रकाशिता ॥ ९ ॥

तां दुर्ग-दुर्गमां देवीं दुराचारविधायिनीम् ।
 नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥१०॥
 य इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चार्थर्वशीर्षफलमाप्नोति ।
 इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं जप्त्वा
 नार्चाशुद्धिं च विन्दति ।

शतमष्टोत्तरं चाऽस्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापः प्रमुच्यते ॥ ११ ॥

महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ १२ ॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः
 प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीय-सन्ध्यायां वा जप्त्वा
 वाक्-सिद्धिर्भवति । नूतना यां प्रतिमासन्निधौ जप्त्वा देवता-
 सान्निध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा देवता भवति ।
 भौमाऽश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति,
 महामृत्युं तरति य एवं वेद ।

इति दुर्गातन्त्रे देव्या अथर्वशीर्षोपनिषत् समाप्ता ।

*

सप्तशती-बीजमन्त्राः

प्रथमोऽध्यायः

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे १०८ । ॐ बीजत्रयायै
 विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि । तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं ह्रीं नमः २, ॐ ऐं क्लीं
 नमः ३, ॐ ऐं श्रीं नमः ४, ॐ ऐं श्रीं नमः ५, ॐ ऐं हां
 नमः ६, ॐ ऐं ह्रीं नमः ७, ॐ ऐं स्त्रीं नमः ८, ॐ ऐं प्रं
 नमः ९, ॐ ऐं श्रीं नमः १०, ॐ ऐं हूँ नमः ११, ॐ
 ऐं म्लीं नमः १२, ॐ ऐं स्त्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रां नमः १४,
 ॐ ऐं हूँ नमः १५, ॐ ऐं क्रीं नमः १६, ॐ ऐं चां
 नमः १७, ॐ ऐं भें नमः १८, ॐ ऐं क्रीं नमः १९, ऐं वैं
 नमः २० ।

ॐ ऐं हौं नमः २१, ॐ ऐं युं नमः २२, ॐ ऐं जुं
 नमः २३, ॐ ऐं हं नमः २४, ॐ ऐं शं नमः २५, ॐ
 ऐं रों नमः २६, ॐ ऐं यं नमः २७, ॐ ऐं विं नमः २८, ॐ
 ऐं वैं नमः २९, ॐ ऐं चें नमः ३०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१, ॐ
 ऐं क्रीं नमः ३२, ॐ ऐं सं नमः ३३, ॐ ऐं कं नमः ३४,
 ॐ ऐं श्रीं नमः ३५, ॐ ऐं त्रीं नमः ३६, ॐ ऐं स्त्रीं
 नमः ३७, ॐ ऐं ज्यं नमः ३८, ॐ ऐं रौं नमः ३९, ॐ ऐं
 द्रां नमः ४० ।

ॐ एं द्रों नमः ४१, ॐ एं हां नमः ४२, ॐ एं
द्रूं नमः ४३, ॐ एं शां नमः ४४, ॐ एं मीं नमः ४५,
ॐ एं श्रौं नमः ४६, ॐ एं जुं नमः ४७, ॐ एं ह्रूं नमः ४८,
ॐ एं श्रूं नमः ४९, ॐ एं प्रीं नमः ५०, ॐ एं रं
नमः ५१, ॐ एं वं नमः ५२, ॐ एं व्रीं नमः ५३, ॐ
एं व्लं नमः ५४, ॐ एं स्त्रीं नमः ५५, ॐ एं ल्वां नमः ५६,
ॐ एं लूं नमः ५७, ॐ एं सां नमः ५८, ॐ एं रौं
नमः ५९, एं स्ह्रौं नमः ६० ।

ॐ एं क्रूं नमः ६१, ॐ एं शौं नमः ६२, ॐ एं श्रौं
नमः ६३, ॐ एं वं नमः ६४, एं व्रूं नमः ६५, ॐ एं
क्रौं नमः ६६, ॐ एं क्लूं नमः ६७, ॐ एं क्लीं नमः ६८,
ॐ एं श्रीं नमः ६९, ॐ एं ब्लूं नमः ७०, एं ठां नमः ७१,
ॐ एं ठीं नमः ७२, एं स्तां नमः ७३, ॐ एं स्लूं नमः ७४,
ॐ एं क्रै नमः ७५, ॐ एं च्रां नमः ७६, ॐ एं प्रां
नमः ७७, ॐ एं जीं नमः ७८, ॐ एं लूं नमः ७९, एं स्लूं
नमः ८० ।

ॐ एं नों नमः ८१, ॐ एं स्त्रीं नमः ८२, ॐ एं प्रूं
नमः ८३, ॐ एं स्तूं नमः ८४, ॐ एं ज्ञां नमः ८५, ॐ एं
वां नमः ८६, ॐ एं ओं नमः ८७, ॐ एं श्रौं नमः ८८,
ॐ एं ऋं नमः ८९, ॐ एं रूं नमः ९०, ॐ एं क्लीं नमः ९१,
ॐ एं दुं नमः ९२, ॐ एं हीं नमः ९३, ॐ एं गूं नमः ९४,

ॐ एं लां नमः ९५, ॐ एं हां नमः ९६, ॐ एं गं
नमः ९७, ॐ एं ऐं नमः ९८, ॐ एं श्रौं नमः ९९, ॐ ऐं
जूं नमः १००, ॐ एं उं नमः १०१, ॐ एं श्रौं नमः १०२,
ॐ एं छां नमः १०३, ॐ एं क्लीं नमः १०४ ।

इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

*

द्वितीयोऽध्यायः

ॐ एं श्रौं नमः १, ॐ एं श्रीं नमः २, ॐ एं ह्रूं
नमः ३, ॐ ऐं ह्रौं नमः ४, ॐ ऐं हीं नमः ५, ॐ ऐं अं नमः ६,
ॐ ऐं क्लीं नमः ७, ॐ ऐं चा नमः ८, ॐ ऐं मुं नमः ९,
ॐ ऐं डां नमः १०, ॐ ऐं यै नमः ११, ॐ ऐं विं नमः १२,
ॐ ऐं च्वे नमः १३, ॐ ऐं ईं नमः १४, ॐ ऐं मौं नमः १५,
ॐ ऐं व्रां नमः १६, ॐ ऐं त्रौं नमः १७, ॐ ऐं लं नमः १८,
ॐ ऐं वं नमः १९, ॐ ऐं हां नमः २० ।

ॐ ऐं क्रीं नमः २१, ॐ ऐं सौं नमः २२, ॐ ऐं यं
नमः २३, ॐ ऐं ऐं नमः २४, ॐ ऐं मू नमः २५, ॐ
ऐं सः नमः २६, ॐ ऐं हं नमः २७, ॐ ऐं सं नमः २८,
ॐ ऐं सौं नमः २९, ॐ ऐं शं नमः ३०, ॐ ऐं हं नमः ३१,
ॐ ऐं ह्रौं नमः ३२, ॐ ऐं म्लीं नमः ३३, ॐ ऐं यूं नमः ३४,
ॐ ऐं त्रूं नमः ३५, ॐ ऐं स्त्रीं नमः ३६, ॐ ऐं आं नमः ३७,
ॐ ऐं प्रे नमः ३८, ॐ ऐं शं नमः ३९, ॐ ऐं हां नमः ४० ।

ॐ ऐं स्मं नमः ४१, ॐ ऐं ऊं नमः ४२, ॐ ऐं गूं नमः ४३, ॐ ऐं व्यूं नमः ४४, ॐ ऐं हूं नमः ४५, ॐ ऐं भैं नमः ४६, ॐ ऐं हां नमः ४७, ॐ ऐं क्रूं नमः ४८, ॐ ऐं मूं नमः ४९, ॐ ऐं लीं नमः ५०, ॐ ऐं श्रीं नमः ५१, ॐ ऐं द्रूं नमः ५२, ॐ ऐं द्रवं नमः ५३, ॐ ऐं हसौं नमः ५४, ॐ ऐं क्रां नमः ५५, ॐ ऐं स्हौं नमः ५६, ॐ ऐं म्लूं नमः ५७, ॐ ऐं श्रीं नमः ५८, ॐ ऐं गैं नमः ५९, ॐ ऐं क्रूं नमः ६० ।

ॐ ऐं त्रीं नमः ६१, ॐ ऐं क्लीं नमः ६२, ॐ ऐं कं नमः ६३, ॐ ऐं प्रीं नमः ६४, ॐ ऐं हीं नमः ६५, ॐ ऐं शां नमः ६६, ॐ ऐं च्छ्रीं नमः ६७, ॐ ऐं रौं नमः ६८, ॐ ऐं हुं नमः ६९ ।

इति द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

✽

तृतीयोऽध्यायः

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं क्लीं नमः २, ॐ ऐं सां नमः ३, ॐ ऐं त्रों नमः ४, ॐ ऐं प्रूं नमः ५, ॐ ऐं ग्लों नमः ६, ॐ ऐं क्रौं नमः ७, ॐ ऐं त्रीं नमः ८, ॐ ऐं स्लीं नमः ९, ॐ ऐं हीं नमः १०, ॐ ऐं हौं नमः ११, ॐ ऐं श्रीं नमः १२, ॐ ऐं ग्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रं नमः १४, ॐ ऐं क्रीं नमः १५, ॐ ऐं यां नमः १६, ॐ ऐं द्रूं नमः १७, ॐ ऐं द्रूं नमः १८, ॐ ऐं क्षं नमः १९, ॐ ऐं अं नमः २० ।

ऐं क्रौं नमः २१, ॐ ऐं क्ष्मक्लीं नमः २२, ॐ ऐं वां नमः २३, ॐ ऐं श्रूं नमः २४, ॐ ऐं ग्लूं नमः २५, ॐ ऐं लीं नमः २६, ॐ ऐं प्रें नमः २७, ॐ ऐं हूं नमः २८, ॐ ऐं हौं नमः २९, ॐ ऐं दें नमः ३० ।

ॐ ऐं नूं नमः ३१, ॐ ऐं आं नमः ३२, ॐ ऐं प्रां नमः ३३, ॐ ऐं प्रीं नमः ३४, ॐ ऐं दं नमः ३५, ॐ ऐं प्रीं नमः ३६, ॐ ऐं हीं नमः ३७, ॐ ऐं गूं नमः ३८, ॐ ऐं श्रीं नमः ३९, ॐ ऐं सां नमः ४०, ॐ ऐं श्रीं नमः ४१, ॐ ऐं जुं नमः ४२, ॐ ऐं हं नमः ४३, ॐ ऐं सं नमः ४४ ।

इति तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

✽

चतुर्थोऽध्यायः

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं सौं नमः २, ॐ ऐं दीं नमः ३, ॐ ऐं प्रीं नमः ४, ॐ ऐं यां नमः ५, ॐ ऐं रूं नमः ६, ॐ ऐं भं नमः ७, ॐ ऐं सूं नमः ८, ॐ ऐं श्रीं नमः ९, ॐ ऐं ओं नमः १०, ॐ ऐं लूं नमः ११, ॐ ऐं डूं नमः १२, ॐ ऐं जूं नमः १३, ॐ ऐं धूं नमः १४, ॐ ऐं त्रं नमः १५, ॐ ऐं हीं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं नमः १७, ॐ ऐं ईं नमः १८, ॐ ऐं हां नमः १९, ॐ ऐं ह्रूं नमः २० ।

ॐ ऐं क्लूं नमः २१, ॐ ऐं क्रां नमः २२, ॐ ऐं ल्लूं नमः २३, ॐ ऐं प्रां नमः २४, ॐ ऐं क्लीं नमः २५, ॐ ऐं म्लूं नमः २६, ॐ ऐं घ्रें नमः २७, ॐ ऐं श्रीं नमः २८,

ॐ ऐं ह्रीं नमः २१, ॐ ऐं ग्रीं नमः २०, ॐ ऐं हीं नमः २१,
ॐ ऐं त्रीं नमः २२, ॐ ऐं हल्लौं नमः २३, ॐ ऐं गीं नमः २४,
ॐ ऐं यूं नमः २५, ॐ ऐं हीं नमः २६, ॐ ऐं हूं नमः २७,
ॐ ऐं श्रीं नमः २८, ॐ ऐं ओं नमः २९, ॐ ऐं अं नमः ४०,
ऐं म्हौं नमः ४१, ॐ ऐं ग्रीं नमः ४२ ।

इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

❀

पञ्चमोऽध्यायः

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं ग्रीं नमः २, ॐ ऐं ओं नमः ३,
ॐ ऐं हीं नमः ४, ॐ ऐं लीं नमः ५, ॐ ऐं त्रीं नमः ६,
ॐ ऐं क्रीं नमः ७, ॐ ऐं ह्रीं नमः ८, ॐ ऐं ग्रीं नमः ९,
ॐ ऐं श्रीं नमः १०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ११, ॐ ऐं
कलीं नमः १२, ॐ ऐं रीं नमः १३, ॐ ऐं स्त्रीं नमः १४, ॐ
ऐं म्लीं नमः १५, ॐ ऐं प्लुं नमः १६, ॐ ऐं म्हौं नमः १७,
ॐ ऐं स्त्रीं नमः १८, ऐं ग्लूं नमः १९, ॐ ऐं त्रीं नमः २०,
ॐ ऐं सौं नमः २१, ॐ ऐं लूं नमः २२, ॐ ऐं ल्लूं
नमः २३, ॐ ऐं द्रां नमः २४, ॐ ऐं कर्मां नमः २५, ॐ
ऐं क्षत्रीं नमः २६, ॐ ऐं ग्लौं नमः २७, ॐ ऐं स्क
नमः २८, ॐ ऐं त्रूं नमः २९, ॐ ऐं स्लूं नमः ३० ।

ॐ ऐं क्रौं नमः ३१, ॐ ऐं लीं नमः ३२, ॐ ऐं
म्लूं नमः ३३, ॐ ऐं क्लूं नमः ३४, ॐ ऐं शां नमः ३५,
ॐ ऐं लहीं नमः ३६, ॐ ऐं स्त्रूं नमः ३७, ॐ ऐं ल्लीं

नमः ३८, ॐ ऐं लीं नमः ३९, ॐ ऐं सं नमः ४०, ॐ ऐं लूं
नमः ४१, ॐ ऐं ह्रूं नमः ४२, ॐ ऐं भूं नमः ४३,
ॐ ऐं जूं नमः ४४, ॐ ऐं ह्रस्वीं नमः ४५, ॐ ऐं स्कीं
नमः ४६, ॐ ऐं कलां नमः ४७, ॐ ऐं श्रूं नमः ४८, ॐ
ऐं हं नमः ४९, ॐ ऐं ह्रीं नमः ५०, ॐ ऐं क्लूं नमः ५१,
ॐ ऐं द्रौं नमः ५२, ॐ ऐं क्लूं नमः ५३, ॐ ऐं गां
नमः ५४, ॐ ऐं सं नमः ५५, ॐ ऐं ल्लां नमः ५६, ॐ
ऐं फनीं नमः ५७, ॐ ऐं स्लां नमः ५८, ॐ ऐं ल्लूं
नमः ५९, ॐ ऐं फ्रौं नमः ६० ।

ॐ ऐं ओं नमः ६१, ॐ ऐं स्म्लीं नमः ६२, ॐ ऐं हां
नमः ६३, ॐ ऐं ऊं नमः ६४, ॐ ऐं हूं नमः ६५, ॐ ऐं
हूं नमः ६६, ॐ ऐं नं नमः ६७, ॐ ऐं स्नां नमः ६८, ॐ ऐं
वं नमः ६९, ॐ ऐं मं नमः ७०, ॐ ऐं म्बलां नमः ७१, ॐ
ऐं शां नमः ७२, ॐ ऐं ललं नमः ७३, ॐ ऐं मैं नमः ७४, ॐ
ऐं ल्लूं नमः ७५, ॐ ऐं हौं नमः ७६, ॐ ऐं ईं नमः ७७,
ॐ ऐं चे नमः ७८, ॐ ऐं स्त्रीं नमः ७९, ॐ ऐं ह्र्वीं नमः ८०,
ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः ८१, ॐ ऐं पूं नमः ८२, ॐ ऐं श्रीं
नमः ८३, ऐं हौं नमः ८४, ॐ ऐं भ्रूं नमः ८५, ॐ ऐं कस्त्रीं
नमः ८६, ॐ ऐं आं नमः ८७, ॐ ऐं क्रूं नमः ८८, ॐ ऐं
त्रं नमः ८९, ॐ ऐं दुं नमः ९०, ॐ ऐं जां नमः ९१, ॐ ऐं
ह्रूं नमः ९२, ॐ ऐं फ्रौं नमः ९३, ॐ ऐं क्रौं नमः ९४, ॐ

ॐ ऐं एं नमः ४, ॐ ऐं क्रौं नमः ५, ॐ ऐं ईं नमः ६,
ॐ ऐं एं नमः ७, ॐ ऐं ऋं नमः ८, ॐ ऐं क्रौं नमः ९,
ॐ ऐं म्लूं नमः १०, ॐ ऐं नों नमः ११, ॐ ऐं वूं
नमः १२, ॐ ऐं फ्रां नमः १३, ॐ ऐं ग्लौं नमः १४,
ॐ ऐं स्मों नमः १५, ॐ ऐं सौं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं
नमः १७, ॐ ऐं स्हों नमः १८, ॐ ऐं खसें नमः १९,
ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः २० ।

ॐ ऐं हौं नमः २१, ॐ ऐं वीं नमः २२, ॐ ऐं लं
नमः २३, ॐ ऐं ळीं नमः २४, ॐ ऐं व्लीं नमः २५, ॐ
ऐं त्स्त्रों नमः २६, ॐ ऐं ब्रुं नमः २७, ॐ ऐं श्क्लानं नमः २८,
ॐ ऐं श्रूं नमः २९, ॐ ऐं हीं नमः ३०, ॐ ऐं शीं नमः ३१,
ॐ ऐं क्लीं नमः ३२, ॐ ऐं क्लौं नमः ३३, ॐ ऐं फ्रं
नमः ३४, ॐ ऐं हं नमः ३५, ॐ ऐं क्लूं नमः ३६, ॐ ऐं
तीं नमः ३७, ॐ ऐं म्लं नमः ३८, ॐ ऐं हं नमः ३९,
ॐ ऐं स्लूं नमः ४० ।

ॐ ऐं औं नमः ४१, ॐ ऐं ण्हौं नमः ४२, ॐ ऐं
ळीं नमः ४३, ॐ ऐं यां नमः ४४, ॐ ऐं थ्लीं नमः ४५,
ॐ ऐं ण्हीं नमः ४६, ॐ ऐं ग्लौं नमः ४७, ॐ ऐं हौं
नमः ४८, ॐ ऐं प्रां नमः ४९, ॐ ऐं क्रौं नमः ५०, ॐ ऐं
क्लीं नमः ५१, ॐ ऐं स्लूं नमः ५२, ॐ ऐं हीं नमः ५३,
ॐ ऐं हौं नमः ५४, ॐ ऐं ह्वे नमः ५५, ॐ ऐं श्रं
नमः ५६, ॐ ऐं सौं नमः ५७, ॐ ऐं श्रीं नमः ५८, ॐ ऐं

प्लूं नमः ५९, ॐ ऐं द्रौं नमः ६०, ॐ ऐं स्त्रां नमः ६१,
ऐं ह्स्त्रां नमः ६२, ॐ ऐं स्क्वरीं नमः ६३ ।

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

*

ॐ ऐं रौं नमः १, ॐ ऐं क्लीं नमः २, ॐ ऐं म्लौं
नमः ३, ॐ ऐं श्रीं नमः ४, ॐ ऐं ग्लौं नमः ५, ॐ ऐं हौं
नमः ६, ऐं ह्सौं नमः ७, ॐ ऐं ईं नमः ८, ॐ ऐं ब्रूं
नमः ९, ॐ ऐं श्रां नमः १०, ऐं लूं नमः ११, ॐ ऐं आं
नमः १२, ॐ ऐं श्रीं नमः १३, ॐ ऐं क्रौं नमः १४, ॐ
ऐं प्रं नमः १५, ॐ ऐं क्लीं नमः १६, ॐ ऐं भ्रूं
नमः १७, ॐ ऐं हौं नमः १८, ॐ ऐं क्रौं नमः १९,
ॐ ऐं म्लीं नमः २०, ॐ ऐं ग्लौं नमः २१, ॐ ऐं ह्सूं
नमः २२, ॐ ऐं प्लीं नमः २३, ॐ ऐं हौं नमः २४, ॐ
ऐं ह्स्त्रां नमः २५, ॐ ऐं स्हौं नमः २६, ॐ ऐं ल्लूं
नमः २७, ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः २८, ॐ ऐं श्रीं नमः २९,
ॐ ऐं स्तूं नमः ३० ।

ॐ ऐं च्चें नमः ३१, ऐं वीं नमः ३२, ॐ ऐं क्ष्लूं
नमः ३३, ॐ ऐं श्लूं नमः ३४, ॐ ऐं क्रूं नमः ३५, ॐ
ऐं क्रां नमः ३६, ॐ ऐं हौं नमः ३७, ॐ ऐं क्रां नमः ३८,
ॐ ऐं स्क्ष्लीं नमः ३९, ॐ ऐं भ्रूं नमः ४०, ॐ ऐं
फूं नमः ४१ ॥

इति नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं हीं नमः २, ॐ ऐं ब्लं
नमः ३, ॐ ऐं हीं नमः ४, ॐ ऐं म्लं नमः ५, ॐ ऐं श्रौं
नमः ६, ॐ ऐं हीं नमः ७, ॐ ऐं ग्लीं नमः ८, ॐ ऐं हं
नमः ९, ॐ ऐं धूं नमः १०, ॐ ऐं हुं नमः ११, ॐ ऐं द्रौं
नमः १२, ॐ ऐं श्रीं नमः १३, ॐ ऐं त्रूं नमः १४, ॐ ऐं
ब्रूं नमः १५, ॐ ऐं फ्रूं नमः १६, ॐ ऐं हां नमः १७,
ॐ ऐं जुं नमः १८, ॐ ऐं सौं नमः १९, ॐ ऐं स्लूं नमः २०,
ॐ ऐं प्रें नमः २१, ॐ ऐं स्वां नमः २२, ॐ ऐं प्रीं
नमः २३, ॐ ऐं फ्रां नमः २४, ॐ ऐं क्रीं नमः २५, ॐ ऐं
श्रीं नमः २६, ॐ ऐं क्रां नमः २७, ॐ ऐं सं नमः २८, ॐ
ऐं क्लीं नमः २९, ॐ ऐं ब्रें नमः ३०, ॐ ऐं इं नमः ३१,
ॐ ऐं ज्स्हलीं नमः ३२ ।

इति दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

*

ॐ ऐं श्रौं नमः १, ॐ ऐं क्रं नमः २, ॐ ऐं श्रौं नमः ३,
ॐ ऐं ब्लीं नमः ४, ॐ ऐं प्रें नमः ५, ॐ ऐं सौं नमः ६,
ॐ ऐं स्हौं नमः ७, ॐ ऐं त्रूं नमः ८, ॐ ऐं क्लीं नमः ९,
ॐ ऐं स्क्लीं नमः १०, ॐ ऐं प्रीं नमः ११, ॐ ऐं ग्लौं नमः १२,
ॐ ऐं ह्रस्वीं नमः १३, ॐ ऐं हीं स्तौं नमः १४, ॐ ऐं लीं
नमः १५, ॐ ऐं म्लीं नमः १६, ॐ ऐं स्तूं नमः १७, ॐ ऐं
ज्स्हीं नमः १८, ॐ ऐं फ्रें नमः १९, ॐ ऐं क्रूं नमः २०, ॐ

ऐं हीं नमः २१, ॐ ऐं ब्लूं नमः २२, ॐ ऐं क्ष्मीं नमः २३,
ॐ ऐं श्रूं नमः २४, ॐ ऐं इ नमः २५, ॐ ऐं जूं नमः २६,
ॐ ऐं त्रै नमः २७, ॐ ऐं द्रूं नमः २८, ॐ ऐं हौं नमः २९,
ॐ ऐं क्लीं नमः ३०, ऐं खं नमः ३१, ॐ ऐं हौं नमः ३२, ॐ
ऐं ख्रं नमः ३३, ॐ ऐं व्रूं नमः ३४, ॐ ऐं स्फूं नमः ३५,
ॐ ऐं हीं नमः ३६, ॐ ऐं लं नमः ३७, ॐ ऐं ह्रसौं नमः ३८,
ॐ ऐं सें नमः ३९, ॐ ऐं हीं नमः ४०, ॐ ऐं हीं नमः ४१,
ॐ ऐं विं नमः ४२, ॐ ऐं प्लीं नमः ४३, ॐ ऐं क्ष्मकीं
नमः ४४, ॐ ऐं त्स्त्रां नमः ४५, ॐ ऐं प्रं नमः ४६, ॐ
ऐं म्लीं नमः ४७, ॐ ऐं स्त्रूं नमः ४८, ॐ ऐं च्मां नमः ४९,
ॐ ऐं स्तूं नमः ५०, ॐ ऐं स्हीं नमः ५१, ॐ ऐं श्र्मीं
नमः ५२, ॐ ऐं क्रौं नमः ५३, ॐ ऐं श्रां नमः ५४, ॐ ऐं
म्लीं नमः ५५ ॥

इत्येकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

*

ॐ ऐं हीं नमः १, ॐ ऐं आं नमः २, ॐ ऐं श्रीं नमः ३,
ॐ ऐं आं नमः ४, ॐ ऐं क्लीं नमः ५, ॐ ऐं क्रूं नमः ६, ॐ
ऐं श्रूं नमः ७, ॐ ऐं प्रां नमः ८, ॐ ऐं क्रूं नमः ९, ॐ ऐं
दिं नमः १०, ॐ ऐं फ्रें नमः ११, ॐ ऐं हं नमः १२, ॐ ऐं
सं नमः १३, ॐ ऐं चे नमः १४, ॐ ऐं खं नमः १५, ॐ
ऐं प्रीं नमः १६, ॐ ऐं ब्लूं नमः १७, ॐ ऐं आं नमः १८,
ॐ ऐं औं नमः १९, ॐ ऐं हीं नमः २०, ॐ ऐं क्रीं नमः २१,

ॐ ऐं द्रां नमः २२, ॐ ऐं श्रीं नमः २३, ॐ ऐं स्त्रीं नमः २४, ॐ ऐं क्लीं नमः २५, ॐ ऐं स्लूं नमः २६, ॐ ऐं ह्रीं नमः २७, ॐ ऐं व्लीं नमः २८, ॐ ऐं त्र्यो नमः २९, ॐ ऐं ओं नमः ३०, ॐ ऐं श्रौ नमः ३१, ॐ ऐं ऐं नमः ३२, ॐ ऐं प्रो नमः ३३, ॐ ऐं द्रूं नमः ३४, ॐ ऐं क्लूं नमः ३५, ॐ ऐं औं नमः ३६, ॐ ऐं सूं नमः ३७, ॐ ऐं चे नमः ३८, ॐ ऐं हूं नमः ३९, ॐ ऐं प्लीं नमः ४०, ॐ ऐं क्षां नमः ४१ ।

इति द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

ॐ ऐं श्रीं नमः १, ॐ ऐं व्रीं नमः २, ॐ ऐं ओं नमः ३, ॐ ऐं औं नमः ४, ॐ ऐं हां नमः ५, ॐ ऐं श्रीं नमः ६, ॐ ऐं श्रां नमः ७, ॐ ऐं ओं नमः ८, ॐ ऐं प्लीं नमः ९, ॐ ऐं सों नमः १०, ॐ ऐं ह्रीं नमः ११, ॐ ऐं क्रीं नमः १२, ॐ ऐं ल्लूं नमः १३, ॐ ऐं क्लीं नमः १४, ॐ ऐं ह्रीं नमः १५, ॐ ऐं प्लीं नमः १६, ॐ ऐं श्रीं नमः १७, ॐ ऐं व्लीं नमः १८, ॐ ऐं श्रूं नमः १९, ॐ ऐं ह्रीं नमः २०, ॐ ऐं त्रूं नमः २१, ॐ ऐं हूं नमः २२, ॐ ऐं हां नमः २३, ॐ ऐं प्रीं नमः २४, ॐ ऐं ऊं नमः २५, ॐ ऐं सूं नमः २६, ॐ ऐं ह्लौं नमः २७, ॐ ऐं षौं नमः २८, ॐ ऐं आं नमः २९, ॐ ऐं ओं नमः ३० ।

इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति सप्तशतीमन्त्राणां बीजमन्त्राः समाप्ताः ।

*

परिशिष्टम्

विविध देवी-देवताओं के साधनमन्त्र

दशमहाविद्याओं की उपासना

१. काली मन्त्र

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

प्रयोग-विधि—यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है । शत्रुओं का नाश करने एवं जीवन में अभूत पूर्व सफलता पाने के लिए काली की उपासना की जाती है । जप के पश्चात् कनेर के फूलों से जप का दशांश हवन करना चाहिए ।

२. तारा मन्त्र

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूं फट् ।

प्रयोग-विधि—तारा देवी की साधना के लिए चार लाख जप करने का विधान है । जप की समाप्ति के पश्चात् लाल कमल के फूलों से दशांश हवन करना चाहिए । इस प्रयोग से शत्रुओं का नाश होता है ।

३. षोडशी मन्त्र

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं हसक हल ह्रीं सकल ह्रीं ।

षोडशी देवी की सिद्धि के लिए तीन लाख मन्त्रों का जप करके दशांश हवन करना चाहिए । इनकी सिद्धि से शत्रुओं पर विजय एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

४. भुवनेश्वरी मन्त्र

ह्रीं

इसमें बत्तीस लाख जप करने के बाद सिद्धि मिलती है । जप का दशांश हवन करना चाहिए । वशीकरण के निमित्त इनकी साधना अद्वितीय है ।

५. छिन्नमस्ता मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।

एक लाख जप करने से पूरी सफलता मिलती है । इस देवी की सिद्धि से मनोवाञ्छित कार्य पूरे होते हैं ।

६. त्रिपुरभैरवी मन्त्र

ह सैं ह स क रीं ह सैं ।

इस मन्त्र का दश लाख जप करना चाहिए । तत्पश्चात् दशांश हवन करे । इससे दीर्घायु जीवन एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

७. धूमावती मन्त्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः ।

इस मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए । जप के बाद काले तिल से दशांश हवन करे । इस अनुष्ठान से शत्रु पर विजय प्राप्ति एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । साथ ही सन्तान की प्राप्ति एवं शारीरिक आरोग्यता भी मिलती है ।

८. बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

इस मन्त्र का सवालाख जप करना चाहिए । मन्त्र जाप के पश्चात् चम्पा के फूलों से दशांश हवन करना चाहिए । इस देवी के अनुष्ठान से अपराजेय शत्रु का नाश होता है तथा न्यायालयीय कार्यों में साधक को विजय मिलती है ।

९. मातङ्गी मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातङ्ग्यै फट् ॐ स्वाहा ।

मन्त्र सिद्धि के निमित्त द्वादश हजार जप करना चाहिए । तत्पश्चात् जप का दशांश हवन करे । वैवाहिक बाधाओं को दूर करने एवं गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के लिए इस मन्त्र का जप महान् फलदायक है ।

१०. कमला या कमलात्मिका मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रसौः जगत्प्रसूत्यै नमः ।

इसकी सिद्धि के लिए बारह लाख जप करने का विधान है । तदनन्तर दशांश हवन करे । सम्पूर्ण सांसारिक सुखोपभोग के निमित्त यह मन्त्र विशेष फलप्रद कहा गया है ।

११. दुर्गा मन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

इस मन्त्र का एक माला प्रतिदिन जप करना चाहिए । सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए इसका अनुष्ठान लाभप्रद है ।

१२. बीजोक्त श्रीसूक्त मन्त्र

ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः ।

इस मन्त्र का एक हजार जप करना चाहिए । तदनन्तर दशांश हवन अंगूर से करना चाहिए । इससे लक्ष्मी एवं विद्या आदि की प्राप्ति होती है ।

१३. दुर्गाऽष्टाक्षर मन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है । इसके द्वारा शत्रुओं पर विजय, रोग मुक्ति और पुत्र-प्राप्ति आदि कार्य की सफलता प्राप्त की जाती है । इस मन्त्र में अद्भुत शक्ति है ।

१४. देवी से सम्बन्धित नवार्ण मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विन्च्वे ।

इस मन्त्र के बिना किसी भी देवी का अनुष्ठान सिद्ध नहीं होता । यह मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली तथा महत्त्वपूर्ण माना गया है । इस मन्त्र के कई भेद हैं । इस के द्वारा तान्त्रिक प्रयोग किया जाता है । यह मन्त्र और तन्त्र दोनों रूपों में व्यवहृत होता है ।

नवार्ण मन्त्र के भेद-

१५. नवार्ण मारण मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) रं रं से खे मारय मारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का दश लाख जप करना चाहिए । इस अनुष्ठान के पूर्व सात कुओं या नदियों का जल ताँवे के कलश में लेकर भर लेना चाहिए । उस जल में आम या बरगद के पत्ते डाल कर उसी जल से स्नान करना चाहिए । यह प्रयोग लगातार बीस दिन तक होना चाहिए । मस्तक पर लाल चन्दन का तिलक एवं काले कम्बल का आसन इस कार्य में प्रयुक्त करना चाहिए । जप-काल में ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर साधक को वीरासन से बैठना चाहिए ।

१६. नवार्ण मोहन मन्त्र

ॐ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) क्लीं क्लीं मोहनं कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा ।

इसके लिए बारह लाख जप करना चाहिए । इसमें भी ताँत्र कलश में सात नदियों या कूपों का जल भरकर उसमें आम के पत्ते डालकर नित्य स्नान करे । मस्तक पर पीला चन्दन लगा कर पीत वस्त्र धारण करके पश्चिमाभिमुख होकर जप का अनुष्ठान करना चाहिए । इसके लिए आसन भी पीले रंग का ही होना चाहिए । साधक को सुखासन में बैठकर मन्त्र का जाप करना चाहिए । ऐसा करने से निश्चय ही सफलता मिलती है ।

१७. नवार्ण उच्चाटन मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ।

चौबीस लाख मन्त्र जपने से इसकी सिद्धि होती है । इस अनुष्ठान में साधक को लाल वस्त्र का आसन बिछाकर पूर्वाभिमुख होकर बैठना चाहिए । साधक को अपने शरीर पर लाल रंग का वस्त्र हीधारण करना चाहिए । इस कार्य के निमित्त

ताँत्र कलश में तीन कुओं का जल लेकर रखे और प्रतिदिन उसी जल से साधक को स्नान करना चाहिए । इसका प्रयोग लगातार बीस दिनों तक करने से साधक का कार्य सफल होता है ।

१८. नवार्ण वशीकरण मन्त्र

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

इसमें सोलह लाख जप करने का विधान बतलाया गया है । साधक को कमलासन की मुद्रा में पूर्व की ओर मुँह करके बैठना चाहिए । जप के समय भूरे रंग के आसन का प्रयोग करे । विधिवत् साधना करने से साधक को अवश्य ही सिद्धि मिलती है । मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद जिस व्यक्ति पर प्रयोग किया जाता है वह निश्चय ही वशीभूत हो जाता है ।

१९. नवार्ण स्तम्भन मन्त्र

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्रीं जिह्वां कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा ।

इसके लिए तेरह लाख मन्त्र जपने से कार्य की सिद्धि होती है । साधक को काले रंग का आसन बिछाकर उत्तराभिमुख होकर बैठना चाहिए । इसका प्रयोग बीस दिनों तक किया जाता है । जल में काला तिल डालकर उस जलसे बीस दिन तक साधक को स्नान करना चाहिए । इस प्रकार अनुष्ठान करने से साधन की अपने कार्य में अवश्य ही सफलता मिलती है ।

२०. नवार्ण विद्वेषण मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै (अमुकं) विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा । यह महामन्त्र है । इसके उच्चारण मात्र से ही देवी प्रसन्न हो जाती है ।

२१. नवार्ण महामन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरी नवदुर्गे नवात्मिके नव-

चण्डी महामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभविद्राविणि
महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहन्त्रि चण्डमुण्डविनाशिनि रक्तबीजान्तके
निशुम्भध्वंसिनि शुम्भदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल
खट्वाङ्ग-शूल खड्ग-खेटकधारिणि छिन्नमस्तकधारिणि रुधिर-मांस-
भोजिनि समस्त-भूत-प्रेतादि-योगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्राद्रि-स्तुते देवि
मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय ह्रीं फट् हूं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै
विच्चे ।

यह नव दुर्गा का संयुक्त मन्त्र है। इससे शत्रुओं का नाश होता है। इसे
महामन्त्र कहते हैं।

२२. दुर्गे स्मृता मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मितां हिरण्य-
प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो-
पह्वये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गेस्मृता हरसि
भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि, यदन्ति यच्च
दूरके भयं विन्दति मामिह, पवमान वितञ्जहि दारिद्र्यदुःखभय-
हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाद्रवित्ता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां
तर्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे ।

शास्त्रों में नव दुर्गा का उल्लेख मिलता है। यथा—जया, विजया, भद्रा,
भद्रकाली, सुमुखी, दुर्मुखी, व्याघ्रमुखी, सिंहमुखी एवं दुर्गा ।

इस मन्त्र को एक लाख जपने से सिद्धि मिलती है। जप के बाद दशांश
खीर का हवन करना चाहिए। इस मन्त्र की सिद्धि प्राप्त कर लेने से सभी कार्य
पूरे होते हैं तथा साधक सर्वत्र पूजा जाता है।

गायत्री मन्त्र-भेद -

२३. हंस गायत्री मन्त्र

ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।

गायत्री देवी की उपासना प्रत्येक ब्राह्मण के लिए अनिवार्य कहा गया है।
बीबीस लाख जप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। गायत्री मन्त्र की
सिद्धि प्राप्त कर लेने से जीवन में पूर्ण सफलता मिलती है। गायत्री देवी के अनेक
भेद हैं। समस्त भेदों का वर्णन मन्त्र संख्या २३ से ७७ तक दिये गये हैं।

२४. ब्रह्म गायत्री मन्त्र

ॐ भूभुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः
प्रचोदयात् । (१)

ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि, तन्नो ब्रह्मा
प्रचोदयात् । (२)

२५. सरस्वती गायत्री मन्त्र

ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि, तन्नो देवि
प्रचोदयात् ।

२६. विष्णु गायत्री मन्त्र

ॐ श्रीविष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः
प्रचोदयात् ।

२७. त्रैलोक्य मोहन गायत्री मन्त्र

ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि, तन्नो विष्णुः
प्रचोदयात् ।

२८. लक्ष्मी गायत्री मन्त्र

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मीः
प्रचोदयात् ।

२९. नारायण गायत्री मन्त्र

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नो नारायणः
प्रचोदयात् ।

३०. राम गायत्री मन्त्र

ॐ दाशरथये विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

३१. जानकी गायत्री मन्त्र

ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि, तन्नः सीता प्रचोदयात् ।

३२. लक्ष्मण गायत्री मन्त्र

ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय धीमहि, तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।

३३. हनुमान् गायत्री मन्त्र

अञ्जनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि, तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ।

३४. गरुड गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपणाय धीमहि, तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।

३५. कृष्ण गायत्री मन्त्र

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि, तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।

३६. गोपाल गायत्री मन्त्र

ॐ गोपालाय विद्महे गोरीजनवल्लभाय धीमहि, तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ।

३७. राधिका गायत्री मन्त्र

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि, तन्नो राधिका प्रचोदयात् । (१)

ॐ ह्रीं राधिकायै विद्महे गान्धर्विकायै धीमहि, तन्नो राधा प्रचोदयात् । (२)

३८. परशुराम गायत्री मन्त्र

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि, तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ।

३९. नृसिंह गायत्री मन्त्र

ॐ उग्रनृसिहाय विद्महे वञ्जनखाय धीमहि, तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ।

४०. शिव गायत्री मन्त्र

ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि, तन्नः शिवः प्रचोदयात् ।

४१. रुद्र गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

४२. गौरी गायत्री मन्त्र

ॐ सुभगायै च विद्महे काम-मालायै धीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।

४३. गणेश गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

४४. षण्मुख गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि, तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ।

४५. नन्दी गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो नन्दी प्रचोदयात् ।

४६. सूर्य गायत्री मन्त्र

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

४७. चन्द्र गायत्री मन्त्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृत-पानाय धीमहि, तन्नश्चन्द्रः
प्रचोदयात् ।

४८. भौम गायत्री मन्त्र

ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि, तन्नो भौमः
प्रचोदयात् ।

४९. बुध गायत्री मन्त्र

ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि, तन्नो बुधः
प्रचोदयात् ।

५०. गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।

५१. शुक्र गायत्री मन्त्र

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।

५२. शनि गायत्री मन्त्र

ॐ कृष्णाङ्गाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि, तन्नः सौरिः
प्रचोदयात् ।

५३. राहु गायत्री मन्त्र

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि, तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।

५४. केतु गायत्री मन्त्र

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि, तन्नः केतुः प्रचोदयात् ।

५५. पृथ्वी गायत्री मन्त्र

ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्रमूर्त्यै च धीमहि, तन्नो मही
प्रचोदयात् ।

५६. अग्नि गायत्री मन्त्र

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमग्नाय धीमहि, तन्नोऽग्निः
प्रचोदयात् ।

५७. जल गायत्री मन्त्र

ॐ जलविम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि, तन्नो अम्बुः
प्रचोदयात् ।

५८. आकाश गायत्री मन्त्र

ॐ आकाशाय विद्महे नभोदेवाय धीमहि, तन्नो गगनः
प्रचोदयात् ।

५९. वायु गायत्री मन्त्र

ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्त्ये च धीमहि, तन्नो वायुः
प्रचोदयात् ।

६०. इन्द्र गायत्री मन्त्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि, तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ।

६१. काम गायत्री मन्त्र

ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि, तन्नोऽनङ्गः
प्रचोदयात् ।

६२. गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

६३. तुलसी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि, तन्नो तुलसी
प्रचोदयात् ।

६४. देवी गायत्री मन्त्र

ॐ देव्यै ब्रह्मण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

६५. शक्ति गायत्री मन्त्र

ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।

६६. अन्नपूर्णा गायत्री मन्त्र

ॐ भगवत्यै विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि, तन्न अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।

६७. काली गायत्री मन्त्र

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि, तन्नो अघोरा प्रचोदयात् ।

६८. तारा गायत्री मन्त्र

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

६९. त्रिपुरसुन्दरी गायत्री मन्त्र

ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै च विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि, सौस्तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् ।

७०. भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र

ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७१. भैरवी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७२. छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र

ॐ वैरोचिन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७३. धूमावती गायत्री मन्त्र

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि, तन्नो धूमा प्रचोदयात् ।

७४. बगलामुखी गायत्री मन्त्र

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७५. मातङ्गी गायत्री मन्त्र

ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्ट-चाण्डालिन्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७६. महिषमर्दिनी गायत्री मन्त्र

ॐ महिषमर्दिन्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७७. त्वरिता गायत्री मन्त्र

ॐ त्वरितादेव्यै च विद्महे महानित्यायै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

७८. भद्रकाली मन्त्र

ॐ ह्रीं कालि महाकालि किले किले फट् स्वाहा ।
इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से साधक को पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है और उसके शत्रु का क्षय हो जाता है ।

७९. श्मशान काली मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ।
एक लाख जप कर लेने से मन्त्र की सिद्धि होती है । इस मन्त्र के द्वारा शत्रु का संहार किया जाता है और साधक विश्व-विजयी बन जाता है ।

८०. षोडशी मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ।

इसे आकर्षण मन्त्र कहा जाता है। इस मन्त्र का एक लाख जप कर लेने से साधक को देखते ही अन्य लोग वशीभूत हो जाते हैं।

८१. बाला त्रिपुरा मन्त्र

ऐं क्लीं सौः ।

इस मन्त्र का तीन लाख जप करना चाहिए। इसके द्वारा साधक के जीवन में पूर्ण समृद्धि एवं सफलता प्राप्त होती है।

८२. भुवनेश्वरी मन्त्र (तीन अक्षरों वाला)

ऐं ह्रीं श्रीं ।

बत्तीस लाख जप करने से इस देवी का मन्त्र सिद्ध होता है। इससे साधक को सभी क्षेत्रों में पूर्ण सफलता मिलती है।

८३. त्रिपुर भैरवी मन्त्र

हसैं हसकरीं हसैं ।

इस मन्त्र का चौबीस लाख जप करना चाहिए। इसकी सिद्धि द्वारा साधक अक्षय कीर्ति का अधिकारी बनता है।

८४. छिन्नमस्ता मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र का चार लाख जप करने का विधान है। इसकी सिद्धि से साधक को लक्ष्मी-प्राप्ति, शत्रुक्षय तथा मुकदमे आदि कार्यों में विजय मिलती है।

८५. मातङ्गी मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट-चाण्डालिनि श्रीमातङ्गे-
श्वरि सर्वजनं वशंकरि स्वाहा ।

इसकी सिद्धि एक लाख मन्त्र जपने से होती है। इसके द्वारा जीवन में बाहन-सुख तथा राज्य-सुख प्राप्त होता है।

८६. सरस्वती मन्त्र

वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि दश लाख जप करने से प्राप्त होती है। साधन-काल में पूर्णरूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इसकी सिद्धि से साधक पूर्ण विद्वान् एवं ज्ञानी होकर सम्पूर्ण संसार में सुविख्यात होता है।

८७. एकाक्षरी सरस्वती मन्त्र

‘ऐ’ ।

इसे सरस्वती का बीज मन्त्र कहा जाता है। इसके लिए साधक को चाहिए कि सूर्यग्रहण के समय कुश के डण्डल को शहद में भिगोकर अपनी जिह्वा पर इस मन्त्र को लिखे और सूर्य-ग्रहण की समाप्ति होने तक इसका जप करता रहे। तदनन्तर दूसरे दिन से इक्कीस हजार जप निरन्तर इग्यारह दिनों तक करे। इस जप को दिन में श्वेत वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर बैठे और धी का दीपक जलाकर मन्त्र का जप करे।

इस प्रकार के अनुष्ठान से देवी साक्षात् प्रकट होती हैं और साधक को सम्पूर्ण विद्याओं में पारङ्गत होने का वरदान देती हैं।

८८. नील सरस्वती मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति
दां द्रीं क्लीं ब्लूं सः । ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौः ह्रीं स्वाहा ।

सरस्वती देवी का यह अत्यन्त प्रिय मन्त्र है। बालक के उत्पन्न होने के पश्चात् दूर्वा से इस मन्त्र को उसकी जीभ पर लिख दे, तो आगे चलकर उसे सभी शास्त्र कण्ठस्थ हो जाते हैं और वह शास्त्रार्थ में सदैव विजयी होता है। विद्या-प्राप्ति के निमित्त इससे बढ़कर अन्य कोई दूसरा मन्त्र नहीं है।

८९. वाग्देवी मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

इसकी प्रयोग-विधि मन्त्र-संख्या ८९ के अनुसार है।

९०. विद्या मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन्मुखनिवासिनि सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः।

दीपावली की रात्रि में बारह हजार जप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। साधक को चाहिए कि श्वेत वस्त्र धारण कर वह पूर्वाभिमुख होकर बैठे और कमलासन लगाकर मन्त्र का जप करे। इस मन्त्र की सिद्धि से साधक की सारी अविद्याएँ दूर हो जाती हैं और विद्या के क्षेत्र में उसे असाधारण सफलता मिलती है।

९१. लक्ष्मी बीज मन्त्र

‘श्रीः’।

लक्ष्मी-प्राप्ति के निमित्त इस मन्त्र का मानस-जप निरन्तर करते रहना चाहिए। इस मन्त्र के प्रभाव से जीवन में आर्थिक उन्नति सदैव बनी रहती है।

९२. लक्ष्मी बीज मन्त्र (चार अक्षरों वाला)

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं।

इस मन्त्र की सिद्धि बारह लाख जप करने से होती है। लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए यह मन्त्र विशेष रूप से प्रभावशाली है।

९३. लक्ष्मी बीज मन्त्र (दश अक्षरों वाला)

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।

उपयुक्त विधि के अनुसार ही इस मन्त्र की सिद्धि भी करनी चाहिए।

९४. महालक्ष्मी मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। (१)

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। (२)

यह लक्ष्मी का सर्व-श्रेष्ठ मन्त्र कहा गया है। उपयुक्त रीत्यनुसार इसका भी साधन करना चाहिए।

९५. महालक्ष्मी मन्त्र (बारह अक्षरों वाला)

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।

उपयुक्त विधि के अनुसार प्रस्तुत मन्त्र की भी साधना करनी चाहिए।

९६. सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः।

यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है। साधक को कमलासन की मुद्रा में पूर्व की ओर मुँह करके मन्त्र का जप करना चाहिए। जप के निमित्त यदि स्फटिक की माला प्रयुक्त की जाये, तो अत्युत्तम है। साधना-काल में घी का दीपक जलाकर जप करना चाहिए। इस मन्त्र का अनुष्ठान इक्कीस दिनों में पूरा कर लेना चाहिए। अर्थात् उक्त अवधि में एक लाख मन्त्र का जप पूर्ण कर ले।

९७. ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

इस मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए। इससे साधक को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

९८. वसुधा लक्ष्मी मन्त्र

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ ।

इस मन्त्र की सिद्धि के लिए एक लाख जप करना चाहिए। इसकी सिद्धि मिल जाने पर कभी पारिवारिक अशान्ति उत्पन्न नहीं होती, साथ ही साधक को अक्षय कीर्ति की उपलब्धि होती है। पारिवारिक सुख-शान्ति के लिए यह मन्त्र वरदान स्वरूप है।

९९. वार्ताली मन्त्र

ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धनि नमो रुन्धे रुन्धनि नमो जम्भे जम्भनि नमो मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्ट-प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्वबाधपदचित्त-चक्षुर्मुखगतिजिह्वां स्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि सत्रह हजार जप करने से होती है। जो साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर लेता है, उसे कभी शत्रु से भय उत्पन्न नहीं होता। साथ ही अविध्य में आने वाली घटनाओं की पूर्वसूचना देवी अपने साधक के कान में कह देती है।

१००. महिषमर्दिनि मन्त्र

ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि आठ लाख जप करने से होती है। सभी लोगों को वश में करने तथा सर्व-व्याधि विनाश के लिए यह मन्त्र अद्वितीय फलदायी कहा गया है।

१०१. रेणुका शबरी मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं ऐं ।

पाँच लाख जपने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। इसकी सिद्धि से साधक को सभी प्रकार की साधनाओं में पूर्ण सफलता मिलती है।

१०२. अन्नपूर्णा मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा । इससे सम्बन्धित अन्य मन्त्र भी हैं, जो नीचे दिये जा रहे हैं।

१०३. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ।

१०४. ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्नपारिजातेश्वर्यन्नपूर्ण स्वाहा ।

१०५. ॐ ह्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्नवरदे अन्नपूर्ण स्वाहा ।

एक लाख जपने से इन मन्त्रों की सिद्धि होती है। इनका साधक कुबेर के समान धनवान् बन जाता है। इसके कई मन्त्र भेद हैं, जो नीचे दर्शाये गये हैं। सभी मन्त्रों की साधना-विधि इसी प्रकार है।

१०६. पृथ्वी मन्त्र

ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। इसकी सिद्धि से जीवन में सभी भौतिक सुखों की उपलब्धि होती है।

१०७. शीतला मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः ।

जिस-किसी बालक को शीतला का प्रकोप हो, तो उसकी शान्ति के निमित्त इस मन्त्र का जप करना चाहिए। इसके जप करने से बालक रोगमुक्त हो जाता है और शीतला देवी की उग्रता जाती रहती है।

१०८. ज्वालामुखी मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेश्वरि ज्वालामुखि जृम्भिणि स्तम्भिनि मोहिनि वशीकरणि परधनमोहिनि सर्वारिष्टनिवारिणि शत्रुगण-संहारिणि सुबुद्धिदायिनि ओं आं क्रौं ह्रीं त्राहि त्राहि क्षोभय क्षोभय (अमुकं) मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि से प्रारम्भ करके इग्यारह दिनों तक बराबर इग्यारह सौ जप करे । देवी को कमेली का पुष्प चढ़ाकर, उन्हें खोवे की बनी हुई बर्फी का नैवेद्य अर्पित करे । निरन्तर इक्कीस दिनों तक इसका प्रयोग करने से साधक के अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है ।

तन्त्र साधना में प्रमुख देवियों के मन्त्र

१०९. स्वप्न-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्नं दर्शय ठः ठः स्वाहा ।

इस मन्त्र का ग्यारह सौ जप साधक चारपाई पर सोये-सोये ही करे । इग्यारह दिनों में इस मन्त्र की सिद्धि हो जाती है । इसके प्रभाव से स्वप्न में साधक के प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है ।

११०. स्वप्नेश्वरी मन्त्र

ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख जपने से सिद्धि प्राप्त होती है । इस मन्त्र का जाप रात्रि में ही करना चाहिए और साधक को साधना-काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।

१११. स्वप्न देवी मन्त्र

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्यं विद्ये वद वद स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि के निमित्त उपर्युक्त विधि का पालन करना आवश्यक है ।

११२. स्वप्न चक्रेश्वरी मन्त्र

ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा ।

इस मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए । ऐसा करने से देवी प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देकर साधक को वरदान देती हैं । साधक को आँगन गोबर से लीपकर घी का दीपक जला लेना चाहिए और वहाँ पर नैवेद्य के रूप में बताशे को रख दे । तदनन्तर उसी स्थान पर बैठकर साधक इक्कीस हजार जप करे । जप के पश्चात् बताशे को किसी कुमारी को बाँट दे । ऐसा करने से निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

११३. चण्ड योगिनी मन्त्र

ॐ ह्रीं सः नमः श्मशानवासिनि चण्डयोगिनि स्वाहा ।

साधक को रात्रि में इस मन्त्र का इग्यारह माला जप करना चाहिए । जप पूरा होने के पश्चात् उसी स्थान में शयन करे । ऐसा करने से देवी स्वप्न में साधक के सभी प्रश्नों का उत्तर दे देती हैं ।

११४. स्वप्न मातङ्गी मन्त्र

ॐ नमः स्वप्नमातङ्गिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ।

इसकी सिद्धि के लिए साधक को दिन में निर्जल व्रत करना चाहिए । रात्रि में इस मन्त्र का जप १०८ बार करके उसी स्थान पर सो जाना चाहिए । ऐसा करने से साधक को उसी रात्रि में अपने स्वप्नों का उत्तर देवी द्वारा मिल जाता है ।

११५. घण्टाकर्णि मन्त्र

ॐ यक्षिणि आकर्षिणि घण्टाकर्णे घण्टाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ।

रात्रि में नित्यप्रति ग्यारह सौ मन्त्र का जप ग्यारह दिनों तक निरन्तर करे। इस प्रकार करने से ग्यारहवें दिन साधक के प्रश्नों का उत्तर स्वप्न में मिल जाता है।

११६. कर्णपिशाचिनी मन्त्र

ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्ताकारिणि प्रवेशे अतीतानागत-वर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा।

इसके लिए आम के पत्ते पर गुल्ल बिल्खाकर अनार की कलम से रात्रि के समय एक सौ आठ बार मन्त्र का उच्चारण करे। मन्त्रोच्चारण के साथ लिख-लिखकर मन्त्रों को मिटाता जाये। अन्त वाले मन्त्र का पूजन कर ग्यारह सौ मन्त्रों का जप करे और पुनः उस पत्ते को सिरहाने रखकर सो जाये। इस प्रकार अनुष्ठान करने से इक्कीस दिन के अन्दर ही स्वप्न में साधक को उसके प्रश्न का उत्तर देवी द्वारा मिल जाता है। इस मन्त्र की सिद्धि दीपावली, होली एवं ग्रहण आदि के समय केवल पाँच सौ बार उच्चारण करने से ही हो जाती है। इसके आगे मन्त्र-संख्या ११७ से १२४ तक की अनुष्ठान विधि एक समान ही है।

कर्णपिशाचिनी अन्य मन्त्र

११७. ॐ क्रीं सनाम शक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डरोपिणि वद वद स्वाहा।

११८. ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि वद वद स्वाहा।

११९. ॐ हंसो हंस नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि स्वाहा।

१२०. ॐ भगवति चण्डकर्णपिशाचिनि स्वाहा।

१२१. ॐ ह्रीं चीं चिञ्चिनि पिशाचिनि स्वाहा।

१२२. ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा।

१२३. ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचायै स्वाहा।

१२४. कह कह कालिके गृल्ल गृल्ल पिण्डं पिशाचिके स्वाहा।

१२५. ॐ ह्रीं कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय त्वं फट् स्वाहा।

इसमें साधक को रात्रि के समय दीपक का तेल पैरों में मलकर एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिए। इससे मन्त्र की सिद्धि हो जाती है। इसमें देवीकी पूजा, ध्यान आदि करने का निषेध किया गया है।

१२६. ॐ कर्णपिशाचिनि पिङ्गललोचने स्वाहा।

एक लाख बार इस मन्त्र का जप करने से देवी प्रसन्न होकर साधक को त्रिकाल की बातें बता देती हैं।

१२७. ॐ विश्वरूपे पिशाचि वद वद ह्रीं स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि एक लाख जप करने से होती है। जप की समाप्ति के पश्चात् प्रतिदिन साधक को तीन हजार जप इक्कीस दिनों तक करना चाहिए। ऐसा करने से देवी साधक के कान में उसकी बात को बता देती हैं।

१२८. ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतराऽवरातीतानागत-वर्तमानानि दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचि स्वाहा।

इसके लिए दिन एवं रात्रि में घी का दीपक जलाकर त्रिशूल की पूजा करे तथा सवा लाख मन्त्र का जप करे। इस प्रकार की विधि से मन्त्र की सिद्धि होती है और साधक के कानों में आवाज आने लगती है।

१२९. कर्ण पिशाचिनी मन्त्र

(अट्ठारह अक्षरों वाला)

ॐ ह्रीं चः चः कम्बलिके गृल्ल पिण्डपिशाचिके स्वाहा।

साधक को अष्टारत्रि में देवी का ध्यान करके पूजा करनी चाहिए। दिनभर उपवास करके रात्रि में मन्त्र का जप करे। इसके बाद भुनी हुई मछली की

बलि देवी को देनी चाहिए। बलि देते समय 'ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीनबलि
कृष्णमम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा' कहकर बलि देवे। शाम को केवल एक बार
महाहार ग्रहण करे। आहार के समय उसमें से एक पिण्ड घर की छत पर फेंक
दे। इस प्रकार अनुष्ठान करते हुए साधक को एक लाख मन्त्र का जप करना
चाहिए। ऐसा करने से देवी प्रसन्न होकर प्रत्येक बात साधक के कान में
बता देती हैं।

१३०. सिद्ध कर्णपिशाचिनी मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमः, कर्णग्नौ कर्णपिशा-
चिकादेवि अतीतानागत-वर्तमान-वार्ता कथय मम कर्णे कथय-
कथय तथ्यं मुद्रावार्ता कथय कथय आगच्छागच्छ सत्यं सत्यं वद
वद वाग्देवि स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि प्राप्त करने के लिए श्मशान में बैठकर साधक को एक
लाख मन्त्र का जप करना चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि जब तक जप
की संख्या पूरी न हो जाये तब तक साधक को स्नान नहीं करना चाहिए और
न तो अपने दाँत ही साफ करे। इस प्रकार करने से देवी प्रसन्न होकर साधक
के कान में सभी बातों को बतला दिया करती हैं।

१३१. मतान्तर से कर्णपिशाचिनी मन्त्र

ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तर्कणि प्रविश अतीतानागत-वर्त-
मानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा।

सर्व-प्रथम साधक को इस मन्त्र का एक लाख जप कर लेना चाहिए।
तत्पश्चात् आम की लकड़ी पर इस मन्त्र को एक सौ आठ बार लिखना चाहिए।
ऐसा करने से स्वप्न में देवी द्वारा साधक के प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है।

१३२. चित्रेश्वरी मन्त्र

क्लीं वद वद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा।

इस मन्त्र-संख्या १३२ से १३६ तक एक ही प्रकार का विधान है। इस
मन्त्र का भी एक लाख जप साधक को करके सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए।

१३३. कुलजा मन्त्र

सैं कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा।

१३४. किर्तीश्वरी मन्त्र

ऐ ह्रीं श्रीं वद वद किर्तीश्वरि स्वाहा।

१३५. अन्तरिक्ष सरस्वती मन्त्र

ऐं ह्रीं अन्तरिक्ष-सरस्वति स्वाहा।

१३६. नील मन्त्र

ब्लूं वे वद वद त्रीं हं फट्।

१३७. विचित्र यक्षिणी मन्त्र

ॐ विचित्ररूपे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

इस यक्षिणी को प्रसन्न करने के लिए साधक को वटवृक्ष (वरगद के नीचे
बैठकर एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिए।

१३८. घट सरस्वती मन्त्र

ह्रसफैं ह्रसौः फ्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः
घटसरस्वति घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु कुरु
स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि भी मन्त्र-संख्या १३२ की भाँति प्राप्त करनी चाहिए।

१३९. विभ्रमा यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा।

श्मशान में बैठकर रात्रि में तीन लाख मन्त्र जपने से इस यक्षिणी की सिद्धि
मिलती है।

१४०. हंसी यक्षिणी मन्त्र

हंसी हंस हां त्रैं ह्रीं स्वाहा।

भूमि पर नगनावस्था में बैठकर जप करने से यह यक्षिणी साधक पर प्रसन्न हो जाती है।

१४१. भिक्षिणी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि हां ह्रीं स्वाहा।

रात्रि में किसी तिराहे पर बैठकर एक लाख जप करने से यह यक्षिणी प्रसन्न होती है।

१४२. जनरञ्जिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ क्लें जनरञ्जिनि स्वाहा।

तीन लाख मन्त्र-जप करने से यह यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।

१४३. विशाला यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं विशाले हां ह्रीं क्लीं स्वाहा।

इस यक्षिणी की सिद्धि पाने के लिए साधक को एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिए।

१४४. मदना यक्षिणी मन्त्र

ॐ मदने मदने देवि मामालिङ्गय सङ्गं देहि देहि श्रीः स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि एक लाख जप करने से होती है। सिद्धि के फलस्वरूप यक्षिणी साधक को एक प्रकार की गुटिका देती है, जिसे मुख में रख लेने से साधक अन्तर्धान हो सकता है।

१४५. घण्टा यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं पुरं क्षोभय भगवति गम्भीरस्वरे क्लें स्वाहा।

एक लाख मन्त्र का जप करने से यह यक्षिणी साधक पर प्रसन्न हो जाती है।

१४६. कालकर्णी यक्षिणी मन्त्र

ॐ त्वे कालकर्णिके टः टः स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख बार जपने से साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

१४७. महामाया यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा।

शमशान में बैठकर हड्डियों की माला से साधक को एक लाख जप करने चाहिए। इससे सिद्धि मिलती है।

१४८. माहेन्द्री यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलु कुलु बुलु बुलु हुं तः स्वाहा।

इस यक्षिणी की सिद्धि पाने के लिए साधक को एक लाख जप करना चाहिए।

१४९. शङ्खिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे हां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा।

मन्त्र संख्या १४९ से २२२ तक की अनुष्ठान विधि एक समान है। उपरोक्त इन सभी यक्षिणियों की सिद्धि के लिए साधक को एक लाख मन्त्र का जप बहुरूप पूर्वक रहकर करना चाहिए।

१५०. चन्द्रिका यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हुं सः क्लीं स्वाहा।

१५१. श्मशानी यक्षिणी मन्त्र

ॐ हुं ह्रीं स्फूं श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा।

१५२. वट यक्षिणी मन्त्र

ॐ एह्यहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्व-सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

१५३. मेखला यक्षिणी मन्त्र

ॐ क्रों मदनमेखले नमः स्वाहा।

१५४. विकला यक्षिणी मन्त्र

ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा।

१५५. लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ।

१५६. मानिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं मानिनी ह्रीं एहोहि सुन्दरि हसहस मिह सङ्गमहः
स्वाहा ।

१५७. शतपतिका यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रां शतपतिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा ।

१५८. सुलोचना यक्षिणी मन्त्र

ॐ क्लीं सुलोचनादि देवि स्वाहा ।

१५९. सुशोभना यक्षिणी मन्त्र

ॐ अशोकपल्लवा कारकरतले शोभने देवि श्रीं क्षः स्वाहा ।

१६०. कपालिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्ले क्लीं हससकल ह्रीं फट्
स्वाहा ।

१६१. विलासिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ विरूपाक्षविलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया
मे भव क्ले स्वाहा ।

१६२. नटी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा ।

१६३. कामेश्वरी यक्षिणी मन्त्र

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा ।

१६४. स्वर्णरेखा यक्षिणी मन्त्र

ॐ वर्कशल्मिले सुवर्णरेखे स्वाहा ।

१६५. सुरसुन्दरी यक्षिणी मन्त्र

ॐ अ गच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ।

१६६. मनोहरा यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा ।

१६७. प्रमदा यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा ।

१६८. अनुरागिणी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ।

१६९. नखकेशिका यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं नखकेशिके कनकावति स्वाहा ।

१७०. नेमिनि यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं महायक्षिणी भामिनि प्रिये स्वाहा ।

१७१. पद्मिनी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि वल्लभे स्वाहा ।

१७२. स्वर्णावती कनकावती यक्षिणी मन्त्र

ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा ।

१७३. रतिप्रिया यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छ रतिमुन्दरि स्वाहा ।

१७४. कुबेर यक्षिणी मन्त्र

ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धि मे देहि
दापय स्वाहा ।

१७५. विन्व यक्षिणी मन्त्र

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदाय्यै ॐ नमः श्रीं
क्लीं ऐं ॐ स्वाहा ।

१७६. चन्द्रद्रवा वटयक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा ।

१७७. धनदा पिप्पल यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ।

१७८. पुत्रदा आम्रयक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ।

१७९. अशुभक्षयकरी धात्री यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं नमः ।

१८०. विद्यादात्र्युदुम्बर यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः ।

१८१. विद्यादात्रीनिर्गुडी यक्षिणी मन्त्र

ॐ सरस्वत्यै नमः ।

१८२. जयार्क यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा ।

१८३. सन्तोषा श्वेतगुञ्जा यक्षिणी मन्त्र

ॐ जगन्मात्रे नमः ।

१८४. राज्यदा तुलसी यक्षिणी मन्त्र

ॐ क्लीं क्लीं नमः ।

१८५. राज्यदा कोलयक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः ।

१८६. कुश यक्षिणी मन्त्र

ॐ वाङ्मयायै नमः ।

१८७. अपामार्ग यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं भारत्यै नमः ।

१८८. क्षीरार्णवा यक्षिणी मन्त्र

ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः ।

१८९. उच्छिष्ट यक्षिणी मन्त्र

ॐ जगत्त्रय-मातृके पद्मनिभे स्वाहा ।

१९०. चन्द्रामृत यक्षिणी मन्त्र

ॐ गुलु गुलु चन्द्रामृतमपि अवजालितं हुलु हुलु चन्द्रतीरे स्वाहा ।

१९१. स्वामीश्वरी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा ।

१९२. महामाया भोग यक्षिणी मन्त्र

ॐ नमो महामाया महाभोगदायिनि हूं स्वाहा ।

१९३. त्यागसाधन यक्षिणी मन्त्र

अहो त्यागी महात्यागी अर्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं ह्रीं स्वाहा ।

१९४. सर्वाङ्गसुलोचना यक्षिणी मन्त्र

ॐ कुवलये हिलि हिलि कुरु कुरु सिद्धि सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा ।

१९५. भूतलोचना यक्षिणी मन्त्र

ॐ भूते सुलोचने त्वम् ।

१९६. जलपाणि यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वल-ज्वल हूं त्वं स्वाहा ।

१९७. मातङ्गेश्वरी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातङ्गेश्वर्यै नमः ।

१९८. विद्या यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा ।

१९९. हटेले कुमारी यक्षिणी मन्त्र

ॐ नमो हटेले कुमारि स्वाहा ।

२००. बन्दी साधन मन्त्र

ॐ हिलि हिलि बन्दीदेव्यै स्वाहा ।

२०१. अष्ट अप्सरा आवाहन मन्त्र

तत्क्षणात् सर्वापसरस आगच्छागच्छ हूँ यः यः ।

२०२. शशि अप्सरा मन्त्र

ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छाऽऽगच्छ स्वाहा ।

२०३. तिलोत्तमा अप्सरा मन्त्र

ॐ श्रीं तिलोत्तमे आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०४. काञ्चनमाला अप्सरा मन्त्र

ॐ श्रीं काञ्चनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०५. कुण्डलाहारिण्यप्सरा मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं कुण्डलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०६. रत्नमाला अप्सरा मन्त्र

ॐ हूँ रत्नमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०७. रम्भा अप्सरा मन्त्र

ॐ सः रम्भे आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०८. उर्वशी अप्सरा मन्त्र

ॐ श्रीं उर्वशि आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२०९. भूषणा अप्सरा मन्त्र

ॐ वाः श्री वाः श्रीं भूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२१०. अष्ट किन्नरी मन्त्र

ॐ ह्रीं अकट्ट कट्ट हूँ यः फट् ।

२११. मञ्जुघोषा किन्नरी मन्त्र

ॐ मञ्जुघोषे आगच्छागच्छ स्वाहा ।

२१२. मनोहारी किन्नरी मन्त्र

ॐ मनोहार्ये स्वाहा ।

२१३. सुभगा किन्नरी मन्त्र

ॐ सुभगे स्वाहा ।

२१४. विशालनेत्रा किन्नरी मन्त्र

ॐ विशालनेत्रे स्वाहा ।

२१५. सुरतिप्रिया किन्नरी मन्त्र

ॐ सुरतिप्रिये स्वाहा ।

२१६. अश्वमुखी किन्नरी मन्त्र

ॐ अश्वमुखि स्वाहा ।

२१७. दिवाकीर किन्नरी मन्त्र

ॐ दिवाकीरमुखि स्वाहा ।

२१८. सुभग कात्यायनी मन्त्र

ॐ सुरतिप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे कञ्चन-
मालाविभूषण-नूपुरशब्देनाविशाविश पूरक साधकप्रिये स्वाहा ।

२१९. कुण्डलकात्यायनी मन्त्र

ॐ यामिनि कृतिनि अकालमृत्युनिवारिणि खड्गत्रिशूलहस्ते
शीघ्रं सिद्धिं ददाति हि तां साधक अज्ञापयति ह्रीं स्वाहा ।

२२०. चण्ड कात्यायनी मन्त्र

ॐ ऐं क्रं रुद्रभयङ्करि अट्टाट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपे
रत्नाकरि सुवर्णहस्ते यमनिकृन्तनि सर्वदुःखप्रशमनि डं डं डं डं हूं हूं हूं
शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ ह्रीं जः स्वाहा ।

२२१. रुद्र कात्यायनी मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं हे हे फट् स्वाहा ।

२२२. महाकात्यायनी मन्त्र

ॐ भू हू लल्लं फट् ।

२२३. सुरकात्यायनी मन्त्र

ॐ भूं हूं फट् ।

२२४. विप्रचाण्डालिनी मन्त्र

ॐ नमश्चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचाण्डालिनि शोभिनि प्रकर्षिणि आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हूं फट् स्वाहा ।

इसकी सिद्धि के लिए साधक को बड़ाई से नियम पालन की आवश्यकता होती है । अनुष्ठान के प्रथम दिन व्रत रहकर भूमि पर शयन करे । आहार में मिष्ठान्न का भोजन करे । आधा भोजन बर लेने के बाद थाली में जूटन छोड़ दे और जूठे मुँह किसी अपवित्र स्थान में बैठकर इस मन्त्र को एक लाख जपे । जप की संख्या २१ दिनों में पूरी हो जानी चाहिए । अनुष्ठान-काल में यदि रात्रि में भय दिखाई दे तो चिन्ता न करके बराबर अनुष्ठान करते रहें तो अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है । इससे देवी प्रसन्न होकर वरदान देती हैं ।

२२५. क्षोभिणी मन्त्र

ॐ नमः उच्छिष्टचाण्डालिनि क्षोभिणि दह दह द्रव द्रव आनपूरी श्रीं भास्करि नमः स्वाहा ।

इसका बाईस हजार एक सौ तेइस मन्त्र जप कर लेने से पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

२२६. प्रेत साधन मन्त्र

ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विविध प्रकार के मन्त्र —

इसके लिए शीघ्र कर्म से बचा हुआ जल मूल नक्षत्र से प्रारम्भ करके वज्र के वृक्ष में डाल दे । और उसी पेड़ के नीचे बैठकर नित्य एक सौ आठ मन्त्र का जप करे । इस प्रकार लगातार छह महीने तक जप करे । इसके बाद एक दिन पानी न डालकर मन्त्र का जप करे, तो प्रेत प्रत्यक्ष होकर साधक से पानी माँगीगा । प्रेत को वचनबद्ध कर ले कि वह उसके कथनानुसार कार्य करेगा । इस क्रिया से प्रेत साधक के वश में हो जाता है ।

२२७. वट यक्षिणी चेटक मन्त्र

ॐ सुमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हूं चेटक जय जय स्वाहा ।

इस मन्त्र का प्रतिदिन एक सौ अठारह बार जप करे और भोजन करते समय उसमें-से आधा भोजन छत पर फेंक दिया करे । छह महीने तक इस क्रिया को करने से यक्षिणी प्रकट होकर भोजन लेती और साधक को इच्छित वर प्रदान करती है ।

२२८. लिङ्ग चेटक मन्त्र

ॐ नमो लिङ्गोद्भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धि वित्तानां पार्वतीपते ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं हः ।

अपने लिङ्ग को दाहिने हाथ में लेकर बायें हाथ से एक लाख मन्त्र का जप करे तो साधक को वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है ।

२२९. नाना सिद्धि चेटक मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धिर्देहि देहि श्रीं बलीं स्वाहा ।

इस मन्त्र का पाँच लाख जप करना चाहिए । मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जीवन में सभी सुख उपलब्ध होते हैं ।

२३०. मागर चेटक मन्त्र

ॐ नमो भगवते समुद्राय देहि रत्नानि जलराशे त्रीणि नमो-ऽस्तु ते स्वाहा ।

किसी नदी के किनारे रात्रि में बैठकर एक लाख मन्त्र का जप करे तो साधक की तकिया के नीचे सोकर उठने पर तीन रत्न प्राप्त होते हैं।

२३१. काली चेटक मन्त्र

ॐ कंकाली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा।

घमेली के फूलों का रस निकाल कर इस मन्त्र से एक हजार बार हवन करे तो देवी प्रसन्न होती हैं और साधक के सिरहाने से निद्रा के बाद उसे नित्य एक तोले सुवर्ण की प्राप्ति होती है।

२३२. फेत्कारिणी चेटक मन्त्र

ॐ नमो अश्म कर्णेश्वरि दुर्वले आर्द्रकेशी जटाकलापे ढक्कण फेत्कारिणि स्वाहा।

इसके लिए अजमोद की जड़ को घोड़ी के दूध में हरताल के साथ घिसकर मुख में रख ले और इस मन्त्र का एक हजार बार जप करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को एक बार पढ़कर जिस किसी से भी जो वस्तु मांगी जायेगी वह उसे सहर्ष दे देगा।

२३३. रतिराज चेटक मन्त्र

ॐ हां ह्रीं हूं विटपाय स्वाहा।

पाँच लाख जप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। सिद्धि हो जाने पर इस मन्त्र को एक बार पढ़कर जिस स्त्री से रमण किया जायेगा वह सदैव वश में रहेगी।

२३४. शतयोजन दृष्टि चेटक मन्त्र

ॐ ह्रीं फ्रूं स्वाहा।

इस प्रयोग में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन गिद्ध पक्षी का सिर काट लावे और उसे जमीन में गाड़ दे। तदनन्तर उसमें लहसुन के बीज बो दे। पुण्य नक्षत्र में उस लहसुन के फूल को जल में पीस ले और उसमें घी मिला दे और ४१ लाखों में अंजन लगावे, फिर इस मन्त्र को पढ़े तो साधक को चार सौ कोस की क्षीर्ण भी दिखाई पड़ती है और उसकी दृष्टि अत्यन्त तीक्ष्ण होती है।

२३५. तस्कर ग्रहण चेटक मन्त्र

उद्मुद् जल्ल जलाल,

पकड़ चोटी घर पछाड़।

मेज कुदा लाव मुद्दा,

या कहू हारो या कहू हारो ॥

नदी के किनारे या किसी कूप के पास बैठकर इस मन्त्र को एक सौ इक्कीस बार जप कर सो जाय, तो उसे छिपाई हुई चोरी की सामग्री या चोरी की चीजें या चोर का पता लग जाता है।

२३६. चौर्य चेटक मन्त्र

ॐ नमो नारसिंह वीर ज्युं ज्युं तूं चालै, पानी चालै, चोर का चित्त चालै, चोर के मुख में लोही चीलै, काया धर्मै, माया परै करै जो चोर के मुख में लोही न चलावै तो गोरखनाथ की आज्ञा मेटै, नौ नाथ चौरासी सिद्ध की आज्ञा मेटै।

इसके लिए सत्रा पाव चावल लेकर तीन बार पानी से धो ले और उसे गोमूत्र में भिगोकर सुखा डाले। सूखने पर उस पर एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे। उस अभिमन्त्रित चावल को थोड़ा-थोड़ा सब को खाने के लिए दे। स्नानमें से जो चोर होगा उसके मुख से रक्त का बमन होने लगेगा।

२३७. गुप्त वार्ता चेटक मन्त्र

रविदिन जहाँ जु धुग्धू पावे,

ताको काढ़ कलेजो लावे।

ताको धूप दीप दे राखे,

सोवत नर के हिरदे नाखे।

गुप्त बात मन में जो होई,

ज्यों की त्यों सब ही कह देई ॥

इस मन्त्र की सिद्धि से मन की गुप्त बात जानी जा सकती है।

२८. स्वर्ण सिद्धि मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः वं आपदुद्धारणाय अजामल-
बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णकर्षण-भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय
श्रीमहाभैरवाय नमः ।

तीन हिस्सा पारा, नव हिस्सा जस्ता लेकर मिट्टी के बर्तन में रख करके
उसमें साग पत्र का रस मिला दे, तो भस्म हो जायेगा । उरोक्त मन्त्र द्वारा
चाँदी के पत्र पर इस भस्म का लेप कर दिया जाये, तो वह पत्र सुवर्ण का हो
जायेगा ।

२३९. अदृश्य विधान मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं आसुरी रक्तवाससे अघोर अघोर कर्मकारिके
अदृश्यं कुरु कुरु ह्रीं ऐं ॐ ।

इस मन्त्र को रविवार से आरम्भ करके एक सप्ताह तक निरन्तर एक लाख
मन्त्र का जप करे और साथ ही उपवास भी करे । शरीर पर किसी प्रकार का
वस्त्र भी धारण न करे तो अगले रविवार को यक्ष आकर साधक को एक गुटिका
प्रदान करता है, जिसे मिट्टी में रखने से साधक अदृश्य हो जाता है । वह अदृश्य
रह कर हर किसी को देख सकता है । परन्तु अन्य कोई व्यक्ति उसे नहीं
देख सकता ।

२४०. प्रत्यङ्गिरा मन्त्र

ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोरयः क्रूरांकृत्यां वधूमिव ह्य ब्रह्मणा
अपनिर्णुदमः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ ।

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्धि मिलती है । इससे साधक को
जीवन भर किसी प्रकार का रोग नहीं होता । कामना-भेद से दश हजार जप का
भी विधान है ।

२४१. चोरी न होने का मन्त्र

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वापनः ।
अपव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥ १ ॥

जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः ।
अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शङ्करः ॥ २ ॥

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
वीभत्सुविजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥ ३ ॥
तिस्रो भार्या कफलस्य दाहिनी मोहिनी सती ।
तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥ ४ ॥

कफलकः कफलकः कफलकः ।

रात्रि में सोते समय उपर्युक्त मन्त्र का एक बार जप एवं श्लोकों को पढ़
लेने से घर में चोरी होने का भय नहीं रहता ।

२४२. सुख प्रसव मन्त्र

ॐ मुक्ता पाशा विमुक्ताशा मुक्ता सूर्येण रश्मयः ।
मुक्ता सर्वभयाद् गर्भं एहि माचिर माचिर स्वाहा ।

इस मन्त्र को आठ बार पढ़कर जल को अभिमन्त्रित कर ले । उस जल को
गर्भवती महिला को पिला देने से सुख पूर्वक शीघ्र प्रसव हो जाता है ।

२४३. भूत उपद्रव नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोर-रौद्र-महिषासुररूपाय त्रैलोक्या-
डम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय
मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय
ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बन्धय बन्धय हृदये रतम्भय स्तम्भय
किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय
प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय प्रभूत प्रच्छादय प्रच्छादय
स्वाहा, राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय
सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनी-
ग्रहं साधय साधय अनेन मन्त्रेण डाकिनी-शाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाचाद्यै-
काहिक-द्वचाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक - पञ्चवातिक-पैतिक-श्लैष्मिक-

सान्निपातिक-कोसरि-डाकिनीप्रहादीन् मुञ्च मुञ्च स्वाहा । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।

लोहे की सलाख या फाड़ से इक्कीस बार इस मन्त्र को पढ़कर भाड़ दे तो भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाती है ।

२४४. बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरुको कालो बिच्छू कांकरवालो उत्तर बिच्छू न कर टालो उतरै तो उताहूँ, चढ़े तो माहूँ, गरुड़ मोर पंख हकालूँ शब्द साँचा विण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र को छह बार पढ़कर झाड़ दे तो बिच्छू काटने का विष दूर हो जाता है ।

२४५. नजर झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु की ॐ नमो नजर जहाँ परपीर न जानी बोले छलसों अमृतबानी, कहो नजर कहाँ ते आई, यहाँ कौ ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो कहाँ ठाम, किसकी बेटी कहाँ तेरो नाम कहाँ से उड़ी कहाँ को जाया अब ही बंसकर ले तेरी माया मेरी जात सुना चितलाय जैसी होय सुनाऊँ आय, तेलन तमोलन चूहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी राजा की रानी जाको दोष ताहि के सिर पड़े जाहर पीर नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

जिस-किसी को नजर लगी हो, तो उसे इस मन्त्र को एक बार पढ़कर भाड़ दे तो नजर का प्रकोप नहीं रह जाता ।

२४६. ज्वर दूर करने का मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमित-तेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सान्निपातिकं

सन्ततज्वरं तत्क्षणं पाप्मासिकं सांवत्सरिकं सर्वान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि किरि किरि सर्वान् ज्वरान् ग्रस ग्रस पिव पिव ब्रह्मज्वरं भीषय भीषय विष्णुज्वरं त्रासय त्रासय माहेश्वरज्वरं निघातय भूतज्वर-प्रेतज्वर-अपस्मरादि-महाव्याधीनाशाय नाशय सर्वान् दोषान् घातय घातय महावीर वानर ज्वरान् बन्ध बन्ध ॐ ह्रां ह्रीं हुं हुं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र के द्वारा इक्कीस बार पढ़कर भाड़ दे तो हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है ।

२४७. सर्पदंश का मन्त्र

खं खः ।

इस मन्त्र को एक सौ आठ बार पढ़कर जल को अभिमन्त्रित कर ले । सर्पदंश से आहत व्यक्ति को यह जल पिना देने से विष का प्रभाव जाता रहता है ।

२४८. शत्रुपीड़ा कागक मन्त्र

वीर वीर महावीर, सात समुद्र का सोखा नीर ।
अमुका के ऊपर चौकी चढ़े, हियो फोड़ चौटी चढ़े ॥
साँस न आवे पड़्यो रहे, काया माहि जीव रहे ।
लाल लंगोट तेल सिन्दूर, पूजा माँगो महावीर ॥
अन्तर कपड़ा पर तेल सिन्दूर, हजरत वीर की चौकी रहे ।

मंगलवार की अर्धरात्रि में हनुमान् जी को तेल, सिन्दूर तथा लाल वस्त्र चढ़ावे, चने की दाल और गुड़ के नैवेद्य का भोग लगावे । तदनन्तर किसी दूसरे कपड़े में तेल, सिन्दूर लगाकर—अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम बोलकर सात सूई उस कपड़े में चुभो दे और उस कपड़े को मिट्टी की हाँड़ी में रखकर उसका मुँह बन्द कर भूमि में गाड़ दे, तो शत्रु तड़फड़ाने लगेगा । जब ठीक करना हो तो जमीन से हाँड़ी निकालकर उस कपड़े से सूइयाँ निकाल ले और उस कपड़े को धो दे, तो शत्रु पीड़ा रहित हो जायेगा ।

२४६. शत्रु को पागल करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रूणां (अमुकं) बुद्धिस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।
ऊँट की लीद को छाया में सुखा ले । तत्पश्चात् उस में-से एक रत्ती लेकर एक सौ आठ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उस लीद को पन में रखकर शत्रु को खिला दे तो शत्रु पागल हो जाता है ।

२५०. शत्रुगृह कलह करण मन्त्र

ॐ ह्रीं हुं फट् ।
रविवार के दिन दोपहर में जहाँ गधा लोटा हो, उस स्थान की धूल ले आवे और उसके सामने गुग्गुलु जलाकर एक सौ आठ बार मन्त्र का पढ़े । उस धूल को शत्रु के चिर पर या उसके घर में डाल दे, तो उसके घर में बराबर लड़ाई-झगड़ा होता रहेगा ।

२५१. विक्रय रोधन मन्त्र

भवर वीर तू चेला मेरा,
बाँध दुकान कहा कर मेरा ।
उठे न डण्डी विके न माल,
न भवरवीर सो लेकर जाय ॥

इस मन्त्र को काले उड़द के दाने पर एक सौ आठ बार जप करके शत्रु की दुकान में डाल दे । इस क्रिया को तीन बार करने से शत्रु के दुकान की बिक्री खन्द हो जायेगी ।

२५२. शत्रु मारण मन्त्र

क्रौं नमो भगवति आर्द्र पटेश्वरि हरित नीलपटे कालि आर्द्र-जित्वा चाण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजित्वा सहस्रनयने एहि एहि (अमुकं) ते पशुं ददामि । (अमुकस्य) जीवं निःक्रन्तय एहि तज्जीवितापहारिणि हुं फट् भूभुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रव साखोदिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिव पिव हुं फट् स्वाहा ।

बेवल इस मन्त्र का जप करने से ही एक महीने में शत्रु की मृत्यु हो जाती है । इसे कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ करके चतुर्दशी तक एक लाख मन्त्र का जप कर लेना चाहिए ।

२५३. मुख स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलि किलि वाचो भञ्जिनि मुख-स्तम्भनि स्वाहा ।

शत्रु का नाम लेकर इस मन्त्र का एक लाख जप करे तो शत्रु का मुँह बन्द हो जाता है ।

२५४. बुद्धि स्तम्भन मन्त्र

ॐ घूं ।

उल्लू अथवा बन्दर की विष्टा को इस मन्त्र से पाँच बार अभिमन्त्रित कर पान में रखकर शत्रु को खिला दे तो शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जाती है ।

२५५. वशीकरण मन्त्र

ॐ हूं ।

सफेद सरसों प्रियंगु के साथ पीसकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके मस्तक पर डाल दे तो वह दास के समान उसके वश में हो जाता है ।

२५६. विचित्र मन्त्र

कड़वी तुम्बी तेल ले,
बीट कबूतर लाय ।
हड्डी गधा मँगाय के,
सबको ले पिसवाय ॥
माये पर याको तिलक,
जो कोई लेय लमाय ।
रावण सों दीखन लगे,
यामें संशय नाय ॥

इस मन्त्र में लिखित वस्तुओं को लेकर विधिवत् तिलक करे तो उसका रूप रावण-जैसा हो जाता है।

२५७. सम्मोहनार्थ चरणायुध मन्त्र

आं यूं कोलि यूं कोलि वां ह्रीं यूं कोलि चुवा क्रौं ।

पाँच लाख मन्त्र जपने से सिद्धि मिलती है। इस मन्त्र की सिद्धि से साधक सारे संसार को सम्मोहित कर सकता है।

२५८. सन्तान गोपाल मन्त्र

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

इस मन्त्र को एक लाख जप करने से सिद्धि मिलती और साधक को पुत्र की प्राप्ति होती है। जिस-किसी भी व्यक्ति के लिए इसका अनुष्ठान किया जाय तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है।

२५९. पुत्र-प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को आग्र बृक्ष पर बैठ कर यदि एक लाख जप किया जाय तो उसे निश्चय सन्तान की प्राप्ति होती है।

२६०. गरुड़ मन्त्र

क्षिप ॐ स्वाहा ।

इस मन्त्र का पाँच लाख बार जप करना चाहिए। इससे शत्रु शान्त हो जाते हैं। साधक रोगमुक्त होकर जीवन में उन्नति करता है।

२६१. गरुड़माला मन्त्र

ॐ नमो भगवते गरुडाय कालाग्निवर्णाय एहोहि कालानल लोलजिह्वाय पातय पातय मोहय मोहय विद्रावय विद्रावय, भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय हन हन दह दह पत पत हूं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र विधि का एवं फल उपर्युक्त मन्त्र संख्या (२६०) के ही समान है।

२६२. घण्टाकर्ण मन्त्र

ॐ घण्टाकर्णो महावीरः (अमुकं) सर्वोपद्रवनाशनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र के द्वारा इससे जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति, शत्रुनाश एवं न्यायालयीय कामों में पूर्ण सफलता मिलती है। यह मन्त्र एक लाख जप लेने से सिद्ध हो जाता है।

२६३. चित्रगुप्त मन्त्र

ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधिकारिणे म्लव्यं जन्म सम्पत्प्रलयं कथय कथय स्वाहा ।

यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है। जो साधक इस मन्त्र को सिद्ध कर लेता है उसे मृत्यु के बाद नरकगामी नहीं होना पड़ता। उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

२६४. धर्मराज मन्त्र

ॐ क्रौं ह्रीं आं वैं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः ।

इस मन्त्र को एक लाख जपने से सिद्धि मिलती है। मन्त्र को सिद्ध कर लेने के पश्चात् भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर घड़े में रख देना चाहिए। इससे वाक्सिद्धि, लक्ष्मीप्राप्ति आदि सभी सुख मिलते हैं।

२६५. कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र

ॐ फ्रों छीं क्लीं म्रूं आं ह्रीं क्रौं श्रीं ऐं हूं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ।

अनेक देवताओं के मन्त्र

२६६. गणपति मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरदये नमः (१)

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय
ॐ ठः (२)

२६७. वक्रतुण्ड मन्त्र (षडक्षर)

वक्रतुण्डाय हुम् ।

२६८. वक्रतुण्ड मन्त्र (इक्तीस अक्षरोंवाला)

रायस्पोषस्य ददिता निधियो रत्नधातुमान, रक्षोहणोबलगहनो
वक्रतुण्डाय हुम् ।

२६९. उच्छिष्टगणपतिनवार्ण मन्त्र

ॐ हस्तिपिशान्निलिखे स्वाहा ।

२७०. शक्तिविनायक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ।

२७१. लक्ष्मीविनायक मन्त्र

ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये, वर वरद सर्वजनं मे वशमानय
स्वाहा ।

२७२. त्रैलोक्यमोहनकर गणेश मन्त्र

वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं गं गणपते वर वरद सर्वजनं मे
वशमानय स्वाहा ।

२७३. ऋणहर्ता गणेश मन्त्र

ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् ।

२७४. हरिद्रागणेश मन्त्र

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये, वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय
स्तम्भय स्वाहा ।

२७५. सिद्धिविनायक मन्त्र

ॐ नमो सिद्धिविनायकाय, सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय
सर्वराज्यवश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ।

२७६. शिव षडक्षर मन्त्र

ॐ नमः शिवाय ।

२७७. शिव पञ्चाक्षरी मन्त्र

नमः शिवाय

२७८. शिव मन्त्र (आठ अक्षरों वाला)

ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं ।

२७९. मृत्युञ्जय मन्त्र (तीन अक्षरों का)

ॐ ह्रौं जूं सः ।

२८०. त्र्यम्बक मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

२८१. महामृत्युञ्जय मन्त्र

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि
पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः
स्वरो जूं सः ह्रौं ॐ ।

२८२. रुद्र मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

२८३. त्वस्ति रुद्र मन्त्र

ॐ यो रुद्रोजनी यो त्मुय ओषधी ऽणुयो रुद्रो विश्वा भुवना
विवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु ।

२८४. सूर्य मन्त्र

ॐ धृणिः सूर्य आदित्यः (१) । ॐ ह्रीं धृणिः सूर्य आदित्य
श्रीं । (२)

२८५. विष्णु मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय ।

२८६. विष्णु मन्त्र (वारह अक्षरों वाला)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

२८७. राम मन्त्र

रां रामाय नमः ।

२८८. राम मन्त्र (दश अक्षरों वाला)

हं जानकीवल्लभाय स्वाहा ।

२८९. कृष्ण मन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।

२९०. लक्ष्मीनारायण मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः ।

२९१. नृसिंह मन्त्र

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।

नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

२९२. वाराह मन्त्र

ॐ नमो भगवते वाराहरूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात्पते भूपतित्वं
देह्यते ददापय स्वाहा ।

२९३. हनुमान मन्त्र

ह्रौं ह्रस्फे ह्रं सै ह्रस्फे ह्रसौ हनुमते नमः (१)

ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशाय आवेशाय स्वाहा (२)

२९४. हनुमान मन्त्र (अट्ठारह अक्षरों का)

ॐ नमो भगवते आज्ञनेयाय महाबलाय स्वाहा ।

२९५. हनुमान मन्त्र (वारह अक्षरों वाला)

ॐ हं हनुमते रुद्रात्मकाय हं फट् ।

२९६. द्वादशाक्षर वीर साधन मन्त्र

हं पवननन्दनाय स्वाहा ।

२९७. हनुमान मन्त्र (चौदह अक्षरों वाला)

ॐ नमो हरिमर्कट मर्कटाय स्वाहा (१)

२९८. ॐ नमो हरिमर्कट मर्कटाय ॐ अमुकं हरिमर्कट मर्कटाय
स्वाहा (२)

२९९. आपत्ति उद्धारक बटुक भैरव मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपद्दुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीम् ।

३००. स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आम्बुद्वारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं । अजामिलब्रह्मा
लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय । मम दारिद्र्य-विद्वेषणाय महा
भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं ।

३०१. क्षेत्रपाल मन्त्र

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

३०२. कामदेव बीज मन्त्र

क्लीं कामदेवाय नमः (१)

३०३. ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवागाय

धीमहि तन्नो अनङ्गः प्रचोदयात् । (२)

३०४. वरुण मन्त्र

ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तोष्य अस्मत्पाशं वरुणो मुमोच
अत्रो वन्वाना अदितेरुस्थाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वा ।

३२०. नारी (पत्नी) वशीकरण मन्त्र

कामोजनङ्गः पुष्पशरः कन्दर्पो मीनकेतनः ।

श्रीविष्णुतनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो ! ॥

तीस हजार मन्त्र का जप करने से सिद्ध होता है और पत्नी वश में रहती है ।

३२१. पुरुष (पति) वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा । (१)

ॐ भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं मम पति वशं कुरु कुरु स्वाहा । (२)

सवा लाख जप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है । जप के बाद दशांश हवन करे तो पति वश में रहता है । (१)

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में श्मशान में बैठकर अथवा वटवृक्ष के नीचे एक लाख मन्त्र का जप करने से इकतिस दिन में मन्त्र की सिद्धि होती है और पुरुष उस स्त्री का दास होकर रहता है । (२)

३२२. शत्रु को मित्र बनाने का मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षयाय घोरदंष्ट्रिणे विकरालानने ग्रह-यक्ष-भूतानां नेत्रं कर अमुकं हन हन ग्रहणं हुं फट्टः ।

स्नान के पश्चात् नदी के किनारे हरी दूब के आसन पर बैठकर इस मन्त्र का जप करे तो इक्कीस दिन के बाद शत्रु दुश्मनी छोड़ कर मित्र बन जायेगा ।

३२३. प्रेतात्मा वशीकरण मन्त्र

ॐ श्रीं नं भूं भूतेश्वरी मम कुरु स्वाहा । (१)

ॐ साल सलीता सोसल वाई काग पठन्ता घाई आई ॐ लं लं लं लं ठः ठः । (२)

बबूल के पेड़ के नीचे मूल नक्षत्र में बैठकर तीन दिन इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जपे तो प्रेत प्रत्यक्ष होकर साधक को इच्छित वरदान देता है । (१)

शनिवार की आधीरात में नमन होकर बबूल के वृक्ष के नीचे आम की लकड़ी जलाकर मन्त्र पढ़े और काले तिल और उड़दको आहुति दे, तो प्रेत प्रकट हो जाता है । प्रकट होने पर अपने हाथ को काटकर सात बूँदें रक्त पृथ्वी पर टपका दे तो प्रेत सदा वश में रहता है । (२)

३२४. राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै देव्यै स्वाहा ।

इसके लिए बीस हजार बार मन्त्र का जप करने चाहिए । इससे सिद्धि प्राप्त वर राजा वश में होता है ।

३२५. सर्वजन सम्मोहन मन्त्र

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि मिलि ठः ठः ।

इस मन्त्र का तीस हजार जप करने से मन्त्र की सिद्धि होता है । इसकी सिद्धि के द्वारा साधक सभी को सम्मोहित कर सकता है ।

३२६. उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को दश हजार बार जप करके सिद्ध कर ले । तदनन्तर दोहर में जिस स्थान पर गधा लोटता हो उस स्थान की मिट्टी उतर मुँह खड़े होकर बायें हाथ से उठा ले और जिस व्यक्ति के घर में उस मिट्टी को डाल दे तो उसका उच्चाटन होगा । लगातार सात दिनों तक इसके प्रयोग से स्वामी का भी उच्चाटन होता है ।

३२७. वैरी उच्चाटन मन्त्र

ॐ शारदरुद्रस्वरूपाय अमुकं मे शत्रुम् उच्चाटय ठः ठः स्वाहा (१)

उपरोक्त मन्त्र को कनेर वृक्ष की जड़ पर पढ़कर सिद्ध कर ले । इससे

अभिमानित जल जिसके दरवाजे पर डाल दिया जाये तो बैरी का उच्चाटन होता है। (१)

श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा शत्रूच्चाटनं भवति (२)

इस मन्त्र का एकसौ आठ बार जप करे तो बैरी का उच्चाटन होता है। (२)

ॐ नमो भगवते महारुद्राय रौद्ररूपाय अमुकस्य सपरिवारस्यो-
च्चाटनं कुरु कुरु फट् स्वाहा। (३)

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से कार्य की सिद्धि होती है। (३)

३२८. अकर्षण मन्त्र

ॐ यं यं लं लं लं क्रां क्रां क्रीं ठः ठः (१)

ॐ म्लं म्लीं म्लूं ॐ श्रीं ह्रीं ठः ठः (२)

ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा (३)

रविवार के दिन पुण्य नक्षत्र पड़ने पर उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर कुलीरा नामक पक्षी को मारकर लावे और सोमवार की रात्रि में उसका मांस, जो और काले तिल से हवन करे। जब जिसे बुलाना हो तो उसका ध्यान करे, वह तुरन्त आ जायेगा। (१)

काले मृग के चर्मसिन पर बैठकर पीपल वृक्ष के नीचे श्रीफल और रुद्रवन्ती का खीर बनाकर उपर्युक्त मन्त्र द्वारा हवन करे तो परदेश गया हुआ व्यक्ति शीघ्र ही अपने घर आ जायेगा। (२)

इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। किसीपर है इसका प्रयोग करने से पहले, एकसौ आठ बार मन्त्र का जप कर लेना चाहिए। प्रयोग काल में, मन्त्र में आये हुए 'अमुकस्याकर्षणं' के स्थान में उस व्यक्तिविशेष का नाम लेना चाहिए। (३)

३२९. जल स्तम्भन मन्त्र

ॐ थं थं थं थाहि थाहिः।

यदि उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर कुलीरा पक्षी का पंजा जल में डुबो दिया जाये तो जल रुक जायेगा।

३३०. मेघ स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो नारायण मेघस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् दो ईंटों पर श्मशान के कोयले से 'मेघ' शब्द लिखे और सस्पुट करके भूमि में गाड़ दे, तो मेघ का स्तम्भन होगा। गाड़ते समय उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते रहना चाहिए।

३३१. निद्रा स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो नृसिंह निद्रास्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्र को दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। तदनन्तर बटेली की छड़ शहद में पीसकर, नेत्रों में अंजन की तरह लगा ले तो निद्रा का नाश हो जाता है।

३३२. सैन्य स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमः कालत्रिशूलधारिणी मम शत्रोः सैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वप्रथम साधक को दस हजार जप करके मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् घुँघची का फल लाकर श्मशानमें गाड़ दे और उस पर एक पत्थर रख दे। फिर उसके बाद अष्टयोगिनी (माहेश्वरी, वाराही, नारसिही, वैष्णवी, कुमारी, लक्ष्मी, क्षेत्रपाल) की मद्य, मांस, फूल, फल, धूप, दीप आदि से अलग-अलग पूजन करे और बलि प्रदान करे तो शत्रु-सैन्य का स्तम्भन होगा।

३३३. शत्रु स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवते महारौद्राय शत्रोः स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। प्रयोग करने से पूर्व एक सौ आठ बार जप करना चाहिए। जप करते समय जिस व्यक्ति का स्तम्भन करना हो उसका नाम लेना चाहिए। इस क्रिया से कार्य की सिद्धि अवश्य होती है।

३३४. शत्रु विद्वेषण मन्त्र

ॐ गीं गीं गुं हासति मञ्जोक्ति द्रां द्रां द्रां ध्वां ध्वां आदि
आदि ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ।

रविवार या मंगलवार के दिन साही के चमड़े पर बैठकर रात्रि में इस मन्त्र को जपे । मन्त्र-जप करते समय साही के रोम और उड़द को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अग्नि में हवन करे । तदनन्तर साही के काँटे मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर शत्रु के द्वार की देहली के नीचे गाड़ देने से विग्रह उत्पन्न होता है ।

३३५. परस्पर विद्वेषण मन्त्र

ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु
स्वाहा (१)

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रां क्रां क्रां क्रां स्फें स्फें धां धां ठः ठः (२)

इस मन्त्र का जप एक लाख बार करना चाहिए । जपकाल में अमुक के स्थान पर जिससे विरोध कराना हो उसका नाम लिखना चाहिए । (१)

अमावास्या की रात्रि में श्मशान भूमि में बैठकर मुँह की खोपड़ी में उड़द पकावे । तत्पश्चात् मन्त्र पढ़कर उस पकाये हुए उड़द को रविवार या मंगलवार के दिन जिस-जिस व्यक्ति के मकान पर वह उड़द फेंका जायेगा तो वहाँ परस्पर विद्वेष होगा । (२)

३३६. बालरक्षा मन्त्र

ॐ नमो भगवते गरुडाय व्योमकेशाय स्वस्थस्तु स्वाहा ।

इस मन्त्र को जल पर एक सौ एक बार पढ़कर बालक के मस्तक पर उस जल का तिलक लगावे तो बालक बाधाओं से सुरक्षित होगा ।

३३७. शरीर रक्षा मन्त्र

ॐ परब्रह्मा परमात्मने नमः शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जपने से सिद्धि होती है । किसी भी तान्त्रिक कार्य करने से पहले शरीर-रक्षा के लिए मन्त्र का जप करना चाहिए ।

३३८. दन्तरोग नाशक मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं दन्तरोगनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

जपयुक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार फूँके तो दाँतों के रोग दूर हो जाते हैं ।

३३९. लक्ष्मी की प्रसन्नता का मन्त्र

ॐ पद्मिनी पद्मनेत्री पद्मासना लक्ष्मी दाहिनी वाञ्छा भूत-प्रेत-यक्षिणी सर्वशत्रुहारिणी दुर्जनमोहिनी ऋद्धि सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्धि मिलती है । और साधक के ऊपर लक्ष्मी की कृपा होती है ।

३४०. लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं लक्ष्मि श्रीकमलधारिणि कलहंसि स्वाहा ।

इस मन्त्र का घर में बैठकर एक लाख बार जपे । जप के पश्चात् गिर के फूलों से दशांश हवन करे तो लक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को सभी ऐश्वर्य प्रदान करती है ।

अन्त में जपका दशांश, हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन कराने से पूरी सफलता मिलती है ।

३४१. महालक्ष्मी यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमो नमः ।

वटवृक्ष (बड़) के ऊपर बैठकर एक सहस्र मन्त्र का जाप करे तो महालक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न होती है और साधक को मनोवांछित फल देती है ।

३४२. धनदा यक्षिणी मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं धनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस यक्षिणी की सिद्धि के लिए साधक को पीपल के वृक्ष पर बैठकर एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिए। इससे कार्य की सिद्धि होती है।

३४३. परीक्षा में सफलता के लिए

ॐ क्लीं बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे।

मूढत्वं हर मे देहि त्राहि मां शरणागतं क्लीं ॐ ॥

उपयुक्त मन्त्र का एक हजार आठ बार जप करे। जप-काल में गणेश की प्रतिमा सामने रखे। अनुष्ठान-काल में पूर्ण संवम रखे, तो परीक्षा में पूरी सफलता मिलती है।

३४४. सुशीला पत्नी प्राप्ति के निमित्त

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।

तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥

उपरोक्त मन्त्र का सत्रा लाख जप कराके दशांश हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन करावे तो शीघ्र ही मनोनुकूल पत्नी की प्राप्ति होती है।

३४५. मनवाञ्छित पति प्राप्ति के निमित्त

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।

नन्दगोपमुते देवि! पति मे कुरु ते नमः ॥

अपने मनोनुकूल पति प्राप्त करने के लिए एक हजार मन्त्र का जप करना चाहिए। अथवा ब्राह्मण से कराना हो तो, इक्कीस दिन तक कुल इकतालीस हजार मन्त्र-जप करावे। वस्त्र लाल या पीला हो, प्रतिदिन केलकी वृक्ष की पूजा पञ्चोपचार से करानी चाहिए। भोजन में प्रतिदिन पीला पेड़ा रखे। जपकर्ता पहले दिन दशहजार तथा शेष बीस दिनों में प्रति दिन दो हजार जप करे। अन्त में जप का दशांश हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन कराने से अवश्य सफलता मिलती है। अथवा दुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोक के साथ नव दिन तक सम्पुट पाठ करे तो भी कार्य की सफलता होती है।

३४६. सर्पभय निवारक मन्त्र

आस्तीकं मुनिराजं च नमस्कृत्य पुनः पुनः।

स्वप्ने सर्पभयं नास्ति तथा सर्पनिवारणम् ॥

रात्रि में प्रतिदिन सोने से पूर्व इस मन्त्र का जप कर लेना चाहिए। इससे सर्प का भय नहीं होता है। अथवा पुष्य नक्षत्र में गिलोय के टुकड़े करके काट लें और उन टुकड़ों पर सात बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे और उसे गले में माला की तरह पहन ले तो किसी प्रकार का भय उत्पन्न नहीं होता।

३४७. सर्वादि शान्ति के निमित्त

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णायकुण्ठमेधसे।

सर्वव्याधिविनाशाय प्रभो माममृतं कृधि ॥

इस मन्त्र का इक्यावन हजार जप और उसका दशांश हवन करना चाहिए। इससे मन्त्र की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। प्रतिदिन प्रातःकाल इस मन्त्र का जप तीन बार नित्य कर लेने से मनुष्य के अरिष्ट दूर हो जाते हैं और उसके दैनिक कार्य में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं होती। इस मन्त्र का जप सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रखता है।

इति देवरिया-मण्डलान्तर्गत-‘मम्बोली राज्य’ (सम्प्रति वाराणसी)-

वास्तव्येन आचार्य-पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणा

विरचितं सम्पादितं च दुर्गातन्त्रं समाप्तम्।

जगज्जननी की आरती

जगज्जननी जय ! जय !! (मा जगज्जननी जय ! जय !!)
 भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि, जय ! जय !! जग०
 तू ही सत-चित्त-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
 सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूषा ॥ १ ॥ जग०
 आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
 अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ॥ २ ॥ जग०
 अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।
 कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी ॥ ३ ॥ जग०
 तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया ।
 मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ॥ ४ ॥ जग०
 राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा ।
 तू वाञ्छा-कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ॥ ५ ॥ जग०
 दश विद्या, नव दुर्गा, नाताशस्त्रकरा ।
 अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूपधरा ॥ ६ ॥ जग०
 तू परधाम-निवासिनि, महाविलासिनि तू ।
 तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू ॥ ७ ॥ जग०
 सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा ।
 विवसन दिकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा ॥ ८ ॥ जग०
 तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना ।
 रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ॥ ९ ॥ जग०
 मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
 कालातीता काली, कमला तू वरदे ॥ १० ॥ जग०
 शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी ।
 भेदप्रदशिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी ॥ ११ ॥ जग०
 हम अति दीन दुखी मा ! विपत-जाल घेरे ।
 हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥ १२ ॥ जग०
 निज स्वभाववश जननी ! दया-दृष्टि कीजै ।
 करुणा कर करुणामयि ! चरण-शरण दीजै ॥ १३ ॥ जग०

शताधिक ग्रन्थों के लेखक-सम्पादक एवं अनुवादक
आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री कृत

हमारे सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

शिवमहापुराण-‘शिवदत्ती’ भा. टी.	विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र. ‘शिवद
सहित प्रथम खण्ड १६०)	भा० टी०
शिवमहापुराण-द्वितीय खण्ड १६०)	सत्यनारायण व्रतकथा-भा० टी०
दुर्गार्चन-पद्धति ‘शिवदत्ती’ भा.टी. ५०)	सत्यनारायण व्रतकथा-पद्यानुवा
बृहत्स्तोत्र-रत्नाकर-स्तो सं. ४४३ ३४)	गणेशचतुर्थी व्रतकथा-भा० टी०
शिव-रहस्य-(पुरस्कृत)	विवाहपद्धति ‘शिवदत्ती’ भा.टी०
‘शिवदत्ती’ भा. टी. ३०)	उपनयन-पद्धति ” ”
राम-रहस्य ” ३०)	वाशिष्ठीहवन-पद्धति ” ”
हनुमद्-रहस्य ” ३०)	दुर्गापूजा श्यामापूजा-पद्धति,,
गायत्री-रहस्य ” ३०)	दुर्गासप्तशती ‘शिवदत्ती’ भा.टी०
बंगलामुखी रहस्य ” २०)	दुर्गासप्तशती-मूल, मोटे अक्षरों में
पाराशर स्मृति ” १५)	दुर्गासप्तशती-मूल, गुटका. ३२ पेज
वाञ्छाकल्पलता ” १५)	दुर्गासप्तशती-मूल, ६४ पेजी
वाल्मीकि रामायण	दुर्गा कवच-भा० टी०
सुन्दरकाण्ड-मूल २०)	

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर

चौक, वाराणसी-१

फोन : ६६६८३, निवास : ५३३४६

